लखनऊ, गुरुवार, 6 अप्रैल 2023 | Email: starexpressnews@gmail.com | वर्ष : 16 अंक : 43 | पृष्ठ : 8 मूल्य : 1 रूपया

हिन्दी दैनिक/डिजिटल

स्टार एक्सप्रेस

सोच..... बदलते भारत की

www.starexpress.news

तीन माह में शिक्षा पर 700 करोड़ खर्च करेगी सरकार

बेसिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा विभाग में होगा खर्च, सुविधाओं का होगा इजाफा

❑ मुख्यमंत्री ने 11 विभागों में चयनित 795 अभ्यर्थियों को बांटे नियुक्ति पत्र, कहा, 2017 से पहले घोटाले होते थे

(संवाददाता)

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मिशन रोजगार के तहत अलग-अलग विभागों के चयनित अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र सौंपे। इस मौके पर मुख्यमंत्री योगी सभी चयनित युवा कार्मिकों का अभिनंदन किया। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि पहले भर्तियों में भ्रष्टाचार इस कदर था कि जो योग्य नहीं था, वो आयोग का अध्यक्ष होता था। बता दें कि आज लोक भवन में आयोजित नियुक्ति पत्र वितरण कार्यक्रम में सीएम योगी ने 795 युवाओं को नियुक्ति पत्र सौंपे। इसके साथ ही उन्होंने उत्तर प्रदेश की बदली हुई छवि पर बातें की। उन्होंने कहा कि आप सभी चयनित युवा कार्मिकों का अभिनंदन करता हूं। उत्तर प्रदेश में कार्य करना एक गौरव की बात है, ये माना जाता है, जिसने यहां कार्य किया। वह देश में कही भी कार्य कर सकता है, ये कार्मिक की धारणा है। उत्तर प्रदेश में शासन की नीतियों के आधार पर कार्य करना

सीएमी जिम्मेदारी होती है। शासन की छवि कार्मिकों के आचरण से ही मजबूत होती है। सीएम योगी ने आगे कहा कि हमारी टीम ने केंद्र और राज्य के योजनाओं को धरातल पर शत प्रतिशत उतारने के लिए पूरी ईमानदारी से कार्य किया है। इससे उत्तर प्रदेश के विकास की गति तेज हुई है। इसी के चलते आज उत्तर प्रदेश के बारे में लोगों की धारणा बदली है और यूपी आज उदाहरण है। आपकी पीढ़ी सौभग्यशाली है कि आपने इस सरकार के समय आवेदन किया। कोई सिफारिश नहीं करनी पड़ी, आज आपकों नियुक्तिपत्र दिया, नियुक्ति विभाग ने आपको कॉल करके बुलाया। मुख्यमंत्री ने कहा कि अगर शासन की नियत में खोट हो, भर्ष्टाचार का बोलबाला हो तो कुछ नहीं किया जा सकता।

हमने जब 2017 मे शासन संभाला तब सरकारी पद खाली पड़े थे, एक लाख 64 हजार पुलिसकर्मी की भर्ती हुई। पिछली सरकार में पीएसी की 54 कंपनियां खत्म कर दी गई थी। पहले भर्तियों में भ्रष्टाचार इस कदर था कि जो योग्य नहीं था वो आयोग का अध्यक्ष होता था। आज उत्तर प्रदेश ऐसा राज्य है जहां परीक्षा के पहले ही मुन्नाभाई जैसे सॉल्वर उठा लिए जाते है। सीएम योगी ने कहा कि आज उत्तर प्रदेश की धारणा बदली है, यहां की कार्यशैली ने लोगों के प्रश्नों का उत्तर दे दिया है। प्रधानमंत्री जी के निर्देशन पर ये मिशन रोजगार की प्रक्रिया चल रही है। हमारे मुख्य सचिव जी पिछले 39 वर्षो से लगातार प्रशासनिक कार्य कर रहे है, ये उदाहरण है। जिससे सरकारी कार्यकुशलता पता चलती है। इसी तरह कृषि उत्पादन आयुक्त जी भी 35 वर्ष से लगातार कार्य कर रहे है। ये हमारे प्रशासन के अधिकारी युवाओं के रोल मॉडल है, आप इनसे सीखिए। मुख्यमंत्री शिक्षुता प्रोत्साहन योजना पर 10 करोड़ रुपए, वार्ड स्तर पर डिजिटल लाइब्रेरी के लिए 5 करोड़ रुपए और रोजगारपरक शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए स्किल हब पर एक करोड़ रुपए व्यय किए जाएंगे। कुल मिलाकर उच्च शिक्षा विभाग आगामी तीन माह में 20.1 करोड़ रुपए की धनराशि व्यय करेगा।

संक्षिप्त समाचार

अमित शाह और जेपी नड्डा ने की पीएम मोदी से मुलाकात

(एजेंसी) नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने बुधवार को संसद भवन परिसर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। सूत्रों के मुताबिक, इस उच्चस्तरीय बैठक में तेलंगाना भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बंदी संजय कुमार को तेलंगाना पुलिस द्वारा गिरफ्तार करने पर चर्चा हुई। सूत्रों के मुताबिक, इस उच्चस्तरीय मुलाकात में 6 अप्रैल, गुरुवार को भाजपा के स्थापना दिवस से जुडे कार्यक्रमों की तैयारियों को लेकर भी चर्चा की गई। 8 अप्रैल को तेलंगाना जाने का कार्यक्रम प्रस्तावित है। अपनी तेलंगाना यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन को हरी झंडी दिखाने और 1,366 करोड रुपये की लागत से बनने वाले एम्स अस्पताल में नए ब्लॉक के लिए भूमि पूजन करने के साथ ही तेलंगाना में 11,355 करोड रुपये की कई विकास परियोजनाओं की आधारशिला रखने वाले हैं लेकिन उनकी 8 अप्रैल की प्रस्तावित यात्रा से पहले ही तेलंगाना पुलिस द्वारा भाजपा के तेलंगाना प्रदेश अध्यक्ष बंदी संजय कुमार को गिरफ्तार करने की वजह से तेलंगाना से लेकर दिल्ली तक का राजनीतिक माहौल गरमा गया है।

संजय राउत ने फडणवीस पर बोला हमला, ईडी-सीबीआई को अलग रखें और हमारा सामना करें

(एजेंसी) मुंबई। शिवसेना (यूबीटी) के सांसद संजय राउत ने बुधवार को उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फ्डणवीस को ईडी-सीबीआई को अलग रखने और विपक्ष का सामना करने की चुनौती दी। साथ ही, सांसद प्रियंका चतुर्वेदी ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से ठाणे में अपनी पार्टी के सहयोगी पर हुए हमले पर उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए मुलाकात की। फ्डणवीस के इस दावे का जिक्र करते हुए कि वह श्कायरश् नहीं है, जैसा कि शिवसेना (यूबीटी) के अध्यक्ष और पूर्व सीएम उद्धव ठाकरे ने उन्हें लेबल दिया था। ठाकरे पर पलटवार करते हुए, फ्डणवीस ने मंगलवार को कहा था कि मैं फ्ड़तूस नहीं, कारतूस हूं और मैं झुकूंगा नहीं बल्कि छेदूंगा जबकि प्रदेश भाजपा अध्यक्ष चंद्रशेखर बावनकुले ने पूर्व मुख्यमंत्री को चुप रहने या डिप्टी सीएम (फ्डणवीस) की आलोचना करने के परिणाम भुगतने की चेतावनी दी।

गुजरात में बॉर्डर क्रॉस भारत में घुसना चाहता था पाकिस्तानी, बीएसएफ ने दबोचा

(एजेंसी) नई दिल्ली। बनासकांठा सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने गुजरात के बनासकांठा जिले से लगी सीमा के जरिये भारत में प्रवेश करने कोशिश कर रहे एक पाकिस्तानी नागरिक को गिरफ्तार किया है। बीएसएफने बुधवार को यह जानकारी दी। बीएसएफके कर्मियों ने मंगलवार को एक पाकिस्तानी नागरिक को अंतरराष्ट्रीय सीमा पार करते देखा। बीएसएफ ने कहा कि जब वह बनासकांठा जिले में नादेश्वरी सीमा चौकी के नजदीक बाड़ पर लगे द्वार से नीचे उतरा, तब उन्होंने उसे पकड़ लिया। बीएसएफ गुजरात फ्रंटियर ने एक विज्ञप्ति में कहा कि इस व्यक्ति की पहचान दया राम के रूप में की गई है, जो पाकिस्तान के नगरपारकर का रहने वाला है। उसे बाड़ के इस ओर भारतीय भू-क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए बाड़ पर लगे एक द्वार को पार करते पाया गया। विज्ञप्ति में कहा गया है, ''बनासकांठा जिले में सीमा चौकी स्थित द्वार से वह जैसे ही नीचे उतरा उसे तुरंत पकड़ लिया गया।

बिहार में हिंसा सुनियोजित साजिश, जानबूझकर कराई गई : नीतीश

(एजेंसी) पटना। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने राज्य के सासाराम और नालंदा में हुई हिंसा को सुनियोजित साजिश बताते हुए कहा कि यह जानबूझकर कराई गई है। उन्होंने कहा कि एक-एक चीज की जांच कराई जा रही है। पटना में बुधवार को पत्रकारों से चर्चा करते हुए नीतीश कुमार ने कहा कि साजिश के तहत बिहार में हिंसा कराई गई है। जल्द ही हिंसा का सच सामने आएगा। उन्होंने कहा कि कुछ खास नहीं है, सब कुछ नार्मल है। बिहार शरीफमें जिसने गड बडी की है, उन सभी का पता चलेगा। उन्होंने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की ओर इशारा करते हुए कहा कि एक जगह हिंसा हुई जहां उनको जाना था और एक बिहार शरीफ में कराई गई। उन्होंने कहा कि यहां कभी कुछ नहीं होता है, अचानक कैसे हो गया मुख्यमंत्री ने कहा कि सभी लोग लगे हुए हैं। हर एक घर तक जाकर जांच की जा रही है। कुछ दिन बाद सब पता चल जाएगा। यह सब कुछ जानबूझकर किया गया है। बिहारशरीफ में जो धंधा किया है, वो सब कुछ दिन बाद पता चल जाएगा।

मदनी समेत 16 मुस्लिम प्रतिनिधिमंडल की अमित शाह के साथ बैठक

रामनवमी पर हुई हिंसा समेत 14 बिंदुओं पर हुई चर्चा

(एजेंसी)

नई दिल्ली। जमीयत उलेमा-ए-हिंद के प्रमुख मौलाना महमूद मदनी समेत 16 मुस्लिम बुद्धिजीवियों और उलेमाओं के एक प्रतिनिधिमंडल ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात कर सांप्रदायिक हिंसा, नफरत एवं 'इस्लामोफोबिया (इस्लाम के प्रति दुराग्रह) और भीड द्वारा पीट-पीट कर मार डालने (मॉब लिंचिंग) की घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए ठोस कदम उठाने का आग्रह किया। इन 14 बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की गई जमीयत की कार्यकारिणी के सदस्य मौलाना नियाज फारूकी ने बताया कि शाह से उनके आवास पर मंगलवार रात मुलाकात हुई और इस दौरान सरकार एवं मुस्लिम समुदाय के बीच 'भ्रम एवं गतिरोध को दूर करने, रामनवमी के पर्व के दौरान देश के कुछ हिस्सों में हुई हिंसा, संशोधित नागरिकता कानून (सीएए), समान नागरिक संहिता, कर्नाटक में मुस्लिम आरक्षण खत्म किया जाना, वक्फ संपत्तियों का संरक्षण, कश्मीर की वर्तमान स्थिति, 'मीडिया के एक हिस्से में इस्लाम विरोधी ख समेत 14 बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की गई। सांप्रदायिक हिंसा को रोका जाए फारूकी ने कहा, ''हमने मॉब लिंचिंग और हरियाणा में दो लोगों की हत्या का विषय उठाया जिस पर गृह मंत्री ने आश्वासन दिया कि वे इस तरह की घटनाओं को उनके संज्ञान में लाएं और ऐसे मामलों में कार्रवाई होगी। उनके मुताबिक, गृह मंत्री के साथ मुलाकात के दौरान सीएए से जुडघ विषय उठा और इस पर सहमति बनी कि इस पर सरकार के साथ आगे बैठक होगी।

मुस्लिम प्रतिनिधमंडल ने अपनी मांगों को लेकर गृह मंत्री को एक पत्र भी सौंपा। उन्होंने पत्र में कहा, ''सांप्रदायिक हिंसा, नफरत और इस्लामोफोबिया को रोकने के लिए कदम उठाये जाएं। आरक्षण को खत्म करने का विषय उठाया मीडिया के एक हिस्से में धार्मिक रूप से उकसाने वाली सामग्री के प्रसारण और प्रकाशन पर रोक लगाई जाए। फारूकी ने बताया, ''हमने गृह मंत्री के समक्ष कर्नाटक में मुस्लिम समुदाय को मिले चार फीसदी आरक्षण को खत्म करने का विषय उठाया।

इस पर गृह मंत्री ने कहा कि पहले की सरकार में यह गलती हुई थी कि सभी मुसलमानों को पिछडे वर्ग की श्रेणी में डाल दिया गया था और पिछडे वर्ग के मुसलमानों को आरक्षण का लाभ मिल रहा है।

मुलायम सिंह यादव को मिला मरणोपरांत पद्म विभूषण सम्मान

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से बेटे अखिलेश यादव ने लिया

(संवाददाता)

लखनऊ । यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री और समाजवादी पार्टी के संस्थापक दिवंगत मुलायम सिंह यादव को बुधवार को मरणोपरांत पद्म विभूषण पुरस्कार दिया गया। नेताजी के बेटे और सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से यह सम्मान लिया।

बता दें कि गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या को पद्म पुस्कार के नामों की घोषणा हुई थी। उनमें से एक नाम दिवंगत मुलायम सिंह यादव का भी था। वहीं पद्म पुरस्कारों में नेता जी के नाम की घोषणा का जहां समाजवादी पार्टी ने स्वागत किया था। वहीं, उन्हें भारत रत्न दिए जाने की मांग भी उठाई थी। सपा नेताओं ने कहा था कि मुलायम का कद इससे बड़ा हैं। उन्हें भारत रत्न मिलना चाहिए। मुलायम की पुत्रवधू सांसद डिंपल यादव ने भी कहा था कि नेताजी का सम्मान पहले ही हो जाना चाहिए था।

आने वाले समय में हमारी सरकार से मांग रहेगी कि उन्हें भारत रत्न दिया जाए। उधर, सपा प्रवक्ता आईपी सिंह ने ट्वीट कर कहा था कि धरतीपुत्र मुलायम सिंह यादव पर सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' को छोड़कर दूसरा कोई सम्मान नहीं जचंता। 22 नवंबर 1939 को सैफई में जन्मे मुलायम सिंह यादव 1967 में पहली बार विधायक बने।

इसके बाद 5 दिसंबर 1989 को पहली बार प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। बाद में 2 बार और मुख्यमंत्री बने। मुलायम ने अपना राजनीतिक अभियान जसवंत नगर विधानसभा सीट से शुरू किया। सोशलिस्ट पार्टी, प्रजा सोशलिस्ट पार्टी से आगे बढ़े।1992 में समाजवादी पार्टी का गठन किया। 10 अक्टूबर 2022 को उनका निधन हो गया।

जातिवादी द्वेष और अनर्गल मुद्दों की राजनीति करने वाली सपा से सावधान रहें : मायावती

(संवाददाता)

लखनऊ । समाजवादी पार्टी (सपा) प्रमुख अखिलेश यादव के बहुजन समाज के उनके झंडे तले सीएमे पैमाने पर एकजुट होने के दावे के बाद बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की मुखिया मायावती ने बुधवार को कहा कि दलितों, अन्य पिछड़े वर्गों और मुस्लिम समुदाय को, जनहित के बजाय जातिवादी द्वेष और अनर्गल मुद्दों की राजनीति करने वाली सपा से सावधान रहना चाहिए। मुख्यमंत्री बनने के बावजूद मुलायम सिंह यादव की नीयत साफ नहीं थी और उन्होंने बसपा को बदनाम करना और दलितों का उत्पीड़न जारी रखा था। मायावती ने आज किये गये सिलसिलेवार ट्वीट में सपा पर हमले किये। उन्होंने कहा, सपा प्रमुख की मौजूदगी में 'मिले मुलायम-कांशीराम, हवा में उड़ गए जय श्रीराम' नारे को लेकर रामचरित मानस विवाद वाले सपा नेता (स्वामी प्रसाद मौर्य) पर मुकदमा दर्ज होने की खबर सुर्खियों में है। वास्तव में उत्तर प्रदेश के विकास और जनहित के बजाय जातिवादी द्वेष एवं अनर्गल मुद्दों की राजनीति करना सपा का स्वभाव रहा है।

गौरतलब है कि श्रीरामचरित मानस पर टिप्पणी करके विवादों से घिरे सपा नेता स्वामी प्रसाद मौर्य ने गत सोमवार को रायबरेली में पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव द्वारा बसपा संस्थ्थापक कांशीराम की प्रतिमा का अनावरण किये जाने के मौके पर वर्ष 1993 के चर्चित नारे जब मिले मुलायम कांशीराम, हवा में उड़ गये जय श्रीराम को दोहराया था। इस मामले में उनके खिलाफ हिन्दू युवा वाहिनी के एक स्थानीय नेता की तहरीर पर धार्मिक भावनाएं भड़काने के आरोप में मुकदमा दर्ज किया गया है। कार्यक्रम के दौरान सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने दावा किया था कि दलित समुदाय बहुत सीएमे पैमाने पर सपा के साथ जुड़ा रहा है। मायावती ने एक अन्य ट्वीट में कहा, यह हकीकत लोगों के सामने बराबर आती रही है कि सन 1993 में कांशीराम ने सपा-बसपा गठबंधन अच्छी भावना के तहत किया था, किन्तु मुलायम सिंह यादव के गठबंधन का मुख्यमंत्री बनने के बावजूद उनकी नीयत पाक-साफन होकर बसपा को बदनाम करने व दलित उत्पीड़न को जारी रखने की थी। उन्होंने एक अन्य ट्वीट में कहा, इसी क्रम में उस दौरान अयोध्या, श्रीराम मन्दिर व ऊंची जाति के समाज आदि से सम्बंधित जिन नारों को प्रचारित किया गया था उसके पीछे बसपा को बदनाम करने की सपा की शरारत व सोची-समझी साजिश थी।

अतीक के बेटे की धरपकड़ के लिए ऑपरेशन क्लीन स्वीप

एसटीएफ ने अतीक के परिवार के सहयोगियों पर नजर, दबिश तेज

(संवाददाता)

लखनऊ । यूपी एसटीएफ प्रयागराज में उमेश पाल की हत्या मामले में अतीक के बेटे असद और पत्नी शाइस्ता की धरपकड़ के लिए ऑपरेशन क्लीन स्वीप चला रही है। इसके लिए इनके सहयोगियों के साथ रिश्तेदारों पर नजर रख रही है। इनके खिलाफ क्रिमिनल केस दर्ज कर कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है। इसी क्रम में उमेश पाल पर बम फेंकने वाले गुड्डू को पनाह देने वाले अतीक अहमद के बहनोई डॉ. अखलाक तक पहुंच गई। अब उसके घर से मिले वीडियो के आधार पर ही प्रयागराज पुलिस अब अतीक के परिवार के तीन और लोगों का नाम एफ्आईआर में शामिल करने जा रही है। इसमें अतीक की बहन आयशा और उसके रिश्तेदार हैं। सूत्रों के मुताबिक उमेश

पाल की हत्या में शामिल गुड्डू मुस्लिम को पनाह देने वाले अतीक के बहनोई डॉ. अखलाक और नौकर शाहरुख से अदस के विषय में पुलिस को कई अहम जानकारी मिली हैं। इसमें सामने आया है कि अतीक की बहन आयशा का भी इसमें कनेक्शन मिला है। जिसने इन लोगों भगाने में सहयोग किया था। उमेश पाल हत्याकांड की कमान अतीक की पत्नी शाइस्ता और बेटे असद के हाथ में थी। वहीं शूटर को सेफस्थान भेजने के लिए गुड्डू मुस्लिम की जिम्मेदारी थी। वहीं गुड्डू को छिपाने की जिम्मेदारी बहन आयशा ने ली थी। जिसके चलते ही घटना के बाद सब को अपने अपने जगह पर छिपाने के बाद गुड्डू मेरठ पहुंचा था। पुलिस सूत्रों के मुताबिक अतीक अहमद की पत्नी शाइस्ता के पिता मोहम्मद हारून यूपी पुलिस में सिपाही थे। इसलिए वह पुलिस के हर पैतरे से वाकिफ है, कि पुलिस किस तरह अपराधी तक पहुंचने के लिए क्या उपाय अपनाती है। इसलिए उमेश पाल की हत्या के बाद उसने पूरे ऑपरेशन में वो कोई गलती नहीं की जिससे उसका बेटा और शूटर पुलिस के हाथ लगते। इसीलिए उसने सभी को अलग-अलग दिशा में भेजा और यूपी की सीमा पार करा दिया। अभी तक की जानकारी के मुताबिक घटना में शामिल लोग ग्रेटर नोएडा, मेरठ, दिल्ली होते हुए मुंबई तक पहुंचे। वहीं कुछ लोग बिहार होते हुए पश्चिम बंगाल की तरफचले गए।

एक लाख का इनामियां अब्दुल कवि ने किया सरेंडर

(संवाददाता) प्रयागराज। बसपा विधायक राजू पाल हत्याकांड मामले के आरोपी अब्दुल कवि ने बुधवार को लखनऊ में सरेंडर कर दिया है। अब्दुल कवि ने सीबीआई के सामने आत्मसमर्पण किया है। बता दें कि अब्दुल कवि साल 2005 में हुई राजू पाल की हत्या के बाद से ही फरार चल रहा था। राजू पाल की हत्या का मामला लखनऊ स्थित सीबीआई कोर्ट में चल रहा है। इस हत्याकांड में शामिल शूटरों में अब्दुल का भी नाम है। अब्दुल की गिरफ्तारी के प्रयास में बीते माह उसके घर में छापेमारी भी की गई थी। जिसमें पुलिस ने भारी मात्रा में अवैध हथियार बरामद किए थे।

पहले 50 हजार फिर 1 लाख का इनाम...

24 फरवरी को उमेश पाल हत्याकांड के बाद कौशांबी जनपद की पुलिस और सीबीआई ने शूटर अब्दुल कवि की तलाश में ताबड़तोड़ छापेमारी की थी लेकिन अब्दुल पुलिस के हाथ नहीं लगा। इसके बाद प्रशासन ने इस पर 50 हजार रुपये का इनाम गिरफ्तारी पर घोषित किया था। मार्च महीने में इनाम घोषित होने बाद भी जब अब्दुल कवि पुलिस की गिरफ्त से दूर रहा। पुलिस ने इनाम राशि बढ़ाकर 1 लाख रुपये कर दी थी। कौशांबी के सराय अकिल थाने की पुलिस ने कवि के भाई अब्दुल कादिर को भी गिरफ्तार कर चुकी है।

रामबन में आतंकी ठिकाने का भंडाफोड़, हथियार और गोला-बारूद बरामद

(एजेंसी)

जम्मू । जम्मू-कश्मीर के रामबन जिले में सुरक्षा बलों ने एक आतंकवादी ठिकाने का भंडाफोड़ कर भारी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद बरामद किया है। पुलिस प्रवक्ता ने बुधवार को यहां बताया कि रामबन जिले की खारी तहसील के दूर दराज के पहाड़ी और जंगली इलाके में हथियारों, गोला-बारूद और संबंधित सामग्री की मौजूदगी के संबंध में विशेष सूचना पर कार्रवाई करते हुए पुलिस और सेना के जवानों ने सोमवार शाम संयुक्त तलाशी अभियान चलाया। वन क्षेत्र और संदिग्ध ठिकानों पर तलाशी शुरू की गई। इस दौरान सुरक्षा बलों ने एक आतंकवादी ठिकाने का भंडाफोड़ किया और मौके से हथियार और गोला-बारूद सहित अन्य सामान बरामद किया गया। पुलिस के मुताबिक बरामद सामानों में 7.62 एमएम के कारतूस (256), 7.62 एमएम के खाली कारतूस (36), एके-47 मैगजीन (5), नौ एमएम के कारतूस (34), नौ एमएम के खाली कारतूस (1), नौ एमएम के खाली मैगजीन (2), पिका गोला बारूद (2), पिका खाली कारतूस (16), पिका बेल्ट (1), 52 मिमी मोटरर (1), डेटोनेटर (4), कॉर्डेक्स (2 फीट), चाकू (1), लालटेन (1), केरोसिन लैम्प (1), टेप रिकॉर्डर (1), हेडफोन के साथ वॉकमैन (1), ऑडियो कैसेट (5), परफ्यूम (1), घड़ी (1), पुराने बैग (2), एलएमजी गोला बारूद बेल्ट बॉक्स (1) और दो पहचान पत्र शामिल हैं।

CMYK

संपादकीय

कानूनी ट्रैप में ट्रंप

अक्सर विवादित कार्यशैली के चलते विवादों में घिरे रहने वाले पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति की मुश्किलें अब और बढ़ने वाली हैं क्योंकि अब उन पर आपराधिक केस चलेगा। वे अमेरिकी इतिहास में पहले राष्ट्रपति होंगे, जिन पर क्रिमिनल केस चलेगा। न्यूयॉर्क की मैनहैटन ग्रैंड ज्यूरी ने गत गुरुवार को ट्रंप पर मुकदमा चलाने का फैसला सुनाया। इस बाबत ट्रंप को जानकारी दे दी गई है और चार अप्रैल को कोर्ट में सरेंडर करने को कहा गया है, जिसके बाद आरोपों का खुलासा किया जायेगा। वहीं ट्रंप का आरोप है कि ये आरोप राजनीति से प्रेरित हैं। अभी तक ट्रंप 2024 के राष्ट्रपति चुनावों के लिये रिपब्लिकन प्रत्याशी के रूप में सबसे आगे चल रहे हैं। दरअसल, यह मामला साल 2016 के राष्ट्रपति चुनाव के दौरान का है जब एक वयस्क फिल्मों की अभिनेत्री स्टॉर्मी डेनियल्स को चुप रहने के लिये एक बड़ी कीमत ट्रंप के वकील के मार्फत चुकायी गई थी। इस वयस्क फिल्मों की अभिनेत्री ने एक किताब में खुलासा किया था कि वर्ष 2006 में उसके ट्रंप से अंतरंग संबंध स्थापित हुए थे। कालांतर वर्ष 2016 के राष्ट्रपति चुनाव से ठीक पहले स्टॉर्मी को चुप रहने के लिये ट्रंप के वकील के मार्फत करीब एक करोड़ सात लाख रुपये दिये गये थे। इस बात का खुलासा वर्ष 2018 में वाल स्ट्रीट जर्नल ने किया था। अमेरिकी मीडिया रिपोर्टों के अनुसार ट्रंप के खिलाफकोर्ट में वे तमाम प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं, जो अमेरिकी कानून की उल्लंघना की व्याख्या करते हैं। वैसे अमेरिकी कानूनी व्यवस्था के अनुसार अपराध साबित न होने तक किसी को अपराधी तय नहीं किया जा सकता है। वैसे इस मामले को लेकर तमाम यक्ष प्रश्न सामने हैं कि उनके साथ एक अपराधी जैसा व्यवहार किया जायेगा? क्या वे आगामी राष्ट्रपति चुनाव लड़ने के योग्य रह पाएंगे? हालांकि, उनके समर्थकों के उत्पात की आशंका के चलते मैनहटन इलाके में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की गई है। हालांकि, ट्रंप पर भले ही ज्यूरी ने आपराधिक आरोप लगाते हुए मुकदमा चलाने का फैसला किया हो, मगर इस मामले में फैसला आने में काफी समय लग सकता है। यह भी संभव है कि पेशी के बाद उन पर लगे आरोपों को बताकर उन्हें अदालत जमानत पर छोड़ सकती है। अमेरिका में रूढ़िवादी अमेरिकनों के टकराव से कानून-व्यवस्था के संकट के चलते ऐसा भी किया जा सकता है। वैसे अमेरिकी कानून के हिसाब से वे न्यायिक प्रक्रिया और दोषी साबित होने के बावजूद राष्ट्रपति पद के चुनाव अभियान में भाग ले सकते हैं। लेकिन कुछ रिपब्लिकन मानते हैं कि पार्टी की छवि के लिये उन्हें अब चुनाव नहीं लड़ना चाहिए। यद्यपि कहना जल्दबाजी होगी कि रिपब्लिकन पार्टी उन्हें आपराधिक मामले में लिप्त होने के बाद अपना प्रत्याशी बनाएगी या नहीं। यही वजह है कि ट्रंप बार-बार कह रहे हैं कि डेमोक्रेट्स इस मामले के जरिये उन्हें साजिशन फंसाने का काम कर रहे हैं। वैसे ट्रंप अपने चुनाव के लिये चंदा जुटाने, रैली करने आदि अभियानों में जुटे हैं। वहीं ट्रंप के समर्थक व नेता कह रहे हैं कि ये आरोप राजनीति से प्रेरित हैं और देश को बांटने का काम करेंगे। वहीं दूसरी ओर डेमोक्रेट कह रहे हैं कि कानून अपना काम करेगा, कानून के समक्ष सब समान हैं। बहरहाल, अब ट्रंप पर गिरफ्तारी का खतरा तो मंडरा ही रहा है क्योंकि मैनहटन की ग्रैंड ज्यूरी पोर्न स्टार स्टॉर्मी डेनियल्स के मामले में आरोप तय करने पर सहमत हो गई है। वहीं ट्रंप के वकील ने एक समाचार एजेंसी को भेजी मेल में खुलासा किया है कि ट्रंप मंगलवार को अदालत पहुंच सकते हैं। तभी ट्रंप समर्थकों के विरोध की आशंका को देखते हुए मैनहटन में व्यापक सुरक्षा प्रबंध की बात कही गई है। दूसरी ओर कुछ कानून पंडित यह भी मानते हैं कि इस मामले पर ट्रंप पर जुर्माना भी लगाया जा सकता है। लेकिन ट्रंप आरोपों को नहीं स्वीकार रहे हैं और उन्होंने अपने सोशल मीडिया नेटवर्क पर मैनहटन के डिस्ट्रिक्ट अटॉर्नी के विरुद्ध टिप्पणी की है। उनका आरोप है कि राजनीतिक बदले की भावना के तहत उनके खिलाफकार्रवाई की गई है।

रामनवमी पर भी दंगे

भगवान राम के जन्म या प्राकटयोत्सव महोत्सव पर जिस प्रकार की हिंसा देश के कुछ स्थानों पर देखने में आयी है वास्तव में वह राम की मर्यादा का मर्दन करने के समान ही देखी जायेगी क्योंकि राम भारत का ऐसा शब्द है जिसमें समस्त ब्रह्मांड का सत्य समाया हुआ है और यह अर्थ है प्रसन्नता, आनन्द, उत्साह व हर्ष । अत: राम के साकार स्वरूप के उपासकों के लिए भी यह आवश्यक है कि वे अपने इष्ट देव के जन्म दिवस को मनाते समय उनकी दिव्यता में किसी भी प्रकार के हिंसक अस्त्रों के प्रदर्शन से दूर रहें बल्कि पूरी तरह परहेज रखें। हिन्दू धर्मशास्त्रों के अनुसार राम के रूप में भगवान विष्णु का सातवां मनुज अवतार था जो धरती से अन्याय व अधर्म व पाप को समाप्त करने के लिए हुआ था। अत: हिंसक हथियारों का प्रदर्शन उनके जन्म दिवस के अवसर पर करने वाले लोग राम नाम की मर्यादा पर ही बट्टा लगाने का काम करते हैं और यदि सीधे शब्दों में लिखा जाये तो राम नाम को बदनाम करते हैं। वास्तव में भारत के लिए राम शब्द मजहब से ऊपर सांस्कृतिक शब्द है जो इस देश की लोकधारा में समाया हुआ है और यह लोकधारी आपसी भाईचारे, प्रेम व सौहार्द की है। यदि ऐसा न होता तो किस प्रकार राम नाम का जाप साकार आराधना करने वालों के अलावा निराकार ब्रह्म के उपासकों की जिव्हा पर भी रहता। राम को तभी मर्यादाहीन बना दिया जाता है जब उनके नाम पर द्वेष या घृणा अथवा नफरत को फैलाने का उपक्रम किसी भी वर्ग या समुदाय द्वारा किया जाता है। भारत तो विभिन्न संस्कृतियों व मान्यताओं के समागम का देश है और ऐसा देश है जिसमें इस्लाम के 'हजरत इमाम हुसैन' की शहादत को नमन करने वाले 'हुसैनी ब्राह्मण' भी रहते हैं। आजकल रमजान का महीना चल रहा है और इस दौरान इसी ब्राह्मण समुदाय के लोग भी शिया मुसलमानों की तरह अपने अलग से 'ताजिये' निकालेंगे। रामनवमी के जुलूस की तुलना कुछ लोग मुहर्रम के जुलूसों से जिस तरह कर रहे हैं उन्हें न तो हिन्दू संस्कृति के बारे में कुछ ज्ञान है और न वे ईश्वर के मनुज अवतारों की लीला के बारे में कुछ जानते हैं। ईश्वर का अवतार युग धर्म (समयकालीन कर्त्तव्य) की स्थापना के लिए ही होता है। भगवान राम ने एक राजा के घर में जन्म लिया मगर रावण को परास्त करने के लिए उन्होंने राजसी सेना का सहारा नहीं लिया बल्कि जनशक्ति या जन-सेना का साथ लिया। जिन्होंने महाकवि निराला का 'राम की शक्ति पूजा' काव्य पढ़ा है वे भली-भांति जानते होंगे कि राम ने रावण को परास्त करने के लिए जन चेतना मूलक उपायों को ही अपनाया। राम की यही सबसे बड़ी शक्ति थी जिसके भरोसे उन्होंने रथ पर सवार महासंग्रामी रावण की सेना का मुकाबला युद्ध भूमि में विरथी अर्थात पैदल रहते हुए ही किया। गोस्वामी तुलसीदास ने भी लिखा कि 'रावण रथी विरथी रघुबीरा'। सन्त कबीर दास जो निराकार ब्रह्म के उपासक थे और पंडितों व महन्तों के कर्मकांड को पाखंड मानते थे उन्हें भी उनके गुरु स्वामी रामानन्द ने 'राम' नाम का ही उपदेश दिया और उन्होंने तब जाकर लिखा कि "पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ भया न पंडित कोय ढाई आखर प्रेम का पढ़ै सो पंडित होय।"अत: हमें सर्वप्रथम राम की मर्यादा का ही ध्यान रखना चाहिए और रामनवमी जैसे पवित्र पर्व को मनाते समय हिंसक अस्त्रों का प्रदर्शन कदापि नहीं करना चाहिए। क्योंकि राम की रावण पर विजय जनोत्साह का कारक थी और जिस शब्द का अर्थ ही प्रेम है वह किसी भी अन्य समुदाय के प्रति किस प्रकार द्वेष पैदा करने का कारण बन सकता है। राम शब्द तो भारत में गिले- शिकवे दूर करने का माध्यम रहा है परन्तु इस शब्द पर किसी एक ही वर्ग या समुदाय का एकाधिकार भी कभी नहीं हो सकता है ।

अमेरिका तथा यूरोपीय देश रूस पाकिस्तान से बेहद खफा

संजीव ठाकुर

अमेरिका तथा यूरोपीय संघ के देश रूस के तानाशाही रवैया और पाकिस्तानी उधारी वापस न किए जाने एवं धोखेबाजी से सख्त नाराज दिखाई दे रहे हैं। अमेरिका के 22 सांसदों ने पाकिस्तान में पल रहे आतंक वादी संगठनों के खिलाफअमेरिकी सीनेट में एक बिल पेश किया है। इस बिल में तालिबान और पाकिस्तान के खिलाफ के आतंकी संगठनों को पनाह देने के खिलाफ प्रस्तुत किए गए हैं ज्यादा जोर पाकिस्तान पर आर्थिक प्रतिबंध लगाने पर दिया गया है। यह प्रतिबंधात्मक बिल संसद में अभी पेश किया गया है। यह बिल सीनेट में जाएगा साथ ही अमेरिकी रक्षा मंत्री विदेश मंत्री रक्षा सचिव तथा विदेश सचिव के परामर्श के बाद राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के लिए पेश किया जाएगा। रक्षा विशेषज्ञ प्रोफेसर पंत का कहना है की इस बिल को पास होने में ज्यादा दिक्कत एवं समय नहीं लगेगा। और यदि यह बिल पास किया जाता है तो पाकिस्तान पर मुसीबत के पहाड़ टूट पड़ेंगे। पाकिस्तान वैसे बड़ी कंगाली और तंगहाली से गुजर रहा है और बिल पास होने के बाद अमेरिकी तथा यूरोपीय देशों की मदद पूरी तरह बंद हो जाएगी। अमेरिकी सांसद एवं अमेरिकी राष्ट्रपति पाकिस्तान की धोखेबाजी से बहुत ज्यादा नाराज दिखाई देते हैं। पाकिस्तान द्वारा अमेरिका को धोखे में रखकर लगातार तालिबानी आतंकवादियों को पाकिस्तान में पनाह देने और उन्हें आर्थिक तथा अस्त्र-शस्त्र की मदद देने का बड़ा दोषी पाया गया है। अमेरिकी सीनेटर ओं का कहना है कि पाकिस्तान अमेरिका से लगातार धोखेबाजी करता रहा है। अमेरिका सैनिकों की वापसी के समय पाकिस्तान तालिबानी आतंकवादियों को निरंतर खुफिया सूचनाएं अमेरिकी सैनिकों के बारे में देता रहा है इतना ही नहीं पंचशीर घाटी में अफगानिस्तान इयों के खिलाफ आई एस आई का खुफिया विभाग तालिबानी आतंकवादियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर हवाई हमले कर अफगानी नागरिकों की नृशंस हत्या की और काबुल एयरपोर्ट में बम ब्लास्ट में भी पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई का हाथ होना बताया गया है। पाकिस्तान ने लगातार तालिबान और उनके आतंकवादियों की मदद कर अपने आप को मुसीबत में डाल दिया है। अमेरिका के एक बड़े प्रतिबंध और बड़ी कार्रवाई पाकिस्तान तथा तालिबान के खिलाफ करने जा रहा है। जिसकी रूपरेखा अमेरिकी विदेश तथा सैन्य विभाग कर चुका है। यदि अमेरिकी संसद में बिल पास हो जाता है तो तंग हाल पाकिस्तान को मिलने वाली सारी आर्थिक मदद बंद कर दी जाएगी। पाकिस्तान को मिलने वाली वर्ल्ड बैंक इंटरनेशनल मॉनेटरी फंड और एशियन डेवलपमेंट बैंक सारी आर्थिक मदद तत्काल रुप से प्रतिबंधित कर दी जाएगी। यूरोपीय संघ के देशों के द्वारा भी अलग-अलग प्रारूपों में दी जा रही मदद भी बंद करके पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान को आर्थिक रूप से नाकाम कर दिया जाएगा। यह अत्यंत उल्लेखनीय है की पाकिस्तान से अमेरिका तथा यूरोप में किए जाने वाले निर्यात का 70: भाग इस प्रतिबंध से प्रभावित होगा। पाकिस्तान की आर्थिक व्यवस्था पूरी तरह चरमरा के गिर जाएगी। पाकिस्तान की लगातार अमेरिका की अवहेलना करना तथा उसे धोखे में रख आतंकवादियों को पनाह दे कर उनकी लगातार आर्थिक तथा सैन्य मदद करना पाकिस्तान को बहुत भारी पड़ने वाला है। अमेरिकी राष्ट्रपति तथा उनका मंत्रिमंडल पाकिस्तान से कितना नाराज है उसका अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि अमेरिकी राष्ट्रपति के पद ग्रहण करने के बाद पाकिस्तान के प्रधानमंत्री से मिलना तो दूर उससे बात करना भी पसंद नहीं किया था। जबकि डोनाल्ड ट्रंप पाकिस्तान के प्रधानमंत्री से एक बार मुलाकात भी कर चुके थे। वर्तमान हालात में राष्ट्रपति अमेरिका पाकिस्तान तालिबान के खिलाफसख्त कार्रवाई करने के मानसिक स्तर पर पहुंच चुके हैं। अब परिस्थितियां ऐसी बन चुकी है की अमेरिका और सारे यूरोपीय देश इसके अलावा भारत, इजरायल ,दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, आदि पाकिस्तान पर अनेक प्रतिबंध लगाने की स्थिति में आ गए हैं। पाकिस्तान के हालात खराब होने के साथ-साथ पाकिस्तान का मीडिया और विपक्ष भी इमरान सरकार से जबरदस्त रूप से नाराज है। उधर तालिबान पाकिस्तान के लिए भस्मासुर साबित होगा क्योंकि वहां भी तालिबानी सरकार में दो अलग-अलग गुट बन चुके हैं एक गुट पाकिस्तान को पसंद नहीं करता है,दूसरा आतंकवादी गुट पाकिस्तान का खास शागिर्द है। अब यदि पाकिस्तान किसी भी आतंकवादी गतिविधि में शामिल होता है तो इसका मतलब है कि पाकिस्तान अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने वाला है और अपनी बर्बादी का कारण खुद बनेगा। भारत खास तौर पर चीन की तालिबान और पाकिस्तानी जुगलबंदी से खासा चिंतित हो गया है। जम्मू कश्मीर की सीमा में पाकिस्तानी समर्थित आतंकवादियों द्वारा लगातार सीमा पार हथियार पहुंचाने के प्रयास किए जा रहे हैं, जिसको भारत की सेना लगातार विफल कर रही है पर यह सब एक बड़ी परेशानी का सबब बन चुके हैं। वैश्विक राजनीति में पाकिस्तान तालिबान और चीन के खिलाफ शांतिपूर्ण हल निकालना अत्यंत आवश्यक हो गया है।

छोटी उम्र की महापौर

आदित्य नारायण

युवा शक्ति ही राष्ट्र की असली शक्ति है। युवाओं को अपने भीतर नेतृत्व के गुण पैदा करने चाहिएं ताकि वे आगे बढ़कर समाज और राष्ट्र के उत्थान में अपनी भूमिका निभा सकें। वैसे तो स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आपातकाल और आपातकाल के दौरान और भ्रष्टाचार के विरुद्ध जन आंदोलनों में युवा शक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अक्सर लोगों को कहते हुए सुना जाता है कि युवा भविष्य के नेता हैं और युवाओं को नेतृत्व का मौका मिलना चाहिए। आज युवा शक्ति ऐसे संस्थानों और संगठनों का नेतृत्व कर रहे हैं जहां दिन-प्रतिदिन का प्रबंधन करने, फैसले लेने और नागरिक समाज का प्रभावी संचालन सुनिश्चित करने वाली गतिविधियां होती हैं। आज के दौर में युवाओं को मौके देने बहुत जरूरी हैं। छात्र राजनीति और छात्र आंदोलनों का लम्बा इतिहास रहा है। 1970 से 90 के दशक के दौर में छात्र नेता भारतीय राजनीति के शीर्ष पर रहे। छात्र राजनीति को पंगु बनाने के पीछे का उद्देश्य नया नेतृत्व न खड़े होने देने की मानसिकता भी जिम्मेदार रही है। अब जबकि राजनीति पी-4 यानि पद, पावर, पैसा, प्रतिष्ठा तक सिमट कर रह गई है। इस समय युवाओं का राजनीति में प्रवेश बहुत मुश्किल हो गया है। फिर भी साहसी युवक और युवतियां नेतृत्व करने के लिए आगे आ रहे हैं। युवा देश समाज से जुड़े मुद्दों को लेकर काफी सजग है और उसकी सोच नई है। कर्नाटक के बल्लारी के महापौर चुनाव के इतिहास में सबसे कम उम्र की त्रिवेणी डी महापौर चुनी गई हैं। पैरामेडिकल स्नातक त्रिध्वेणी निगम की सबसे कम उम्र की निर्वाध्चित सदस्य भी हैं। कांग्रेस पार्टी की नेता त्रिवेणी के सामने भाजपा ने कोई उम्मीदवार नहीं उतारा था। इसलिए उनका निर्वाचन निर्विरोध हुआ। त्रिवेणी की मां भी पूर्व मेयर रही हैं। हालांकि राजनीति में पदार्पण की प्रेरणा उसे परिवार से ही मिली है। लेकिन उसके सामने चुनौतियां बड़ी हैं। सबसे बड़ी चुनौती अपनी पार्टी और विपक्ष को साथ लेकर चलने की है और बल्लारी को एक आदर्श शहर के रूप में विकसित करने की भी है। बल्लारी शहर की कई समस्याएं भी हैं। 2022 में झुग्गी बस्ती में रहने वाली 21 वर्षीय दमयन्ती ओडिशा के कटक नगर निगम की सबसे कम उम्र की डिप्टी मेयर बनी थीं। इससे पहले केरल की आर्या राजेन्द्रन को देश की सबसे युवा मेयर बनने का गौरव हासिल हो चुका है। दिसम्बर 2020 में जब उसने तिरुवनंतपुरम सिटी कारपोरेशन के महापौर का पद सम्भाला था तब वह महज 21 साल की थीं और बीएससी मैथेमेटिक की द्वितीय वर्ष की छात्राध्थीं। माकपा के स्टूडैंट विंग एसएफ्आई से छात्र जीवन में ही जुड़ध्गई थीं। महापौर पद सम्भालने के साथ-साथ उसने अपनी पढ़ाई भी जारी रखी और तिरुवनंतपुरम के लिए प्राथमिकताओं के हिसाब से योजनाएं भी तैयार कीं। सवाल यह नहीं है कि महापौर पद पर आसीन हुई युवतियां किस राजनीतिक दल से संबंध रखती हैं। अहम बात यह है कि छोटी उम्र में जिम्मेदारी वाला बड़ा पद सम्भालना है। आर्या राजेन्द्रन के पिता इलैक्ट्रिशियन हैं और उनकी मां साधारण जीवन बीमा निगम की कर्मचारी हैं। युवाओं को नेतृत्व के लिए तैयार करना परिवारों और राजनीतिक दलों का दायित्व है। युवाओं को स्वयं के सामाजिक दायित्वों का बोध होना बहुत जरूरी है। समस्या तब आती है जब परिवार और समाज युवा पीढ़ी को सामाजिक दायित्वों का बोध नहीं कराते। आज हर कोई धन और बल के जरिये सत्ता शीर्ष पर पहुंचना चाहता है। इतने महंगे चुनाव हो गए हैं उसमें कोई भी गरीब या मध्यमवर्गीय परिवारों के युवा चुनाव लड़ने की कल्पना भी नहीं कर सकते। भारतीय राजनीति में परिवारवाद के जरिये नेतृत्व तैयार करने के प्रयास किए जा रहे हैं। देश की नब्ज कह रही है कि युवा आगे आएं और नेतृत्व सम्भालें। समस्या यह है कि युवा नेतृत्व तब ही उभरेगा जब उसे पनपने के पर्याप्त अवसर दिए जाएंगे। इसलिए सभी राजनीतिक दलों को चाहिए कि वह समाज के हर वर्ग के युवाओं को प्रतिनिधित्व दें और उनमें नेतृत्व क्षमता का विकास करने के लिए उन्हें प्रशिक्षण दें तभी युवा पीढ़ी भविष्य में नेतृत्व करने के लिए तैयार होगी। छात्र राजनीति को राजनीति की पहली पाठशाला माना जाता है। हालांकि राजनीतिक दलों का अपना-अपना अलग दृष्टिकोण है। कुछ का मानना है कि छात्रों को राजनीति से दूर रहना चाहिए। लेकिन अधिकांश का मानना है कि प्रत्यक्ष प्रणाली से छात्र संघ चुनाव कराए जाने चाहिएं। ताकि युवाओं में नेतृत्व की क्षमता पैदा हो सके। बल्लारी की कम उम्र की महापौर त्रिध्वेणी से जनता को काफी उम्मीदें हैं। जन आकांक्षाओं की कसौटी पर खरा उतरना त्रिवेणी के लिए अग्निपरीक्षा के समान है।

नफरती सोच और घृणा भाषण पर सुप्रीम कोर्ट की सख्त टिप्पणी सभी के लिए बड़ा संदेश है

ललित गर्ग

कई बार तो ऐसा महसूस होता है कि समाज एवं राष्ट्र में उन्माद, अराजकता एवं अशांति पैदा करने के लिए नफरती भाषण देने की विभिन्न राजनीतिक दलों के नेता एवं संप्रदायों के कतिपय स्वनामधन्य नेताओं में परस्पर होड़ लगी हुई। राष्ट्रीय एकता एवं सामाजिक ताने-बाने को ध्वस्त कर रहे जहरीले भाषणों की समस्या दिन-प्रतिदिन गंभीर होती जा रही है। संकीर्णता एवं साम्प्रदायिकता का उन्माद एवं 'हेट स्पीच' के कारण न केवल विकास बाधित हो रहा है बल्कि देश की एकता एवं अखण्डता भी खण्ड-खण्ड होने के कगार पर पहुंच गयी है। अब तो ऐसा भी महसूस होने लगा है कि देश की दंड व्यवस्था के तहत जहां 'हेट स्पीच' को नये सिरे से परिभाषित करने की आवश्यकता है वहीं इस समस्या से निपटने के लिए 'हेट स्पीच' को अलग अपराध की श्रेणी में रखने के लिए कानून में संशोधन का भी वक्त आ गया है? राजनेताओं एवं तथाकथित धर्मगुरुओं के नफरती, उन्मादी, द्वेषमूलक और भड़काऊ भाषणों को लेकर सर्वोच्च न्यायालय ने एक बार फिर कड़ी टिप्पणी की है। एक मामले पर दो दिनों तक चली सुनवाई में अदालत ने केंद्र सरकार से पूछा कि ऐसे नफरती भाषणों के खिलाफअब तक क्या कार्रवाई हुई है? हालांकि सर्वोच्च न्यायालय पहले भी अलग-अलग मामलों की सुनवाई करते हुए राजनेताओं और धार्मिक संगठनों से जुड़े लोगों को सार्वजनिक मंचों से बोलते वक्त संयम बरतने की नसीहत दे चुका है, मगर इस प्रवृत्ति में कोई सुधार नजर नहीं आता।कई बार तो ऐसा महसूस होता है कि समाज एवं राष्ट्र में उन्माद, अराजकता एवं अशांति पैदा करने के लिए नफरती भाषण देने की विभिन्न राजनीतिक दलों के नेता एवं संप्रदायों के कतिपय स्वनामधन्य नेताओं में परस्पर होड़ लगी हुई। इस संबंध में धर्म संसदों में आपत्तिजनक भाषण, राजनीतिक सभाओं में घृणा एवं नफरती बोल एवं विभिन्न चौनलों पर बहस के दौरान आपत्तिजनक टिप्पणियां के दौरान हेट स्पीच के मामलों ने गंभीर एवं जटिल स्थितियों को जन्म दिया है। इस तरह भारत की गौरवमय संस्कृति को धुंधलाना, 'वसुधैव कुटुम्बकम' एवं सर्वधर्म सद्भाव के मंत्रों को ध्वस्त करना, भारत की एकता और अखण्डता को बांटना अक्षम्य अपराध है। इसलिये इनदिनों देश के ताजा मामलों में सर्वोच्च न्यायालय ने 'हेट स्पीच' एवं नफरती बयानों-भाषणों पर तल्ख टिप्पणी की है। दो न्यायाधीशों की पीठ ने कहा कि नेता जिस दिन राजनीति में धर्म का इस्तेमाल छोड़ देंगे, नफरती भाषण भी बंद हो जाएंगे। भारत के लोग दूसरे समुदायों के लोगों का अपमान न करने, साम्प्रदायिक सौहार्द एवं सद्भावना कायम करने का संकल्प क्यों नहीं लेते? अदालत ने जवाहर लाल नेहरू और अटल बिहारी वाजपेयी का उल्लेख करते हुए कहा कि उनके भाषणों को लोग दूर-दूर से सुनने आत थे। वैसी नजीर अब कोई नेता क्यों पेश नहीं करना चाहता। अदालत ने इस बात पर भी आपत्ति जताई कि लोग समुदाय विशेष को लेकर ही नफरती भाषणों के खिलाफचुनिंदा तरीके से मुकदमें क्यों दर्ज कराते हैं। उनमें सभी समुदायों और पंथों के खिलाफ दिए गए नफरती भाषणों पर सख्ती क्यों नहीं दिखाई जाती। सर्वोच्च न्यायालय लंबे समय से ऐसे भाषणों, बयानों और तकरीरों के खिलाफ सख्त रहा है। बात केवल मुस्लिम कट्टरता एवं नफरती बयानों की ही नहीं है, करीब दो महीना पहले महाराष्ट्र में आयोजित सकल हिंदू समाज की रैली को लेकर भी न्यायालय ने निर्देश दिया था कि राज्य सरकार सुनिश्चित करे कि वहां कोई नफरती भाषण न होने पाए। उस रैली की वीडियो रिकार्डिंग का भी आदेश दिया था। जब जगह-जगह धर्म संसद करके समुदाय विशेष के खिलाफनफरती और भड़काऊ भाषण दिए गए थे, तब भी अदालत ने सरकार को सख्त लहजे में इस पर काबू पाने को कहा था। मगर राजनीतिक दलों के प्रवक्ताओं और नेताओं को शायद ऐसी अदालती आदेशों-निर्देशों की कोई परवाह नहीं है। खुद सर्वोच्च न्यायालय ने इस बात का उल्लेख किया है कि टीवी चौनलों पर आए दिन राजनीतिक दलों के प्रवक्ता सांप्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने वाले वक्तव्य देते रहते हैं। राजनेताओं से किसी भी ऐसे आचरण की अपेक्षा नहीं की जाती, जिससे सामाजिक ताने-बाने पर बुरा प्रभाव पड़ता है। मगर इस दौर की राजनीति का स्वरूप कुछ ऐसा बनता गया है कि दूसरे धर्मों, संप्रदायों, समुदायों के खिलाफनफरती भाषण देकर अपना जनाधार बढ़ाने का प्रयास किया जाने लगा है। निश्चित ही यह विकृत एवं घृणित सोच वोट की राजनीति का हिस्सा बनती जा रही है। जाहिर है, उसमें भाषा की मर्यादा एवं शालीनता का भी ध्यान नहीं रखा जाता। स्थिति की गंभीरता का अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि अब तो राजनीतिक दलों के नेताओं के अलावा धार्मिक नेता भी अपने प्रवचनों में उत्तेजना और कटुता पैदा करने वाले शब्दों का ज्यादा इस्तेमाल करने लगे हैं। इस प्रवृत्ति पर अविलंब अंकुश लगाने की आवश्यकता है ताकि इस समस्या को नासूर बनने से पहले ही इस पर प्रभावी तरीके से नियंत्रण पाया जा सके। उम्मीद है कि विधि आयोग की रिपोर्ट पर केंद्र की ठोस कार्यवाही नहीं करने के बावजूद अब देश की शीर्ष अदालत हेट स्पीच के मुद्दे को लेकर जागरूक होते हुए उचित दिशा-निर्देश दे रही है। पूरे विश्व में आज जब हिंदुस्तान का डंका बज रहा है, तो देश के भीतर और देश के बाहर बैठी 'भारत विरोधी शक्तियां' एकजुट होकर साम्प्रदायिक सौहार्द एवं राष्ट्रीय एकता के ताने-बाने को क्षत-विक्षित करना चाहती है। ऐसी शक्तियां किसी भी तरह भारत से विकास का एक कालखंड छीन लेना चाहती हैं। भारत के लोगों में सहन करने की अद्भुत शक्ति रही है, लेकिन विदेशी ताकतें एवं देश की विरोधी शक्तियां उन्माद एवं नफरत के बीज बौने के तरह-तरह के षड़यंत्र रचते रहते हैं। सोचने की बात तो यह है कि साम्प्रदायिक भावनाओं एवं नफरती सोच को प्रश्रय देने वाले सम्प्रदाय एवं समुदाय खतरे से खाली नहीं हैं। उनका भविष्य कालिमापूर्ण है। तभी सर्वोच्च न्यायालय में इन मामलों की सुनवाई कर रही बेंच की अगुवाई कर रहे जस्टिस जोसेफने संयम, सहिष्णुता एवं सौहार्द की उपयोगिता को व्यक्त करते हुए कहा, 'सहिष्णुता क्या है? सहिष्णुता का सही अर्थ किसी को बर्दाश्त करना नहीं, बल्कि मतभेदों को स्वीकार करना है।' जरूरत है कि हमारे समाज में ऐसे मतभेदों को स्वीकारते हुए मनभेद को न पनपने दे। निश्चित ही राजनीतिक एवं साम्प्रदायिक स्वार्थों के चलते देश को जोड़ने की बजाय तोड़ने के प्रयास हो रहे हैं, जो अक्षम्य है। सर्वोच्च न्यायालय की टिप्पणी से स्पष्ट है कि इस प्रवृत्ति पर रोक लगाने के लिए सरकारों को संजीदगी दिखाने की जरूरत है। मगर विडंबना है कि ऐसे देश तोडक मामलों को रोकने की जरूरत नहीं समझी गई और विभिन्न राजनीतिक दलों के नेता एवं धर्मगुरु विद्वेष पर भाषण देते रहते हैं। सर्वोच्च न्यायालय की ताजा टिप्पणी को राजनीतिक दल एवं विभिन्न सम्प्रदायों के धर्मगुरु-धर्मनेता कितनी गंभीरता से लेंगे, यह कहना मुश्किल है। क्या भारत के लोग खुद ही संकल्प नहीं ले सकते कि वे दूसरे नागरिकों और समुदायों का अपमान नहीं करेंगे। आजादी के अमृत-काल में नफरत एवं उन्माद की आंधी को नियंत्रित करने के लिये विभिन्न धर्मों के बीच एकता, सौहार्द और समन्वय का उद्घोष करना होगा। तभी समूचा भारत नफरती सोच एवं हेट स्पीच के अशोभनीय-परिवेश से मुक्त होगा। तभी विनाश-शक्ति की अपेक्षा जीवन-शक्ति अधिक प्रभावशाली साबित होगी।

कर्नाटक चुनावों में लिंगायत और वोक्कालिगा समुदाय की अहम भूमिका क्यों रहती है

वोक्कालिगा भी कर्नाटक का एक प्रभावी समुदाय है। एक आकलन के मुताबिक इनकी संख्या कुल आबादी का 15 प्रतिशत है। अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) 35 प्रतिशत, अनुसूचित जाति व जनजाति 18 प्रतिशत, मुस्लिम लगभग 12.92 प्रतिशत और ब्राह्मण लगभग तीन प्रतिशत हैं। देश के चुनावी इतिहास में जातियों की गोलबंदी नतीजों को हमेशा से प्रभावित करती रही हैं। चर्चा अक्सर बिहार और उत्तर प्रदेश की होती है लेकिन दक्षिण का राज्य कर्नाटक भी इससे अछूता नहीं है। इस चुनावी राज्य की राजनीति को समझने के लिए यहां की प्रमुख जातियों को समझना जरूरी है, खासकर यहां के प्रभावशाली लिंगायत या वीरशैव-लिंगायत समुदाय के महत्व का विश्लेषण महत्वपूर्ण है। क्योंकि यहां के नतीजे तय करने में इस समुदाय की भूमिका प्रमुख होती है और हर दल उसे लुभाने की कोशिशों में जुटा है। कर्नाटक के सामाजिक इतिहास में लिंगायत समुदाय का एक महत्वपूर्ण स्थान है। 12वीं शताब्दी में एक अलग विचार प्रक्रिया के कारण इसका उद्भव हुआ। इस विचार के लोगों ने मौजूदा परंपराओं पर सवाल उठाए, समाज सुधारक बासवन्ना और अन्य 'वचनकारों' ने जाति व्यवस्था के खिलाफविद्रोह किया और इसे उन सभी लोगों का समर्थन मिला, जो भेदभाव के शिकार थे, विशेष रूप से कामकाजी वर्ग। इसने आगे चलकर एक संप्रदाय का रूप लिया जो लिंगायत के रूप में जाना गया। कहा जाता है कि कर्नाटक की आबादी में लगभग 17 प्रतिशत लिंगायत हैं और कुल 224 निर्वाचन क्षेत्रों में से 100 में इनका प्रभुत्व है। इनमें से अधिकांश सीटें उत्तरी कर्नाटक क्षेत्र की हैं।वोक्कालिगा भी कर्नाटक का एक प्रभावी समुदाय है। एक आकलन के मुताबिक इनकी संख्या कुल आबादी का 15 प्रतिशत है। अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) 35 प्रतिशत, अनुसूचित जाति व जनजाति 18 प्रतिशत, मुस्लिम लगभग 12.92 प्रतिशत और ब्राह्मण लगभग तीन प्रतिशत हैं। हालांकि, 2013 और 2018 के बीच की गई एक जाति जनगणना, जिसे अभी तक सार्वजनिक नहीं किया गया है, के अनुसार लिंगायत और वोक्कालिगा की आबादी क्रमशः नौ और आठ प्रतिशत से बहुत कम है। वर्तमान विधानसभा में सभी दलों के 54 लिंगायत विधायक हैं, जिनमें से 37 सत्तारूढ़ भाजपा के हैं। इसके अलावा, 1952 के बाद से कर्नाटक के 23 मुख्यमंत्रियों में से 10 लिंगायत रहे हैं, इसके बाद छह वोक्कालिगा, पांच पिछड़ा वर्ग से और दो ब्राह्मण।आगामी 10 मई को होने वाले मतदान में जीत के लिए लिंगायतों का समर्थन हासिल करना कितना महत्वपूर्ण है, यह इसी से समझा जा सकता है कि सभी राजनीतिक दल इस प्रभावशाली समुदाय को लुभाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ रहे हैं। साल 1989 तक लिंगायत कांग्रेस के पाले में थे और इस वजह से पार्टी का राज्य में एक मजबूत जनाधार भी था, लेकिन राजीव गांधी द्वारा 1990 में तत्कालील मुख्यमंत्री वीरेंद्र पाटिल को बर्खास्त किए जाने के बाद से यह समुदाय उसके खिलाफ हो गया। पाटिल के नेतृत्व में 1989 के चुनाव में कुल 224 सीटों में से 178 सीटें जीतने वाली कांग्रेस अगले चुनाव में 34 सीटों पर सिमट गई थी।जनता परिवार के विघटन और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में बी एस येदियुरप्पा के उभरने के साथ, समुदाय का एक बड़ा हिस्सा भगवा पार्टी की ओर स्थानांतरित हो गया, और फिर कर्नाटक इसका दक्षिणी गढ़ बन गया। यह तब और मजबूत हो गया जब पूर्व मुख्यमंत्री और जद (एस) नेता एचडी कुमारस्वामी ने 2007 में येदियुरप्पा को सत्ता हस्तांतरित करने से इनकार कर दिया। इससे भाजपा-जद (एस) गठबंधन के सत्ता साझेदारी समझौते का उल्लंघन हुआ और फिर इसके परिणामस्वरूप सरकार गिर गई। अगले विधानसभा चुनावों में भाजपा को सहानुभूति मिली। नतीजा हुआ कि 2008 के विधानसभा चुनावों के बाद, भाजपा ने येदियुरप्पा के नेतृत्व में 110 सीटें जीतकर अपनी पहली सरकार बनाई। हालांकि पांच साल बाद 2013 के चुनावों में, भाजपा 40 सीटों पर सिमट गई। क्योंकि येदियुरप्पा तब तक भाजपा से अलग हो गए थे और उन्होंने एक नया राजनीतिक दल कर्नाटक जनता पक्ष (केजीपी) का गठन किया था। हालांकि येदियुरप्पा की केजेपी उस चुनाव में केवल छह सीटेंहासिल करने में कामयाब रही, लेकिन उसे लगभग 10 प्रतिशत का वोट हासिल हुए। इस वजह से भाजपा को करारा झटका लगा। बाद में, येदियुरप्पा 2014 के लोकसभा चुनावों से पहले भाजपा में फिर से शामिल हो गए। साल 2018 के विधानसभा चुनाव में भाजपा 104 सीटें जीतने में कामयाब रही और "लिंगायत स्ट्रॉन्गमैन" येदियुरप्पा एक बार फिर मुख्यमंत्री बने।

CMYK

बेलगाम थानाध्यक्ष के खिलाफ कार्यवाही न होने से व्यापारियों में आक्रोश

❑ एसडीएम व एसपी के आश्वासन के बाद भी नही हुयी थानाध्यक्ष के खिलाफ कार्यवाही ❑ सीजेएम ने थानाध्यक्ष जरवल रोड सहित चार पर गंभीर धाराओं में दर्ज किया मुकदमा

संवाददाता

लखनऊ। अपनी बेलगाम कार्यशैली के चलते एसएचओ थाना जरवल रोड राजेश कुमार सिंह अपने महकमे को बदनाम करने के साथ-साथ उ0प्र0 की योगी सरकार जीरो टालरेन्स की छवि धूमिल कर रहे है। वही थानाध्यक्ष पर कोई सकारात्मक कार्यवाही न होने के कारण उच्चाधिकारियों की मंशा पर भी सवाल उठ रहे है। थानाध्यक्ष जरवल रोड पर पहला मामला इलेक्ट्रानिक्स के व्यापारी पर जबरन दुकान से घसीट कर थाने ले जाने का है। जिसके साथ बेरहमी से मार-पीट कर जेल भेज दिया गया। जिसके विरोध में सैकड़ों की संख्या में स्थानीय व्यापार मंडल के अध्यक्ष के साथ व्यापारियां ने दुकानो को बन्द कर थानेदार के खिलाफप्रदर्शन किया। एसडीएम व पुलिस अधीक्षक के दिये गये आश्वासन के पांच दिन बीत जाने के बाद भी थानाध्यक्ष व सिपाही के विरूद्ध कोई कार्यवाही नहीं हुयी। इससे व्यापारियों में काफी आक्रोश व्याप्त है। वे पुलिसिया कार्यशैली के खिलाफलामबंद होकर अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन करने की चेतावनी दे रहे है। इस सन्दर्भ में बात करने के लिये एसपी प्रशांत कुमार का फोन भी नहीं उठ रहा है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि अपने मातहत को बचाने के लिये प्रशासन भी थानाध्यक्ष का साथ दे रहा है।वही थानाध्यक्ष जरवल रोड राजेश कुमार सिंह के खिलाफएक दूसरे मामले में पीड़िता सुनीता पासी ने अपने उत्पीड़न के खिलाफ गुहार लगायी थी। कोई सुनवाई न होने पर पीड़िता सुनीता ने सीजेएम में वाद दायर कर दिया। जिसमें सीजेएम ने थानाध्यक्ष सहित चार आरोपितों पर गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर दिया। इससे पुलिस विभाग में हड़कंप मच गया। इससे प्रदश सरकार व पुलिस विभाग की साफछवि धूमिल हो रही है।पीड़िता सुनीता के अधिवक्ता कुलभूषण मिश्र के अनुसार मंडी समिति के अधिकारियों से मिल कर थानाध्यक्ष जरवल रोड जबरन् पीड़िता सुनीता पासी को अपना घर खाली करने का आदेश दिया। बात को न मानने पर उसके पति फूलचंद को जबरन थाने लाकर पिटाई की। जिसके चलते उसे गंभीर चोटे आयी। उसे छोड़ने के लिये दस हजार रूपये की रिश्वत भी ली। कही पर सुनवाई न होने पर सुनीता ने सीजेएम की कोर्ट में वाद दाखिल कर दिया। सीजेएम ने मामले की गंभीरता को देखते हुये इन्सपेक्टर राजेश कुमार सिंह, सिपाही प्रताप सिंह, सहकारी विकास समिति बभौरा के लिपिक अवधेश कुमार सिंह व समिति के सचिव दीपक वर्मा पर भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम सहित सात गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज करने का निर्देश दे दिया। पुलिस अधीक्षक के अनुसार थानाध्यक्ष सहित चार आरोपियों पर मुकदमा् दर्ज कर लिया गया है और सीओ पयागपुर को न्यायालय के आदेश के अनुपालन की जिम्मेदारी दी गयी है। वही इन्स्पेक्टर राजेश कुमार सिंह पीड़िता सुनीता पासी पर सुलह करने का दबाब बना रहे है। साथ ही सुलह न करने की दशा में परिवार को फर्जी मुकदमों में फंसा देने की धमकी दे रहे है। यह भी कह रहे है कि सीओ उनके मित्र है जॉच की रिपोर्ट उनके पक्ष में ही आयेगी। देखना यह है कि कोर्ट में मुकदमा दर्ज होने के बाद भी थानेदार के तेवर वैसे ही है। पीड़िता न्याय की आस में प्रदेश सरकार व उच्चाधिकारियों की ओर टकटकी लगाये देख रही है।

लखनऊ मेहदवी समाज के क्लासेज में हजरत ए खतीज-जतुल-कुबरा की वफात पर तकरीर

संवाददाता

लखनऊ। मेहदवी समाज के सभी क्लासों में हजरत ए खतीज-जतुल-कुबरा की वफात के मौके पर वक्त के इमाम की किदमत में तस्लियत पेश की गई तमाम असातीत में अपने अपने लेक्चर्स में हजरत ए खतिज जतुल कुबरा की इस्लाम के साथ वफादारी के मुख्तलिफपहलुओं पर गुफ्तगू की बीबी रसूल ए अकरम के साथ रह कर बराबर से इस्लाम के नशर और उसके फिरोग में शरीक थी आपकी वफात के मौके पर रसूल ए अकरम ने उस साल को आमूल हुस्न के नाम से ताबीर किया आपकी वफात के बाद मुख्तलिफ मौको पर रसूल ए अकरम जनाबे खतिज-जतुल-कुबरा की वफा और उनकी पायेदारी और इस्लाम की कीदमतो को याद करके गिरया फरमाया करते थे, हमारे बाज असातीत ने ये भी बताया की बाज मौके पर आपके किसी जौजा ने एहतरास किया कि अल्लाह ने आपको उससे बेहतर बीवियां अता की हैं, उस पर रसूल ए अकरम ने फरमाया कि कौन खतीजा का मुकाबला कर सकता है उसने उस वक्त मेरा साथ दिया जब सबने हमको छोड़ दिया था वो उस वक्त मेरे ऊपर ईमान लाई जब कि लोग हमारा इनकार कर रहे थे जनाबे खतिज- जतुल-कुबरा की वफात पर आपकी बेटी जनाबे फातिमा जहरा ने कि जिनका सिन पांच साला था अपने बाप का दामन पकड़ कर के अपनी मां के बारे में सवाल किया तो अल्लाह की जानिब से जिबरील नाजिल होकर पैगाम ले कर के आए ऐ रसूल फातिमा से कह दीजिए की आपकी मां जन्नत के महल में जनाबे मरियम ओ, जनाबे हाजरा ओ सारा की हमनशीन हैं, इस बावफा रसूल ए अकरम की जौजा की जिन्दगी के मुख्तलिफ पहलू आज समाज की अहम जरूरत है की जिस पर हमारे घर की खुवातीन अगर जनाबे खतिज-जतुल-कुबरा के किरदार को अपना ले तो हर घर जन्नत बन सकता है, आखिर में वक्त के इमाम की कीदमत में उनका पुरसा और इमाम की सलामती के लिए सभी सेंटर्स पर दुआ की गई।

डिप्टी सीएम एक्शन में, स्वास्थ्य सेवाये सुधारो वर्ना हटो

संवाददाता, लखनऊ। डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने सोनभद्र में स्वास्थ्य विभाग में भ्रष्टाचार और जिला अस्पताल में अव्यवस्था के जिम्मेदार अधिकारियों को फटकार लगाई थी,किंतु सुधार न होने पर सीएमओ को सस्पेंड कर दिया। सोनभद्र के सीएमओ को सस्पेंड कर दिया था। जिला अस्पताल की दुर्दशा पर डीएम को निर्देश देते हुए कड़ी निगरानी के आदेश दिए थे लेकिन अधिकारी बेलगाम नजर आ रहे हैं। मंत्री के जाते ही यथास्थिति हो गई।जिला अस्पताल में सीटी स्कैन मशीन खराब पड़ी है जिसकी वजह से सिटी स्कैन का काम ठप है। सीटी स्कैन के लिए आने वाले मरीज भटक रहे हैं। उन्हें महंगे दामों पर बाजार में सीटी स्कैन कराना पड़ रहा है। स्वास्थ्य विभाग के जिम्मेदारों की उदासीनता से जिला अस्पताल में मरीजों की दुश्वारियां कम होने का नाम नहीं ले रही। अस्पताल में रेडियोलॉजिस्ट न होने के कारण चार महीने से अल्ट्रासाउंड की सेवा ठप है तो दूसरी ओर पीपीपी मॉडल

पर संचालित सीटी स्कैन सेवा भी बंद हो गई है। स्वास्थ्य कर्मियों के मुताबिक सीटी स्कैन मशीन में आई तकनीकी गड़बड़ी को सुधारने के लिए शुक्रवार को एक टेक्निशियन बुलाया गया था लेकिन मशीन ठीक नहीं हो सकी। मरीजों के सामने जांच का संकट है। जिला अस्पताल में रोजाना औसतन 40 से 60 मरीजों को चिकित्सकों की ओर से सीटी स्कैन की सलाह दी जाती है। दुरूह इलाकों से लंबी दूरी तय कर जिला अस्पताल पहुंचने वालों को पांच दिन से निराश होकर लौटना पड़ रहा है। कई ऐसे गंभीर मरीज हैं, जिन्हें जिला अस्पताल में निरूशुल्क होने वाले सीटी स्कैन के लिए निजी सेंटरों पर डेढ़ से ढाई हजार रुपये खर्च करना पड़ रहा है।स्वास्थ्य कर्मियों का कहना है कि मशीन का एक पार्ट खराब हो गया है जो जापान से आना है। अगले 12 से 15 दिनों में उसके आने की उम्मीद नहीं है।ऐसे में सीटी स्कैन के लिए अभी इंतजार करना होगा।जिन मरीजों को ज्यादा जरूरत होती है उन्हें बनारस के दीन दयाल उपाध्याय अस्पताल में भेजा जाता है। जिला अस्पताल के सीएमएस डॉ.अश्वनी कुमार के मुताबिक जिला अस्पताल में पीपीपी मॉडल पर सीटी स्कैन मशीन लगी है। कुछ दिनों पहले मशीन में तकनीकी खराबी आ गई है।जल्द ठीक कराने का निर्देश दिया गया है।

लखनऊ में मिले कोरोना के 13 नए केस...होम आइसोलेशन में है सभी मरीज

संवाददाता, लखनऊ। उत्तर प्रदेश में एक बार फिर कोरोना का कहर बढ़ रहा है। प्रदेश में कोरोना वायरस से संक्रमित 91 नए मरीज मिले है। जिनमें से राजधानी लखनऊ में 13 नए मरीज मिले है, जिससे जहां कोरोना के केस बढ़कर 59 हो गए है। इसके अलावा ललितपुर में 20, गौतमबुद्ध नगर में 10, गाजियाबाद में 15 और लखनऊ में 14 एवं अन्य जिलों में एक से दो मरीज मिले हैं। जिसके बाद स्वास्थ्य विभाग और भी अलर्ट हो गया है। बता दें कि, लखनऊ में साल में दूसरी बार एक दिन में इतनी ज्यादा संख्या में संक्रमित मरीज मिले है। नए मिले सभी मरीज होम आइसोलेशन में है। इनमें से किसी को भी अस्पताल में भर्ती नहीं कराया गया। यह एक राहत की खबर है। इन सभी मरीजों को कोरोना से लड़ने के लिए गाइड किया जा रहा है। वहीं, प्रदेश भर में कोविड मरीजों की बढ़ती संख्या को देखते हुए हर स्तर पर सावधानी बरती जा रही है।

चीन ने भारत के राजनैतिक नेतृत्व की कमजोरी भांपकर एक बार फिर दुस्साहसिक कदम उठाया : प्रमोद तिवारी

संवाददाता

लखनऊ। प्रमोद तिवारी, सांसद, उप नेता, राज्य सभा एवं सदस्य, स्टीयरिंग कमेटी ने आज कहा है कि चीन ने भारत के राजनैतिक नेतृत्व की कमजोरी भांपकर एक बार फिर दुस्साहसिक कदम उठाया है। अरुणांचल प्रदेश का जर्रा-जर्रा हमारा है। मोदी जी के शासनकाल में वर्ष 2016 एवं 2019 में भी चीन ने यही किया था। चुनाव के पहले मोदी जी ने देश की जनता से जो वायदा किया था कि हम लाल आँखों से नजर मिलाकर बात करेंगे। लद्दाख के प्रकरण में भी मोदी जी ने कहा था कि ‘‘ न तो चीनी सैनिक आये थे, न हमारी भूमि पर कोई कब्जा हुआ है और न ही हमारी किसी चौकी पर कब्जा किया गया है ।’’ ऐसा कहकर प्रधानमंत्री मोदी ने हमारे 20 जॉबॉज जवानों की शहादत पर पानी फेर दिया था। अब सवाल यह है कि यदि प्रधानमंत्री मोदी की बात मान ली जाय तो क्या हमारे जवानो ने सीमा का अतिक्रमण

किया, उन्होंने ऐसा कह कर हमारे वीर जवनों की शहादत का अपमान किया था। श्री तिवारी ने कहा है कि पहले वर्ष 2016 एवं 2019 में और अब वर्ष 2023 में तीसरी बार चीन ने यह दुस्साहस किया है, उसने हमारे पर्वत, नदियाँ और भारतीय भूभाग पर बसे बसाये गाँवों का चीनी नामकरण करके अपने नक्षे में दिखा दिया है, और हमारी सार्वभौतिमकता को चुनौती दी है, यह भारतीय जनतापार्टी सरकार की कूटनीतिक और विदेष नीति की सबसे बड़ी विफ्लता है। इस पर भा.ज.पा. सरकार की खामोशी अत्यंत शर्मनाक है। ‘‘मोदी सरकार’’ का यह कलंकपूर्ण अध्याय है।हमारी सेना दुनिया की सबसे बहादुर सेना है, हमारी सेना के जवान जॉबॉज और वीर तथा पराक्रमी है। कमजोर राजनैतिक इच्छाशक्ति के कारण हमारे वीर जवान वह इतिहास नहीं दोहरा पा रहे हैं जो स्वर्गीया इन्दिरा गाँध जी के नेतृत्व में ‘‘नाथुला’’ में उन्होंने चीन के साथ किया था। पूरा देश हमारी विश्व विजयी भारतीय सेना के साथ एक जुट होकर खड़ा है । श्री तिवारी ने कहा है कि वे यहाँ अडानी को बचाने में लगे हुये हैं और वहाँ अरुणांचल में चीन हमारे बसे बसाये गाँवों का चीनी नामकरण करने में लगा है। श्री तिवारी ने प्रधानमंत्री से अनुरोध किया है कि आगे बढ़िये, और देश के सम्मान और गौरव की रक्षा की कीजिये।श्री तिवारी ने कहा है कि 38 साल की सबसे बड़ी महंगई, 47 साल की सबसे बड़ी बेरोजगारी देने वाली भा.ज.पा. सरकार अब चुनावी एजेण्डा बदलना चाहती है। क्योंकि वह जानती है कि जनता, विशेषरूप से बेरोजगार नौजवान जवाब मांगेगे कि प्रतिवर्ष 2 करोड़ रोजगार देने के हिसाब से 20 करोड़ रोजगार का क्या हुआ ? महंगाई पर देश की जनता पूँछेगी कि 25 रुपये प्रति लीटर पेट्रोल कहाँ है ? ‘‘अच्छे दिन’’ का सपना दिखाने वाले के मोदी जी के राज में 1150 रुपये प्रति सिलेण्डर कैसे हो गया 56 इंच का सीना बताने वाले मोदी जी के राज में पड़ोसी देश भारत की सम्प्रमुखता और एकता व अखण्डता के लिये खतरा कैसे बन रहे हैं ? इसीलिये देश की जनता का ध्यान भटकाने के लिये भारतीय जनतापार्टी और उसके संगठन वर्ष 2024 का चुनाव ध्रुवीकरण और साम्प्रदायिकता का बनाना चाहते हैं। इसीलिये पश्चिम बंगाल और बिहार प्रांत में भारतीय जनतापार्टी के इशारे पर साम्प्रदायिक दंगे कराये जा रहे हैं। श्री तिवारी ने दोनों राज्यों के मुख्यमंत्रियों ममता बनर्जी और नितीश कुमार से आग्रह किया है कि आम आदमी की और उनकी सम्पत्ति की सुरक्षा का हरसंभव प्रयास करें, तथा भारतीय जनतापार्टी की राजनीतिक चाल को समझे और साम्प्रदायिक सद्भाव बनाये रखें, किसी भी हालत में कानून व्यवस्था भंग न होने पाये। भारतीय जनतापार्टी के इस मंसूबे को विफ्ल करें।

बाला जी महिमा इन्फ्रास्ट्रक्चर कम्पनी ने अवैध प्लाटिग से लोगो का करोड़ों रुपए हडपा

❑ आरोपी राज यादव पैसे मागने पर लोगो को डरा धमका रहा, एफआईआर के बाद फरार

संवाददाता

लखनऊ। राज यादव जैनपुर निवासी जो लखनऊ मे 9 जुपिटर रियल स्टेट कंपनी मे नौकरी 2015, 16 मे करता था। उसने 2017 में अपनी कम्पनी बाला जी महिमा इन्फ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड कंपनी खोली। राज यादव और इनकी कम्पनी के लोगो ने चिनहट के पास ग्राम धावा तहसील लखनऊ मे खसरा नम्बर 455 बंजर जमीन के पेपर बनाकर शिवसिटी नाम से प्लाटिग करने लगे। इस जमीन पर एक शिवजी का मंदिर अभी निर्माणाधीन है। ग्राहक जो जमीन खरीदते उसका पैसा बाला जी महिमा इन्फ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड जिसके डायरेक्टर राज यादव है, कि कंपनी से किसान को जाता था। कुछ लोगो ने रजिस्ट्री भी करा ली थी। जिसमें राज यादव गवाह है। राज यादव की कंपनी में काम करने वाली महिला मोती देवी ने भी अपने कमीशन का दो लाख 25 हजार और दो लाख रुपए कैश कंपनी में प्लाट लेने के लिए दिया। कुल 4 लाख 25 हजार रुपए की जमीन खरीदी और अपने करीबियो को भी जमीन खरीदने के लिए कंपनी को जमीन के लिए पैसे दिलवाया। मोती देवी को बाद मे पता चला की यह जमीन खसरा नम्बर 455 पर न्यायालय द्वारा स्टे लिया गया है। उसे अपने साथ ठगी का ज्ञान होते ही उसने जिन लोगो को यहां पर जमीन खरीदने के लिए जिन लोगों से पैसे कंपनी को दिलवाये थे, उन सबको पता चला तो सब के होश उड गये की सालो की मेहनत की कमायी धोखाधडी मे चली गयी। मोती देवा व अन्य करीब 9 लोगों- सोनी पाल, नवीन गुप्ता, सुशील पाठक, बिन्दू देवी शशी मिश्रा इंदू देवी आदि ने मिलकर कम्पनी को पत्र लिखा और पत्र मे अपने पैसे की वापसी की बात कही। इसी बीच राज यादव ने कम्पनी के अन्य लोगो के साथ मिलकर आफिस मे सीसीटीवी कैमरे बाथरूम में लगाकर मोती देवी की अश्लील फोटो और वीडिया बनाकर ब्लैक मेल करता रहा, शारिरिक शोषण करने के साथ वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल करने की धमकी देता रहा। मोती देवी ने बताया कि राज यादव सिकंदर यादव व अभिषेक ने मिलकर मेरा शारीरिक शोषण किया। इन आरोपियों के खिलाफ चार एफआइआर उच्च अधिकारियो की पड़ताल के बाद गोमती नगर थाने मे लिखी गयी। राज यादव पर पहले भी कई मामाले दर्ज है। राज यादव आरोपी ने अपना रसूख दिखाते हए जांच सीबीसीआइडी के यहां हस्तान्तरित करा ली। लोगो का करोडो रूपये राज यादव लेकर फरार है। पुलिस अब भी उसकी गिरफ्तारी नहीं कर पायी जिससे लोगों में आक्रोश है।

टीले वाली मस्जिद विवाद पर सुनवाई 12 अप्रैल को होगी

हिंदू पक्ष के वकील ने सर्वे कराए जाने की मांग की, लखनऊ में सिविल कोर्ट सुनाएगा ऑर्डर

संवाददाता, लखनऊ। लखनऊ में लक्ष्मण टीला स्थित मंदिर और मस्जिद मामले में सुनवाई के लिए 12 अप्रैल की तारीख लगाई गई है। लक्ष्मण टीले के लॉर्ड शेष नागेश टीलेश्वर महादेव मंदिर और टीले वाली मस्जिद के विवादित स्थल का सर्वे कराए जाने की मांग है। इसकी याचिका वकील वीके श्रीवास्तव की ओर से दाखिल की गई है। याचिका में विवादित स्थल का सर्वे कमीशन सिविल कोर्ट के अमीन से कराने की मांग की गई है। लखनऊ में सिविल जज साउथ में अर्जी पर आज यानी मंगलवार को सुनवाई होनी थी, मगर वकीलों के वॉक आउट की वजह से सुनवाई नहीं हो सकी। वीके श्रीवास्तव की याचिका में विवादित स्थल का सर्वे कमीशन सिविल कोर्ट के अमीन से कराने की मांग है। कोर्ट में सुनवाई की गई तो उस समय सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड की ओर से कोई भी कोर्ट में नहीं था। जबकि हिंदू पक्ष की ओर से राघवेंद्र हिंदू, अधिवक्ता शेखर निगम और प्रियंका राव उपस्थित रहे। वहीं सरकार के वकील को उनका पक्ष दाखिल करने के लिए अर्जी की कॉपी दी थी। आज सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड का जवाब दाखिल हो सकता है। याचिकाकर्ता का दावा है कि टीले वाली मस्जिद के अंदर लार्ड शेष नागेश टीलेश्वर महादेव मंदिर है, जिसे नष्ट किया जा रहा है। हिंदू पक्ष के मुताबिक, औरंगजेब ने अपने शासन के दौरान लक्ष्मण टीला पर स्थित मंदिर को तोड़ दिया था। मंदिर के आधे हिस्से की जमीन पर मस्जिद बना दी। दावा है कि इसकी बाउंड्री के बाहर अब भी शेषनाग पटल कूप, शेषनागेष्ट टीलेश्वर महादेव मंदिर और पुराने हिंदू मंदिर आज भी हैं। मस्जिद में स्थित भगवान की प्राचीन मूर्तियों को नष्ट किया जा रहा है।

संक्षिप्त समाचार

यूपी में गांवों को सुंदर, स्वच्छ बनाने के लिए 25 हजार ग्राम प्रधान प्रशिक्षित किए जाएंगे

संवाददाता, लखनऊ। उत्तर प्रदेश के गांवों को स्वच्छ और सुंदर बनाने के लिए राज्य सरकार अब ग्राम प्रधानों, पंचायत सहायकों और सफाई कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिलवाएगी। पंचायती राज विभाग के अपर मुख्य सचिव मनोज कुमार ने बताया कि इस संबंध में राज्य भर में 21 प्रशिक्षण केंद्र बनाए जाएंगे। जहां अलग-अलग सत्रों में 25 हजार ग्राम प्रधानों समेत कुल 83 हजार लोगों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देशानुसार राज्य के सभी गांवों में ठोस और तरल कचरे के प्रबंधन को लेकर उचित कदम उठाने और इसके लिए ग्राम पंचायतों के पदाधिकारियों को प्रशिक्षित करने की तैयारी की जा रही है। स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के द्वितीय चरण के तहत वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए राज्य के 25 हजार से ज्यादा ग्राम पंचायतों को शामिल किया गया है। हाल में प्रशिक्षण देने वाले ‘मास्टर ट्रेनर्स के प्रशिक्षण का कार्य पूरा किया गया है। कुमार के अनुसार, स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के दूसरे चरण में वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए 25,145 ग्राम पंचायतों को शामिल किया गया है। इसके तहत 43,242 राजस्व गांवों को लेकर लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इन गांवों में प्रथम चरण में प्राप्त उपलब्धियों को आगे भी बनाए रखने के साथ ठोस एवं तरल कचरे के प्रबंधन के लिए विभिन्न अभियान चलाए जाएंगे। इसी सिलसिले में ग्राम प्रधान, खंड प्रेरक एवं पंचायत सहायक आदि लगभग 83,000 लोगों को प्रशिक्षण दिया जाएगा, जो वास्तविक रूप से गांवों में काम करेंगें। उन्होंने बताया कि इन लोगों का प्रशिक्षण लखनऊ के अलावा 20 जिला पंचायत रिसोर्स सेंटर पर भी कराया जाएगा। हर प्रशिक्षण केन्द्र पर 6 ‘मास्टर ट्रेनर तैनात किए गए हैं।

आन्दोलन के लिए बाध्य किए जा रहे चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

संवाददाता, लखनऊ। प्रदेश में चतुर्थ श्रेणी के पदों में भारी कमी है। पदों के सृजन के अनुसार वर्तमान समय में तीन लाख के करीब चतुर्थ श्रेणी के रिक्त पदों पर ठेका प्रथा के कार्मिकों से काम चलाया जा रहा है। प्रदेश में चतुर्थ श्रेणी के नियमित कार्मिकों की कई समस्याओं के निराकरण के सम्बंध में तीन माह पूर्व अपर मुख्य सचिव के साथ महासंघ के प्रति निधि मण्डल से हुई वार्ता में कई मांगों पर सहमति जताई गई। लेकिन उक्त बैठक न कोई कार्यवृत्ति जारी की गई न ही अब तक किसी एक समस्या का समाधान किया गया। उत्तर प्रदेश चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी महासंघ के महामंत्री सुरेश सिंह यादव ने समस्याओं के समाधान न होने पर कर्मचारी समाज में आक्रोश होने का हवाला देते हुए कहा कि इस संवर्ग को आन्दोलन के लिए बाध्य किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश चतुर्थ श्रेणी राज्य कर्मचारी महासंघ के प्रदेश महामंत्री ने बताया कि 10 सूत्री मांग पत्र पर कार्मिक उत्तर प्रदेश शासन द्वारा अपर मुख्य सचिव द्वारा बैठक 13 जनवरी 2023 को को बैठक हुई थी। जिसमें सभी बिंदुओं पर निर्देश जारी किए गए थे। लेकिन आज तक 3 महीने व्यतीत हो जाने के बावजूद कोई कार्यवाही नहीं हुई। सुरेश सिंह ने बताया कि मुख्य रूप से उन्नीस सौ ग्रेड पर समस्त विभागों को सामूहिक रूप से लागू किए जाने की कार्मिक विभाग द्वारा सहमति जारी किए जाने के बाद भी वित्त विभाग द्वारा अभी तक आदेश निर्गत नहीं किए गए। जबकि प्रदेश के कर्मचारियों को 1 जनवरी 2016 से सभी को अपने अपने प्रशासकीय विभाग से जारी करा कर लागू किए जाने के निर्देश दिए गए थे। महासंघ ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर पीआरडी जवानों का अवकाश का दिन पैसा भुगतान और न्यूनतम वेतन 30000 प्रतिमाह किए जाने तथा अपर मुख्य सचिव से वार्ता के उपरान्त बनी सहमति वाली मांगों का तत्काल निस्तारण कराने की मांग की है। महासंघ की तरफसे कहा गया कि समय रहते यदि कर्मचारियों की समस्याओं पर विचार नहीं किया गया ।

गैंगस्टर के खिलाफ एक्शन, दो करोड़ की संपत्ति कुर्क, पत्नी के नाम खरीदी थी जमीन

संवाददाता

लखनऊ। योगी आदित्यनाथ की सरकार माफियाओं अपराधियों के खिलाफ एक्शन मोड में है। कही बुलडोजर चल रहा तो कहीं संपत्ति की कुर्की। देवरिया जिले में एक गैंगस्टर की गैंगस्टर एक्ट के तहत 2 करोड़ 17 लाख रुपये की अचल संपत्ति प्रशासन ने कुर्क कर दी।इस अपराधी के खिलाफ दर्जन भर से ज्यादा मुकदमे दर्ज हैं और इसने संगठित गिरोह भी बनाया था। कुर्की जिलाधिकारी जितेन्द्र प्रताप सिंह के आदेश पर हुई। गैंगस्टर स्वयंवर यादव जिले के सुरौली थाना क्षेत्र के सुरौली गांव का रहने वाला है।आज देवरिया सदर के उप जिलाधिकारी सौरभ सिंह और क्षेत्राधिकारी नगर श्रीयस त्रिपाठी के नेतृत्व में तहसीलदार सदर और राजस्व विभाग के कर्मचारी, थाना कोतवाली की

पुलिस ग्राम सुरौली में कुख्यात गैंगस्टर, पशु तस्कर और अवैध शस्त्र का तस्कर स्वयंवर यादव द्वारा अपनी पत्नी निर्मला देवी के नाम से खरीदी गई आधा दर्जन जमीनों को धारा 14(1) उत्तर प्रदेश गिरोह बंद अधिनियम 1986 के तहत जिलाधिकारी देवरिया जितेंद्र प्रताप सिंह के निर्गत आदेश के द्वारा गैंगेस्टर अपराधी की अचल संपत्ति कुर्क कर दी गई है। गैंगेस्टर स्वयंवर यादव के बारे में अपर पुलिस अधीक्षक राजेश सोनकरके मुताबिक जिला मजिस्ट्रेट देवरिया द्वारा गैंगेस्टर एक्ट की धारा 14(1) निर्गत आदेश के क्रम में स्वयंवर यादव की कुल 2 करोड़ 17 लाख रुपए की अचल संपत्ति कुर्क करते हुए संपत्ति का रिसीवर तहसीलदार देवरिया साहब को नियुक्त किया गया है। स्वयंवर यादव जिला कारागार में बंद है। इसके खिलाफपशु तस्करी से लेकर हत्या का प्रयास अवैध शस्त्र की तस्करी जैसे 15 मुकदमे हैं।

माफिया अतीक अहमद की बदली जाएगी जेल, साबरमती से तिहाड़ जेल भेजने की हो रही तैयारी

संवाददाता

लखनऊ। गुजरात की साबरमती जेल में सजा काट रहे उमेशपाल हत्याकांड के मुख्य आरोपी माफिया अतीक अहमद की जेल जल्द बदली जाएगी। अतीक को साबरमती जेल से तिहाड़ जेल भेजने की तैयारी की जा रही है। बता दें कि, आपराधिक गतिविधियों में संलिप्तता के चलते यह बदलाव किया जा रहा है। तिहाड़ जेल में ट्रांसफर के लिए सुप्रीम कोर्ट में अर्जी दी जाएगी। पुलिस उमेश हत्याकांड में अतीक के शामिल होने के सबूतों के आधार पर एससी से जेल बदलने के लिए अनुरोध करेंगी। बता दें कि, प्रयागराज के उमेश पाल अपहरण केस में अतीक अहमद को उम्रकैद की सजा सुनाई गई। इसके बाद फिर से उसे साबरमती जेल पहुंचा दिया गया।ैब् के निर्देश

पर ही अतीक साबरमती जेल में बंद है। यहां अतीक अहमद कैदी नंबर 17052 के रूप में रह रहा है। साथ ही अतीक को रोज जेल में काम भी करना होगा। उसे झाड़ू लगाने का काम मिला है। साथ ही भैंस नहलाने का भी काम अतीक को दिया गया है। इसके लिए उसे 25 रुपए दिहाड़ी मिलनी थी। इसी बीच अब पुलिस अतीक की जेल बदलने की तैयारी कर रही है। पुलिस को अतीक के उमेशपाल हत्याकांड में शामिल होने के सबूत मिले थे। इन्हीं सबूतों के आधार पर पुलिस सुप्रीम कोर्ट से जेल बदलने की गुहार लगाएंगी।मिली जानकारी के मुताबिक, यूपी सरकार अब माफिया अहमद को साबरमती जेल में नहीं रखना चाहती है। माफिया अतीक यूपी सरकार के खर्च पर ही साबरमती जेल में रह रहा है। 2019 की शुरुआत में देवरिया जेल प्रकरण के बाद माफिया अतीक अहमद की जेल बदली गई थी। सुप्रीम कोर्ट के कड़े रवैए के बाद यूपी सरकार तब एमिकस क्यूरी ने अतीक को साबरमती जेल भेजने पर प्रस्ताव रखा था। जिसे सुप्रीम कोर्ट ने मंजूर किया था। इसके बाद 4 जून, 2019 को अतीक को साबरमती जेल में शिफ्ट किया गया था। हाल ही में अतीक अहमद को उमेश पाल अपहरण मामले में अतीक को उम्रकैद की सजा मिली थी। जिसके बाद से वो साबरमती जेल में बंद है।

CMYK

संगठन मे ही शक्ति है : आलोक आर्य

❑ होली मिलन समारोह मे उड़े अबीर गुलाल
❑ दियरा बाजार में राष्ट्रीय जन उद्योग व्यापार संगठन का हुआ गठन

संवाददाता, सुलतानपुर । राष्ट्रीय जन उद्योग व्यापार संगठन के होली मिलन समारोह मे जमकर जुड़े गुलाल। एक दूसरे से गले मिलकर एक दूसरे को बधाईयाँ दी। होली मिलन समारोह का आयोजन दियरा बाजार में किया गया । संगठन के प्रदेश महामंत्री आलोक कुमार आर्य ने कहा कि संगठन में सबसे बड़ी ताकत होती है । हम मजबूती के साथ संगठन और अधिक मजबूत बनाने में सहयोग करें, जिससे हर किसी के समस्या का समाधान आसानी से कराया जा सके । इस मौके पर विशिष्ट अतिथि प्रदेश मंत्री आनंद जयसवाल, जिला उपाध्यक्ष यश कुमार अग्रहरी, अमृत लाल, उपस्थित रहे । राष्ट्रीय जन उद्योग व्यापार संगठन के सभी बाजार के व्यापारी पदाधिकारी उपस्थित रहे एवं सभी का अंग वस्त्र एवं माला पहनाकर स्वागत सम्मान किया गया। कार्यक्रम में अशोक वर्मा, विनय सेन, विनोद अग्रहरि, उत्कर्ष मोदनवाल, अशोक गुप्ता, माखनलाल, संतोष अग्रहरी, मेश अग्रहरि, बी के गुप्ता, अनुज रोहित, अनुभव अग्रहरि , रिशु जयसवाल, सहित सभी पदाधिकारी एवं बाजार के सभी युवा मित्रो सहित वरिष्ठ जन उपस्थित रहे।

संदिग्ध परिस्थितियों में युवती का पेड़ से लटका मिला शव

❑ हरदोई मल्लावां थाना क्षेत्र में गेंहू काटने गई युवती का पेड़ से लटकता मिला शव

संवाददाता, अज्ञात कारणों के चलते फांसी लगाकर आत्महत्या करने वाली युवती की हुई पहचान। पहचान होने के बाद पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। ग्राम रामपुर के मजरा जयराम पुरवा निवासी राजबहादुर मंगलवार की शाम को अपने गेहूं काटने के लिए गए थे। उनकी पुत्री सुषमा भी साथ गई थी। वहीं से बताते हैं। अचानक यह युवती सुषमा गायब हो गई। उन्होंने सोचा कि घर गई होगी। राजबहादुर के खेतों से थोड़ी दूर पर रामप्रसाद के खेत में बबूल के पेड़ में बुधवार को लाश लटकी देखी गई । बुधवार को ग्राम प्रधान ने सूचना पुलिस को दी ।पुलिस मौके पर गई जांच पड़ताल की गई ।पहचान कराई गई। दोपहर बाद युवती की जब पहचान हो गई । शव को उतरवाकर पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया। सूचना परिजनों को मिली परिजनों का रो रो कर बुरा हाल था। परिजन कुछ बता नहीं पा रहे थे कि किस कारण ऐसा कदम युवती ने उठाया ।कोतवाल शेष नाथ सिंह ने बताया की युवती की पहचान हो गई है ।

समाज को नई दिशा देने हेतु विभिन्न समस्याओं को नाटक के माध्यम से किया प्रस्तुत

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

सुलतानपुर। स्थानीय गनपत सहाय पी.जी.कॉलेज सुल्तानपुर में बी.एड.विभाग के प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के छात्र-छात्राओं द्वारा आज के ज्वलंत समस्याओं तथा समाज को नई दिशा देने हेतु विभिन्न समस्याओं जैसे ज्वलंत मुद्दों को नाटक के माध्यम से प्रस्तुत किया गया ।नाट्य मंचन के द्वारा जल है तो कल है पर नाटक प्रस्तुत कर समाज को प्रेरित करते हुए पर्यावरण के लिए प्रेरित किया ।इस कार्यक्रम में प्रबंध समिति के सम्मानित सदस्य आशीष पाण्डेय शनि मुख्य अतिथि के रूप में अपने सम्बोधन में कहा कि जल के बिना जीवन सम्भव नहीं हैं हम सभी को जल संचयन करना आवश्यक है ।एवं यशस्वी प्राचार्य प्रो.अंग्रेज सिंह राणा ने कार्यक्रम की अध्यछता की ।तथा मुख्य महाविद्यालय के प्रभारी प्रो.मोहम्मद शाहिद ने कार्यक्रम को संबोधित किया। कार्यक्रम को मुख्य रूप से डॉ.रजनीश चंद्र पाण्डेय, डॉ.अर्चना मिश्रा, डॉ.साधना श्रीवास्तव, डॉ.नीति श्रीवास्तव, डॉ.किरण दूबे डॉ.विनय मिश्र, डॉ.दिव्या ने संबोधित किया। एक विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ.संध्या श्रीवास्तव ने कार्यक्रम में उपस्थित में उपस्थित जनों का आभार व्यक्त किया एवं संचालन डॉ.शशिभूषण सिंह ने किया ।कार्यक्रम में मुख्य रूप से दुर्गाप्रसाद शुक्ल, दिलीप श्रीवास्तव, अनीता, दिनेश इत्यादि लोग उपस्थित रहे।

जीवन मे सफलता हेतु नियमबद्धता आवश्यक : प्रो निशा सिंह

अंग्रेजी विभाग में विदाई समारोह का हुआ आयोजन

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

सुल्तानपुर। राणा प्रताप पी जी कालेज के अंग्रेजी विभाग ने बी ए तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों हेतु विदाई समारोह का आयोजन किया। इस विदाई समारोह का आयोजन बी ए प्रथम और थर्ड सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रबंधक सुरेंद्र नाथ सिंह, प्राचार्य प्रो डी के त्रिपाठी ,विभागाध्यक्ष प्रो निशा सिंह, ज्योति सक्सेना द्वारा राणा प्रताप और सरस्वती माँ के चित्रो पर दीप प्रज्ज्वलन और पुष्पार्चन से हुआ। सरस्वती वंदना और स्वागत गीत कोमल और सोमल ने प्रस्तुत किया। पूर्व प्राचार्य प्रो एम पी सिंह बिसेन ने कहा कि कॉलेज से विदाई एक परम्परा है। उज्वल भविष्य हेतु कठिन परिश्रम करें, सफलता अवश्य मिलेगी। प्रबंधक सुरेन्द्र नाथ सिंह ने विदाई आशीर्वाद देते हुए कहा कि जीवन मे सदैव प्रगति करें। प्राचार्य प्रो डी के त्रिपाठी ने कहा कि विदाई एक पड़ाव है अपने लक्ष्य निर्धारित करें। लक्ष्य से उर्जा मिलती है। लक्ष्य बड़ा करें तो ऊर्जा बड़ी होगी। उर्जा को चुनौती दें और समय पर लक्ष्य पूरा करें। विभागाध्यक्ष प्रो निशा सिंह ने कहा कि जीवन मे सफलता हेतु नियमबद्धता आवश्यक है। कठिन परिश्रम और दृढ़ इच्छा शक्ति से सफलता मिलेगी की। संतोष कुमार ने विदाई गीत आंखों में आंसू है फिर भी विदा करते है, गाकर सबको भावुक कर दिया। तुझसे नाराज नहीं जिंदगी सुमधुर स्वर में कोमल ने गाया। करण कोरी ने दिल दिया है जान भी देंगे गीत प्रस्तुत किया। दीपांशु, अंशिका सिंह, खुशी ने कॉलेज अनुभव पर भाषण दिया। अदिति सिंह और कीर्ति गुप्ता ने सोलो डांस प्रस्तुत किया। गर्ल्स में रैम्प वॉक अदिति सिंह, अंशिका सिंह,शिवानी, कीर्ति गुप्ता, आभा शर्मा ने किया। बॉयज में आशुतोष, मो शाबिर, मो कैफ हिमांशु, नागेंद्र यादव, अमन गुप्ता, अंकिता मिश्रा ने किया। मिस्टर फेयरवेल मो कैफऔर मिस फेयवेल अदिति सिंह बनी। ज्योति ने सभी अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन अनुभवी सिंह और आदित्य शुक्ला ने किया। इस अवसर पर अग्रेजी विभाग के विद्यार्थी मौजूद रहे।

कार व ट्रक की जोरदार भिड़ंत में कार सवार घायल

संवाददाता, ऊँचाहार, रायबरेली। कोतवाली क्षेत्र के लखनऊ प्रयागराज मार्ग पर पूरे छीटू सिंह गांव के पास मंगलवार की देर रात कार व ट्रक की जोरदार भिड़ंत में कार सवार शहजाद 25 वर्ष व अरफाज 32 वर्ष निवासी गल्ला मंडी कोतवाली सदर घायल हो गये, राहगीरों की सूचना पर पहुंची एम्बुलेंस द्वारा घायलों को सीएचसी लाया गया, जहां से प्राथमिक उपचार के बाद शहजाद को जिला अस्पताल रेफर किया गया है।

सीएचसी अधीक्षक डॉ मनोज कुमार शुक्ल ने बताया कि सड़क दुर्घटना में घायल दो लोग सीएचसी आये थे, जिसमें गम्भीर रूप से घायल एक युवक को जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया है।

राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की शिकायत पर लेखाधिकारी ने भ्रष्ट बाबू आरपी रावत का बदला पटल

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

रायबरेली। बेसिक शिक्षा विभाग के वित्त विभाग में वर्षों से बजट का काम देख रहे बाबू आरपी रावत का पटल बदल दिया गया है। आरएसएम की मांग पर आज वित्त अधिकारी ने उनका पटल चेंज कर दिया गया। इसके साथ ही राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की मांग पर वित्त विभाग ने अन्य मांगों को भी पूरा किया है। जिलाध्यक्ष वीरेंद्र सिंह ने कहा कि संघ की तरफ से 23 मार्च को एक पत्र सौंपा गया था। संघ की तरफ से वित्त एवं लेखाधिकारी से जनपद के 172 शिक्षकों के अवशेष देयक भुगतान की सूची में अंकित शिक्षकों का भुगतान। इसके साथ ही लेखा कार्यालय में पारदर्शी भुगतान व्यवस्था हेतु पहले आओ - पहले पाओ को बनाए जाने सहित लेखाकार आर पी रावत लेखाकार पटल परिवर्तन करने की मांग की गई थी। इन्हीं मांगों को लेकर आज एक बार फिर से हम लोग मिले, जिसमें हमारी सभी मांगों को पूरा कर लिया गया है। इसके साथ ही ऊंचाहार ब्लॉक के पूमावि सुकुरुल्लापुर में कार्यरत रिषभ गुप्ता से किसी भी प्रकार का काम न कराने की मांग की गई थी। जिस पर कहा गया कि अब किसी भी प्रकार से उनसे काम नहीं लिया जाएगा। इस अवसर पर जिला महामंत्री संजय कनौजिया, संगठन मंत्री मधुकर सिंह, हरिमोहन यादव, जयकरन, अवनीश सिंह, दिनेश सिंह, आशुतोष मौर्य, वीरेन्द्र बहादुर, रंजीत, कविता गौतम, वंदना पांडेय, प्रतिमा सिंह, बृजेन्द्र कुमार, दिनेश, रामेश्वर, वेद प्रकाश यादव, प्रदीप, हरिकेश, अनूप सिंह, हरिशरण मौर्य, प्रदीप पटेल, अनुराग मिश्रा, विनोद, राकेश गौतम, रविंद्र यादव, सन्तन आदि लोग मौजूद रहे।

जय किसान आन्दोलन के पदाधिकारियों ने किसानों की समस्याओं को लेकर भेजा ज्ञापन

बारिस व ओलावृष्टि से हुए नुकसान का मुआवजा दिलाए जाने की मांग की

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

रायबरेली। जय किसान आन्दोलन के जिलाध्यक्ष शिव प्रताप मौर्य की अध्यक्षता में जिले भर से आए सैकड़ों किसानों ने जिला मुख्यालय पहुंच कर किसानों की समस्याओं से संबंधित मुख्यमंत्री को संबोधित एक ज्ञापन जिलाधिकारी के माध्यम से भेजा। उनका कहना है जिले भर में किसानों को 50: से ज्यादा नुकसान हुआ है। बीते 6 महीने की कड़ी मेहनत पर बारिश व ओलावृष्टि ने पानी फेर दिया है ऐसे में ओलावृष्टि से हुए नुकसान का मुआवजा दिलाए जाने की मांग की है। जय किसान आन्दोलन की संस्थापक सदस्य एडवोकेट अर्चना श्रीवास्तव ने कहा कि की एक माह से लगातार रुक - रुक कर हो रही बारिश और तेज हवाओं की वजह से पूरे जिले मे रबी की फसल को भारी नुकसान पहुंचा है जिससे हरचन्दपुर ब्लॉक के पैड़ेपुर, चौहानपुर, पूरे लसुड़हाई, नाउन का पूरवा, व बछरावां ब्लॉक के देवपुरी, जमालपुर , महेरी , राजामऊ समोधा सहित जिले भर के किसान सामने सदमे में हैं। संस्थापक सदस्य राम विलास यादव ने बताया कि बहुत सारे किसानों ने कर्जा लेकर फैसलों की बुवाई की थी बारिस व ओलावृष्टि से अधिकांशतया गेंहू और सरसों की फसल नष्ट हो जाने के कारण किसान बुरी तरह से टूट गए हैं। किसान नेता पुष्कर पाल ने कहा कि यदि फसल के नुकसान की भरपाई न की गई तो किसान की कमर टूट जायेगी। जय किसान आन्दोलन सरकार से आग्रह करता है कि जनपद के सभी किसानो की समस्याओं पर तत्काल विचार करते हुए बेमौसम बारिश और ओलावृष्टि से हुए नुकसान की भरपाई के लिए फसल बीमा अदा किया जाय। इस अवसर पर एडवोकेट अर्चना, राम विलास यादव, पुष्कर पाल, शिव प्रताप मौर्य, संजय यादव, जितेन्द्र वर्मा, इन्द्रेश कुमार, नन्दन, गजजोधर, सुशील पांडेय, अवनीश, राज्जो, निर्मला, छेदी, रामहेत, कौशल सहित सैकड़ों किसान नेता व पदाधिकारी मौजूद रहे।

शराब के नशे में हुए बवाल पर चले ईट पत्थर व गोली

संवाददाता, हरदोई कोतवाली शहर के ग्राम तत्त्योरा में शराब के नशे में गाली-गलौज करने से टोंकने पर हुए बवाल में तमंचे से गोली चलाने और पत्थरबाजी करने के मामले में कहा जा रहा है कि पुरानी रंजिश के चलते झगड़े को अंजाम दिया गया। जबकि गांव वालो का कहना है कि सारा बवाल शराब की ही वजह से हुआ था। बताते चलें कि सोमवार की देर शाम को कोतवाली शहर के तत्यौरा गांव निवासी सचिन और नितिन शराब के नशे में गाली-गलौज कर रहे थे। जिस पर जब उन्हें टोंका-टाकी की गई तो बवाल होने लगा। इस पर सचिन और नितिन ने अपने साथियों को बुला लिया। जिनमें पीलीभीत जिले के बीसलपुर में तैनात एसआई का बेटा तरुण सिंह भी शामिल था। बताया गया था कि उन लोगों ने पहले तमंचे से गोली चलाई और फिर पत्थरबाजी करने लगे। इस तरह किए गए हमले में विपुल और ऋषिकांत दोनों जख्मी हुए थे। इस बीच वहां पहुंची पुलिस ने हमलावरों को हिरासत में लेते हुए जांच शुरू कर दी थी। वहीं दूसरी तरफसचिन की मां दुर्गा देवी पत्नी चन्द्र किशोर त्रिपाठी ने पुलिस को दी तहरीर में कहा है कि उसकी पुरानी रंजिश चल रही थी। जिसके चलते गया गांव के सर्वेश, पंकज, अमित और राजीव ने उसकी पिटाई कर दी थी, बचाने दौड़े उसके बेटे सचिन को भी पीटा। पुलिस ने दुर्गा की तहरीर पर चारों लोगों के खिलाफमारपीट का मामला दर्ज करते हुए जांच शुरू कर दी है।

बाबू जगजीवन राम व निषादों के राजा गुहराज निषाद की मनाई जयंती

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

रायबरेली। भारतीय राजनीति के शिखर पुरूष देश के पूर्व उप-प्रधानमंत्री ''बाबू'' जगजीवन राम व निषादों के राजा महराज गुहराज निषाद राज की जयंती पर कांग्रेस कार्यालय तिलक भवन में उनके चित्रों पर माल्यार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित की गई। कांग्रेस जिलाध्यक्ष पंकज तिवारी ने कहा कि बाबू जी का सम्पूर्ण जीचन दलित सशक्तिकरण, स्वतंत्रता संग्राम एवं सामाजिक न्याय की लड़ाई में गुजरा बाबू जी ने कुशल राजनीतिज्ञ, योग प्रशासक और साहसी उद्यमी की अपनी भूमिकाओं से राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। शहर अध्यक्ष धीरज श्रीवास्तव ने कहा कि जगजीवन राम जी असाधारण रूप से प्रतिभाशाली वक्ता थे, जिन्होंने प्रतिबद्धता, सर्मपण के साथ भारतीय राजनीति में आधी सदी से अधिक समय तक एक लम्बी पारी खेली। प्रवक्ता महताब आलम ने बताया कि बाबू जगजीवन राम जी ने जाति पर कटाक्ष करते हुए कहा था कि ''जाति ने हिन्दुस्तान का जितना नुकसान किया है वह सभी प्रकार के नुकसानों से ज्यादा है बाबू जी ने न सिर्फ दलितों के उत्थान में अपना योगदान दिया, बल्कि उन्होंने देश की आजादी में भी अहम भूमिका निभाई थी। उन्होंने ने बताया कि जनपद के सभी ब्लाकों में श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महेश प्रसाद शर्मा, राजकुमार दीक्षित, प्रवक्ता महताब आलम, शत्रोहन सोनकर, घनश्याम शुक्ला, अमित मिश्रा, मनोज तिवारी, मनोज मिश्रा, मेराजुल हसन फारूकी, रूपेश कुमार, संजय शुक्ला, महेश्वर सिंह, पोलू खान, अरविन्द शुक्ला, बाबा रामचन्द मिश्र, सफफू खान सहित अन्य पदाधिकारी गण मौजूद रहें।

बड़बोले नेता को पुलिस ने किया गिरफ्तार

भाजपा नेता बनकर गलियां देने का वीडियो हुआ था वायरल

संवाददाता, हरदोई शाहाबाद बीते दिनों सीतापुर जिला अस्पताल के बाहर एंबुलेंस का रास्ता रोकने से मना करने पर मरीज के परिजनों को गंदी गालियां देते हुए वीडियो वायरल हुआ था ।जिसमे बड़बोला नेता अपने को ब्लॉक प्रमुख का भाई बता रहा है ।वीडियो वायरल होने के बाद हरकत में आई सीतापुर पुलिस ने हरदोई के बेहटा गोकुल थाना क्षेत्र टोडरपुर से बड़बोले नेता को गिरफ्तार किया। एंबुलेंस में सवार मरीज के साले जयकिशन राठौर ने बड़बोले नेता उमेश मिश्रा पर मुकदमा दर्ज कराया है ।बड़बोले नेता के अनर्गल बयान पर ब्लॉक प्रमुख ने अपनी सफाई देकर उमेश से कोई वास्ता न होने की बात कही है ।जयकिशन राठौर ने दी गई तहरीर में अपने जीजा की हालत गंभीर होने पर उन्हें लखनऊ रिफर करने पर लखनऊ ले जाते समय एंबुलेंस के सामने उमेश मिश्रा ने अपनी गाड़ी लगा दी ।गाड़ी हटाने को कहने पर गंदी गालियां दीं ।और समय नष्ट होने के कारण मरीज जीजा सुरेश चंद्र राठौर की मृत्यु हो गई ।घटना के बाद से बड़बोला उमेश मिश्रा फरार हो गया था ।जिसकी गिरफ्तारी बेहटा गोकुल पुलिस के सहयोग से सीतापुर पुलिस ने बुधवार को टोडर पुर से की ।सीतापुर पुलिस बड़बोले नेता को गिरफ्तार कर सीतापुर ले गई।

आईजीआरएस पोर्टल पर शिकायतों के निस्तारण में जिले को मिला प्रदेश में दूसरा स्थान : डीएम

लक्ष्य के अनुरूप व्यापक कार्ययोजना बनाकर कार्य किया जाए : मंगला प्रसाद सिंह

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

हरदोई कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में कर-करेत्तर, राजस्व कार्यों एवं खाद्य एवं रसद विभाग की समीक्षा बैठक हुई। जिलाधिकारी ने जनपद के समस्त अधिकारियों को आईजीआरएस पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों के निस्तारण में जनपद का प्रदेश में दूसरा स्थान प्राप्त करने पर बधाई दी। कर करेत्तर की समीक्षा करते हुए उन्होंने कहा कि नया लक्ष्य प्राप्त होने पर लक्ष्य के अनुरूप व्यापक कार्ययोजना बनाकर कार्य किया जाए। उन्होंने अच्छा प्रदर्शन करने पर अधिशासी अधिकारी माधोगंज की सराहना की। गत वर्ष के सापेक्ष खराब वसूली वाले विभागों से स्पष्टीकरण जारी करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने आरएमओ से गेहूँ खरीद की स्थिति की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि गेहूँ क्रय केन्द्रों की उपजिलाधिकारी नियमित रूप से मॉनीटरिंग करें। समय-समय पर राशन वितरण के संबंध में प्रधान, कोटेदार व सत्यापनकर्ता कर्मचारियों के साथ बैठक करें। बेघर एवं कचरा उठाने वाले अवशेष व्यक्तियों को राशन कार्ड सुनिश्चित किये जायें। राशन वितरण के मामले में प्रत्येक माह आने वाली शिकायतों को सूचीबद्ध किया जाए। अनियमितता के लिए जिम्मेदार कोटेदार के विरूद्ध कड़ी कार्रवाई की जाए। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी प्रियंका सिंह व अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

हत्यारोपितों समेत एक दर्जन लोगों को हिरासत में लेकर पुलिस कर रही पूछताछ

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

ऊँचाहार, रायबरेली। बाबा का पुरवा गांव निवासी युवक की सोमवार की रात सरेआम गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। घटना के दूसरे दिन पत्नी ने गांव के ही तीन लोगों को नामजद करते हुए पति की हत्या किए जाने की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। हत्यारों की गिरफ्तारी को लेकर गत मंगलवार को परिजनों ने राष्ट्रीय राजमार्ग पर शव रख हंगामा भी किया था। बुधवार को पुलिस ने तीनों हत्यारोपितों समेत करीब एक दर्जन लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है बाबा का पुरवा निवासी चमन कुमार लोधी गांव के पास राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे मकान बनाकर रहता था। बताते हैं कि यह जमीन हत्यारोपितों के पुरखों ने मृतक के पिता रामस्वरूप को दान में दी थी। जिसका मुकदमा भी कोर्ट में विचाराधीन है। जमीन खाली कराने को लेकर मृतक चमन कुमार व सुखेंद्र तथा उसके भाई मोहित से काफी समय से विवाद चला आ रहा था। इसी बात को लेकर सोमवार की रात दोनों सगे भाइयों ने चचेरे भाई रोहित के साथ मिलकर राष्ट्रीय मार्ग पर अंडे की दुकान के पास खड़े चमन की 32 बोर के असलहे से गोली मारकर हत्या कर दी थी। घटना के दूसरे दिन पत्नी पूनम ने मोहित, सुखेंद्र समेत चचेरे भाई रोहित के खिलाफपति की हत्या का केस दर्ज कराया था। जिसके बाद हत्या आरोपितों की जल्द गिरफ्तारी को लेकर परिवारी जनों ने मंगलवार को गांव के सामने राष्ट्रीय राजमार्ग पर शव रखकर करीब आधे घंटे तक हंगामा किया था। प्रशासन के आश्वासन के बाद मामला शांत हुआ। बुधवार को पुलिस तीनों हत्यारोपितों समेत करीब एक दर्जन लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। इस बाबत कोतवाली प्रभारी बालेन्दु गौतम ने बताया कि पूछताछ की जा रही है। जल्द ही मामले का राजफाश किया जाएगा।

दो लोगों को धारदार हथियार से किया घायल

स्टार एक्सप्रेस संवाददाता

हरदोई। मझिला थाना क्षेत्र के गांव चेना में दुकान पर समान लेने गए 2 लोगों ने गांव के ही 2 लोगों ने दराती से हमला कर लहूलुहान कर दिया ।जिसमें एक व्यक्ति की आंख में गम्भीर चोट आई जबकि अन्य व्यक्ति को चेहरे पर काट कर घायल कर दिया। घटना के सम्बंध में 2 लोगों पर रिपोर्ट दर्ज कराई गई है मंगलवार की देर शाम लगभग 8 बजे जाफर पुत्र छुटकुन्नू और यासीन पुत्र गफूर व रामभरोसे पुत्र होरी गांव में दुकान पर सामान लेने गए थे ।इसी बीच राकेश पुत्र राजाराम व ओमप्रवेश पुत्र रामनरेश आये और गाली गलौज करते हुये दराती से हमला कर दिया ।बचाने आये रामभरोसे को भी अरोपियों ने पीट दिया ।सूचना पर पँहुचीं पुलिस ने गम्भीर रूप से घायल जाफर को सीएचसी में भर्ती कराया ।जहां से डॉक्टरों ने उसे जिला अस्पताल रिफर कर दिया।

स्थानीय मुद्दों के साथ आम आदमी पार्टी लड़ेगी निकाय चुनाव

हाउस टैक्स हाफ, वाटर टैक्स माफ का नारा

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

प्रयागराज. आम आदमी पार्टी के नगर निगम प्रभारी विनय पटेल आज यानि 06 अप्रैल 2023 को आवेदन पत्र वितरित करेंगे और वार्ड प्रत्याशियों का इंटरव्यू भी होगा। विनय पटेल ने बताया कि इस बार उत्तर प्रदेश के निकाय चुनाव में आम आदमी पार्टी अपने प्रमुख मुद्दों के साथ लड़ाएगी चुनाव जैसे हाउस टैक्स हाफवॉटर टैक्स माफ, मोहल्लों में होगा आप का मोहल्ला क्लीनिक, जीतेगी आप तो शहर की गंदगी होगी साफ, ऐसे प्रमुख एजेंटों के साथ उत्तर प्रदेश के निकाय चुनाव में आप लहराए की परचम। आम आदमी पार्टी के जिलाध्यक्ष सर्वेश यादव ने कहा कि आम आदमी पार्टी की नीतियों से प्रभावित होकर लोग बहुत तेजी के साथ आम आदमी पार्टी में आवेदन कर रहे हैं। अभी तक सात लोगों ने संभावित मेयर पद के लिए आवेदन किया है और 485 लोगों ने संभावित वार्ड प्रत्याशी के रूप में आवेदन किया है। लोग आम आदमी पार्टी में अपनी आस्था दिखा रहे हैं। आम जनमानस भी आम आदमी पार्टी को आशा भरी नजर से देख रहा है और आने वाले निकाय चुनाव में आवारा कुत्तों, जलभराव, हाउस टैक्स, वाटर टैक्स से राहत दिलाएगी जब निगम में आप की सरकार आएगी। नगर निगम के स्कूलों अस्पतालों को बेहतर बनाएंगे निगम के अंदर बेहतर मॉडल की स्थापना होगी।

खेत खलिहानों में रौनक, मड़ाई में जुटे किसान

संवाददाता, जौनपुर। आंधी-बारिश से नुकसान के बाद मौसम में छाई नरमी खत्म हो गई। तेज धूप से खेत और खलिहान गुलजार हो उठे। किसान परिवार के साथ खेतों में पहुंचकर गेहूं की फसल की मड़ाई कराने में जुट गए। तो वहीं ट्रैक्टर चालित थ्रेसरों की रफ्तार चौगुनी हो गई। विगत दिनो मौसम के अचानक करवट बदलते ही तेज हवाओं के साथ शुरू हुई बारिश ने खेतों में काट-बांध कर छोड़ी गई गेहूं की फसलों को भींगा देने से किसानों की चिंता बढ़ गई थी। मौसम साफ होने का इंतजार कर रहे किसानों को इस बात की अधिक तकलीफ रही कि यदि मौसम ने साथ न दिया तो वर्ष भर परिवार पेट भरने के लिए अन्न का मोहताज बना रहेगा। दूसरे ही दिन से तेज धूप का असर भींगी फसलों पर पड़ते ही वह मड़ाई की कगार पर पहुंचने लगीं। तीसरे दिन सुबह से खेत-खलिहानों में गेहूं मड़ाई का कार्य गति पकड़ लिया। किसानों की मानें तो मौसम खराब होने से पहले 20 फीसद किसान ही मड़ाई कर पाए थे और 80 फीसद फसलें खेतों में मौसम की मार झेलती रहीं। अचानक बढ़े तापमान के बीच गर्मी के भी चरम पर पहुंच जाने से जनमानस की व्याकुलता बढ़ गई। धूप और गर्मी की परवाह किए बिना किसान परिवार मुंह के निवाले को जल्द से जल्द घर पहुंचाने और पशु चारा के रूप में प्राप्त होने वाले भूसे को एकत्रित करने की जोर आजमाइश जोर पकड़े रही। ज्ञात हो कि भले ही खेती-बारी में व्यापक पैमाने पर बदलाव आया और नई- नई तकनीकियां ईजाद हुईं फिर भी किसानों को नंबर लगाना ही पड़ता है। विद्युत चालित थ्रेसरों की अपेक्षा अब ट्रैक्टर चालित हाई पावर के थ्रेसरों की डिमांड अधिक बढ़ गई है। जहां थ्रेसर स्वामी भी मौसम की नजाकत को देख अपना काम निबटाने के बाद ही दूसरे को वरीयता देने में भलाई समझ रहे हैं।

महर्षि कश्यप और निषादराज की मनायी जयन्ती

संवाददाता, जौनपुर। समाजवादी पार्टी कार्यालय पर महर्षि कश्यप व निषादराज की जयंती के कार्यक्रम जिलाध्यक्ष डां अवधनाथ पाल के अध्यक्षता में मनाई गई। जिलाध्यक्ष ने कहा कि महर्षि कश्यप ने अखण्ड तप, अलौकिक ज्ञान, धर्मनिष्ठा, परोपकारिता, अद्भुत तेज आदि समस्त लोकों में गुंजायमान था व बाल सखा श्रृंगवेरपुर राजा महाराजा ने प्रभु श्रीराम से मित्रता को युगों-युगों के लिए सार्थक किया वहीं आज भाजपा सरकार ने इस देश में ऐसा राजा बनाया है जो अपने मित्र अडानी को मजबूत बनाने के लिए देश की प्रजा के हक अधिकार सरकारी संपत्ति को उन्हें बेचकर उनसे मित्रता निभाने का काम कर रहें हैं।भाजपा सरकार ने अवकाश को निरस्त कर महापुरुषों को अपमानित करने का काम किया। पूर्व विधायक राजनरायन बिन्द, लालबहादुर यादव, यशवता यादव डां0 जितेंद्र यादव, राजन यादव श्याम बहादुर पाल, राजेन्द्र यादव,राहुल त्रिपाठी आदि मौजूद रहे।

एंटी करप्शन की टीम ने लेखपाल को पांच रुपए रिश्वत लेते पकड़ा

❑ लेखपाल के खिलाफ कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराने के बाद टीम लेखपाल को अपने साथ बांदा ले गई

संवाददाता, हमीरपुर। राजस्व विभाग में व्याप्त रिश्वतखोरी पर बुधवार को बांदा-प्रयागराज की संयुक्त टीम से एंटी करप्शन की टीम ने प्रहार किया। सदर तहसील के एक लेखपाल को पैमाइश के मामले में पांच हजार रुपए की रिश्वत लेते हुए टीम ने रंगेहाथों दबोच लिया। टीम इसे उठाकर कोतवाली ले गई। लेखपाल के खिलाफ कोतवाली में भ्रष्टाचार अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज होने के बाद टीम लेखपाल को अपने साथ बांदा ले गई। सुमेरपुर ब्लाक के बड़ा कछार गांव निवासी रामबाबू ने बताया कि वह सूरत में मजदूरी करता है। उसकी पत्नी के नाम पट्टा हुआ था। जिसकी पैमाइश होनी थी। पैमाइश के नाम पर गांव में तैनात लेखपाल छत्रपाल सिंह पहले टाल-मटोल करता रहा और फिर पांच हजार रुपए की मांग करनी शुरू कर दी। जिसके कारण वह काफी परेशान था। 29 मार्च को उसने बांदा स्थित एंटी करप्शन कार्यालय में अपनी शिकायत दर्ज कराई थी। जिसके बाद बुधवार को बांदा और प्रयागराज की संयुक्त सात सदस्यीय टीम ने लेखपाल को रिश्वत लेते धर-दबोचा। बुधवार को बांदा और प्रयागराज एंटी करप्शन की संयुक्त टीम के इंस्पेक्टर महेश दुबे की अगुवाई में आई टीम ने लेखपाल को रंगेहाथों पकड़ने के लिए रिश्वत के पांच हजार रुपए अपने पास से निशान लगाकर रामबाबू को दिए। तहसील पहुंचे रामबाबू ने लेखपाल छत्रपाल सिंह से संपर्क कर उसे टीम द्वारा उपलब्ध कराए गए पैस थमा दिए। इसके कुछ ही देर में टीम ने लेखपाल को दबोच लिया। उसके पास से रिश्वत के निशाने वाले नोट भी बरामद हो गए। इंसपेक्टर महेश दुबे ने बताया कि उनके साथ सुरेंद्र यादव, अनिरुद्ध कुमार, शशिकांत शर्मा, राकेश कुमार, सचिन चौरसिया, राजेश यादव भी शामिल हैं। जिसमें चार लोग प्रयागराज से और तीन बांदा से हैं। इस कार्रवाई से लेखपालों में अफरा-तफरी मच गई। वहीं कोतवाली पुलिस ने पकड़े गए लेखपाल के खिलाफ भ्रष्टाचार अधिनियम की धारा सात के तहत मुकदमा पंजीकृत किया है।

पुलिस की मिलीभगत से पंधरी में आबाद है नालबंद जुआड खाना

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

सुमेरपुर, हमीरपुर। क्षेत्र के ग्राम पंधरी में पुलिस की मिलीभगत से नालबंद जुआं खुलेआम खिलाया जा रहा है। इस जुआडखाने में जनपद के अलावा बांदा, कानपुर, जालौन, महोबा के नामी-गिरामी जुआड़ी हिस्सा लेकर प्रतिदिन लाखों के वारे न्यारे करते हैं। ग्रामीणों ने मामले की शिकायत सीओ सदर से की थी। सीओ सदर ने जांच के आदेश दिए थे। स्थानीय पुलिस ग्रामीणों से पूछताछ के बाद चुप हो गई है। कस्बा सहित पंधरी, टेढ़ा नालबंद जुआ कराने के लिए अर्से से मशहूर है?। कई दफा यह जुआडखाने पकड़े भी गए हैं। इस समय पंधरी में नालबंद जुआडखाना संचालित है। इस जुआडखाने में जनपद के अलावा बांदा, कानपुर, महोबा के नामी-गिरामी जुआड़ी हिस्सा लेकर लाखों के वारे न्यारे करते हैं। ग्रामीणों का दावा है कि उन्होंने मामले की शिकायत की थी सीओ सदर राजेश कमल से की थी। सीओ सदर ने थानाध्यक्ष को कार्यवाही के आदेश दिए थे। कार्यवाही के नाम पर थानाध्यक्ष ने महज ग्रामीणों से पूछताछ की थी। इसके बाद कार्यवाही को ठंडे बस्ते में डाल दिया है। थानाध्यक्ष राम आसरे सरोज ने बताया कि ग्रामीणों की सूचना मिली है ग्रामीण जगह का नाम नहीं बता रहे हैं। इस वजह से अभी तक कार्यवाही नहीं हो सकी है। जगह का पता चलते ही छापामारकर कार्यवाही की जाएगी।

जन शिकायतें प्राथमिकता से निपटाने के दिये निर्देश

सुमेरपुर, हमीरपुररू मंगलवार की रात पुलिस अधीक्षक ने थाने का औचक निरीक्षण किया। इससे थाने में हड़कंप मच गया। पुलिस अधीक्षक ने कार्यालय, कंप्यूटर कक्ष, भोजनालय, निर्माणाधीन भवन का निरीक्षण किया। उन्होंने कार्यालय, लाकअप, हेल्प डेस्क रजिस्टर, भूमि विवाद रजिस्टर, अपराध रजिस्टर, महिला हेल्प डेस्क, माल खाने के अलावा सीसीटीवी कैमरे आदि का निरीक्षण किया। उन्होंने निर्माणाधीन बैरिक को भी देखा और थानाध्यक्ष रामआसरे सरोज को जन शिकायतें प्राथमिकता के साथ निपटाने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान थानाध्यक्ष सहित कस्बा इंचार्ज, हल्का इंचार्ज, चौकी इंचार्ज मौजूद रहे। पुलिस अधीक्षक के औचक निरीक्षण से थाने में हड़कंप मचा रहा।

कोरोना प्रभावित मरीजों के घर पहुंची आरआरटी टीमें

संवाददाता, हमीरपुर। छह माह के अंतराल के बाद जनपद में दो महिलाओं में कोरोना की पुष्टि के बाद सक्रिय हुई स्वास्थ्य विभाग की रैपिड रिस्पॉन्स टीमों ने दोनों ही प्रभावित मरीजों से संपर्क करके कांट्रेक्ट ट्रेसिंग शुरू कर दी है। इसके साथ ही लोगों को कोरोना से बचाव के प्रति जागरूक किया जा रहा है। मंगलवार को जिला अस्पताल की लैब में हुई जांच में खालेपुरा मोहल्ले की 20 वर्षीय युवती और कुरारा ब्लाक के एक गांव की आशा कार्यकर्ता में कोरोना की पुष्टि हुई थी। इनमें से 20 वर्षीय युवती अभी फरवरी माह में बांदा जनपद से ब्याह कर अपनी ससुराल खालेपुरा आई है। युवती के कोरोना का कोई भी टीका नहीं लगा है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ.रामअवतार सिंह ने बताया कि जनपद में 13 अक्टूबर 2022 के बाद से कोई भी कोरोना संक्रमित केस नहीं मिला था। कल जिला अस्पताल की लैब में हुई जांच में इन दोनों महिलाओं में कोरोना की पुष्टि हुई है। फिलहाल दोनों को होम आइसोलेशन में रखा गया है। उन्होंने लोगों से कोरोना संक्रमण को देखते हुए सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करने और मास्क लगाने की अपील की। उन्होंने बताया कि टीका लगवा चुके लोगों में कोरोना की गंभीरता कम हो जाती है। उन्होंने कहा कि लोग बार-बार हाथों को धोएं। कोविड सर्विलांस अधिकारी डॉ.अनूप निगम ने बताया कि दोनों संक्रमित मरीजों के घर पर बुधवार को रैपिड रिस्पॉन्स टीम (आरआरटी) को भेजा गया है। कुरारा में डॉ.मनीष स्वर्णकार और डॉअनुराग मिश्रा की अगुवाई में पैरा मेडिकल टीम ने आशा कार्यकर्ता के घर जाकर स्थिति का जायजा लिया। मरीज की स्थिति ठीक है। यहां 38 लोगों के सैंपल लिए गए हैं। मुख्यालय के खालेपुरा में डॉ.प्रेरणा गुप्ता के साथ आरआरटी टीम ने कोरोना संक्रमित युवती के परिजनों से संपर्क करके सैंपल लिए हैं।

पट्टाधारक कर रहे प्रतिबंधित पोकलैंड मशीनों से कर रहे अवैध खनन

खनिज विभाग के अधिकारियों की अनदेखी से जलधारा से हो रही छेड़छाड़

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

हमीरपुर। जालौन खनिज अधिकारी व मौरंग माफिया की साँठ गाँठ से जिले में बेतवा नदी में संचालित कुछ खनन कारोबारी मनमानी तरीके से खनन कर रहे हैं।और निजी भूमि में खनन करके सरकार को भारी राजस्व का चूना लगा रहे है नदी की जलधारा से हैवी पोकलैंड मशीनों के जरिए मौरंग की निकासी कर एनजीटी के नियमों की खुलेआम अवहेलना कर रहे हैं। संचालित जालौन में खंड संख्या पथरेहटा 5 का नियमों की अनदेखी हो रही है। खनिज विभाग भी इन पट्टों की निगरानी में कंजूसी बरत रहा है। सूत्रों की माने तो कन्ही न कन्हि डान अतीक अहमद के तार इन खनन माफिया से जुड़े है मौरंग खनन के लिए, इनमें पट्टाधारकों के संचालक एनजीटी के आदेशों को दरकिनार किए हैं। प्रतिबंधित हैवी पोकलैंड मशीनों से नदी में मानक से कई गुना अधिक गहराई तक मौरंग खनन आम बात है। इतना ही नहीं पट्टाधारक द्वारा नदी की जलधारा से भी छेड़छाड़ कर नियम विरुद्ध खनन करते देखे जा रहे हैं। मौरंग खदानों में तीन मीटर गहराई से मौरंग निकासी के आदेशों का पालन नहीं हो रहा है। निर्धारित क्षमता से अधिक मौरंग ट्रकों व डंपरों में भरी जा रही है। वहीं जलधारा से निकाली गई मौरंग सड़कों में पानी टपकने से ध्वस्त होने लगी हैं। एनजीटी के आदेशों के तहत निर्धारित क्षेत्रफल में ही खनन किया जाना है। इस मामले में एसडीएम जालौन को फोन किया गया तो फोन मिलाया तो उन्होंने सीयूजी नंबर रिसीब किया लेकिन बात नहीं हो सकी। बताया कि वो इस संबंध में कोई भी वर्जन नहीं दे सकता हूं। इसके जिलाधिकारी ही जवाब देंगे। कार्रवाई से पहले संचालकों को मिल जाती सूचना खदान जाने वाले रास्ते में बाहर से आने वाले अधिकारियों पर नजर रखने के लिए मौरम खनन माफिया लोकेटरों की व्यवस्था किये हुए हैं। साथ ही अधिकारियों के हमराह और कर्मचारी भी इन खदान संचालकों को सूचना दे देते हैं। जिससे कार्यवाही होते होते बच जाती है।

संरक्षण,देखरेख एवं आवश्यकता वाले बच्चों को बेहतर सहयोग देने का लक्ष्य

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

उरई (जालौन)। विकास खण्ड माधौगढ़ जिला जालौन के सभागार में मिशन वात्सल्य योजना के तहत जिलाधिकारी महोदय के निर्देशन एवं जिला प्रोबेशन अधिकारी के मार्गदर्शन के क्रम में ब्लाक बाल कल्याण एवं संरक्षण समिति की बैठक ब्लाक प्रमुख की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में राज्य,जिला, ब्लाक, ग्राम, वार्ड स्तर पर समितियों का गठन हो गया है। संरक्षण अधिकारी जूली खातून ने मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना, मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना, बाल विवाह आदि योजनाओं पर चर्चा की। ब्लाक बाल कल्याण एवं संरक्षण समिति के सदस्य सचिव बाल विकास परियोजना अधिकारी की भूमिका, दायित्व, जिम्मेदारी पर पर चर्चा करते हुए ब्लाक एवं ग्राम स्तर पर मैपिंग की बात कही। ब्लॉक प्रमुख जी द्वारा ग्राम बाल कल्याण एवं संरक्षण समिति की नियमित बैठक का जिक्र किया। बच्चों को नियमित विधालय भेजने पर जोर दिया। शिक्षा विभाग के प्रतिनिधि ने बच्चों के आधार कार्ड को जोर देते हुए बताया कि रोस्टर अनुसार क्लस्टर स्तर पर बनाया जा रहा है। जिसमें प्राथमिकता स्कूल जाने वाले बच्चों को दिया जा रहा है। स्वास्थ्य विभाग के प्रभारी चिकित्साधिकारी ने पीयर एजुकेटर्स, एवं आशाओं के माध्यम से बाल सुरक्षा पर जागरूकता एवं काउंसिलिंग की बात कही। बाल कल्याण पुलिस अधिकारी थाना माधौगढ़ ने गांव क्षेत्र में जागरूकता की बात कही।ब्लाक प्रमुख जी ने कहा कि देखरेख एवं संरक्षण वाले बच्चों के हितों के लिए हम सभी एक साथ कार्य करेंगे। प्रत्येक ग्राम पंचायत के सचिवालय में हेल्पलाइन नंबर जैसे 1098,112,1090,181 का दीवाल लेखन होने की बात कही। बैठक में उपरोक्त अधिकारियों के अलावा, आगनवाड़ी का समस्त स्टाफ,ब्लॉक स्टाप, चाइल्ड लाइन, एवं सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

स्कूल चलो अभियान के तहत बच्चों ने निकाली जागरूकता रैली

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

बल्दीराय - सुलतानपुर बल्दीराय तहसील क्षेत्र के अंतर्गत प्राथमिक विद्यालय चक्कारी भीट में बुधवार को प्रधानाध्यापक निहाल अहमद खां व ग्राम प्रधान मोहम्मद सम्मू उर्फपप्पू के नेतृत्व में बच्चों ने स्कूल चलो अभियान के अंतर्गत रैली निकाली बच्चों द्वारा निकाली गई जागरूकता रैली क्षेत्र के विभिन्न गांव से होते हुए प्राथमिक विद्यालय पर आकर समाप्त हुई उक्त रैली में बच्चों द्वारा गगनभेदी नारे लगाए गए और शिक्षा के प्रति लोगों को जागरूक किया गया इस अवसर पर प्रधानाध्यापक निहाल अहमद खान ग्राम प्रधान सम्मू मोहम्मद अनवर सहायक अध्यापक परसुराम मौर्य सहायक अध्यापक भावना त्रिपाठी मेहरून निशा मंशा देवी सुमन वर्मा सहित क्षेत्र की बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

परा-विधिक स्वयंसेवक के रूप में कार्य करने हेतु किन्नर समुदाय से आवेदन आमंत्रित

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

शाहजहाँपुर। सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरणध्अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश एफ्टीसी पीयूष तिवारी ने बताया कि उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा किन्नर समुदाय से परा-विधिक स्वयंसेवकों की नियुक्ति के लिए जिला मुख्यालय स्तर पर किन्नर समुदाय से परा-विधिक स्वयंसेवक के रूप में कार्य करने हेतु निर्धारित प्रारूप पर आवेदन पत्र आमंत्रित किए गए हैं। परा-विधिक स्वयंसेवक प्राधिकरण की तरफसे आम जनमानस को कानूनी जानकारी उपलब्ध कराते हुए उन्हें विधिक प्रावधानों के संबंध में जागरूक करने का कार्य करते हैं। प्राधिकरण द्वारा परा-विधिक स्वयंसेवक को इस बाबत प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है कि वह पक्षकारों के मध्य सामान्य व लघु प्रकृति के विवादों को शुरुआती स्तर पर ही बातचीत के आधार पर सुलझाने में उनकी मदद करें। इसके अतिरिक्त परा-विधिक स्वयंसेवक आम जनता की शिकायतों को संबंधित विभागों के अधिकारीगण के समक्ष प्रस्तुत करने में भी उनकी सहायता करते हैं। उन्होंने बताया है कि परा-विधिक स्वयंसेवक बनने के लिए शैक्षिक योग्यता हाईस्कूल है। नियुक्ति उपरांत परा-विधिक स्वयंसेवक के द्वारा संतोषजनक कार्य संपादित करने पर परा-विधिक स्वयंसेवक को मानदेय दिया जाएगा। इच्छुक आवेदक अपना आवेदन पत्र शैक्षिक योग्यता एवं अन्य प्रमाण पत्रों के साथ जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सिविल कोर्ट शाहजहाँपुर के कार्यालय में दिनांक 20 अप्रैल तक प्रेषित कर सकते हैं। अर्हता पूर्ण करने वाले आवेदकों को नियत तिथि पर साक्षात्कार हेतु सूचित किया जाएगा।

हाईटेंशन लाइन का तार टूटने से गेंहू के खेत में लगी आग

संवाददाता, ऊँचाहार, रायबरेली। क्षेत्र के नाथीपुर गांव में हाईटेंशन लाइन का तार टूटकर गेंहू के खेत के पास पड़े खरपतवार में गिर गया जिसके कारण आग लग गई, ग्रामीणों ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया लेकिन तब तक एक किसान के कुछ हिस्से की गेंहू की फसल जलकर खाक हो गई, ग्रामीणों द्वारा सूचना फायर ब्रिगेड को दी गई थी लेकिन एक घण्टे बाद भी वो नहीं पहुंच सकी। बुधवार की दोपहर बाद उस वक्त अफरा तफरी का माहौल हो गया, जब गांव निवासी रज्जन मिश्रा के गेंहू के खेत के पास पड़े खरपतवार में ऊपर से गुजरी हाईटेंशन लाइन का तार टूटकर गिर गया, उस दौरान विधुत आपूर्ति होने की वजह से आग लग गई, जिसके बाद वहां मौजूद ग्रामीणों ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया लेकिन तब तक किसान रज्जन के दस बिस्वा खेत में खड़ी गेंहू की फसल जलकर खाक हो गई, ग्रामीणों का कहना है कि फायर ब्रिगेड को सूचना दी गई थी लेकिन वो घण्टे बाद भी नहीं पहुंच सकी,वहीं ग्रामीणों द्वारा तार टूटने की सूचना विधुत विभाग को दी गई है।

नियम कानून को ठेंगा दिखा कर रोड पर ओवर लोड दौड़ रहे डग्गामार वाहन

संवाददाता, महराजगंज। रायबरेली। स्थानीय प्रशासन व परिवहन विभाग की मिली भगत के चलते ये डग्गामार वाहन आम जनता को मौत के मुंह में डाल रहे हैं। पिछले कुछ दिनों पहले हुए रोड हादसा को नजरअंदाज करते हुए प्रशासन डग्गामार वाहन व बैटरी चालित रिक्शा चालको को खुली छूट दिए हुए है। तभी ये सब नियम कानून को ठेंगा दिखा कर रोड पर ओवर लोड दौड़ रहे है इन्हे न तो पुलिस का भय है और न ही आर टी ओ का। आश्चर्य तो तब होता है जब बैटरी चालित रिक्सा जिसमे चार सवारी का परमिट होता है बीस बीस सवारी भर कर रोड पर दौड़ रहे है किंतु इन पर कोई अंकुश लगाने वाला नही है। आखिर क्यों ? अभी कुछ दिन पहले एक बिक्रम की दुर्घना हुई थी जिसमे सात के स्थान पर 12 सवारी चोट खाई थी इसके बाद भी पुलिस प्रशासन इस और ध्यान नही डी रहा। यही कारण है की ये निडर होकर सड़क पर परमिट से ज्यादा सवारी भरकर दौड़ रहे हैं। अब इसे प्रशासन की लापरवाही कहे या सुविधा शुल्क की मेहरबानी। महराजगंज कस्बा स्थित हैदरगढ़,व इन्हौना, मार्ग पर चलने वाले डग्गामार वाहन व ई रिक्शा पर परमिट से अधिक सवारी तो बैठते ही है ये इतने निडर है की छत के ऊपर भी सवारी बैठा लेते है। आज ई रिक्शा की फोटो कैमरे में कैद हुई है। जोकि स्थानीय प्रशासन व परिवहन विभाग के लिए एक जीता जागता सबूत भी है ।

प्रधानमंत्री आवास योजना-नगरीय के आवेदनों का सत्यापन जल्द पूरा किया जाएरू-डीएम

संवाददाता, हरदोई कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में पीएमएवाई-नगरीय एवं नगरीय निकाय से संबंधित बिंदुओं की समीक्षा बैठक हुई। जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि प्रधानमंत्री आवास योजना-नगरीय के आवेदनों का सत्यापन कार्य जल्द पूरा किया जाए। पीएम स्वनिधि योजना के अंतर्गत अधिक से अधिक पात्रों को लाभान्वित किया जाए। लम्बित आवेदनों के निस्तारण में तेजी लायी जाए। पीएम स्वनिधि योजना की नियमित समीक्षा की जाए। नगरीय निकायों में निर्माणाधीन कान्हा गोशालाओं का कार्य जल्द पूर्ण कर लिया जाए। गोशालाओं में बकाया भुगतान शीघ्र किया जाए। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी प्रियंका सिंह व अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

कस्बे में आयोजित हुई ब्लाक स्तरीय रैली

संवाददाता, सुमेरपुर, हमीरपुररू बुधवार को कस्बे में ब्लाक स्तरीय स्कूल चलो अभियान की रैली निकालकर लोगों को जागरूक किया गया। रैली का शुभारंभ ब्लाक प्रमुख जयनारायण सिंह यादव, बेसिक शिक्षा अधिकारी कल्पना जायसवाल ने संयुक्त रूप से झंडी दिखाकर किया रैली के समापन के बाद पूर्व माध्यमिक विद्यालय में बीएसए ने स्मार्ट क्लासेज का उद्घाटन करते नए सत्र की पाठ्य पुस्तकों का वितरण किया। ब्लाक स्तरीय स्कूल चलो रैली का आयोजन कस्बे के पूर्व माध्यमिक विद्यालय में किया गया। रैली को ब्लाक प्रमुख एवं बीएसए ने संयुक्त रूप से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली कस्बे के प्रमुख मार्गों से गुजरकर पूर्व माध्यमिक विद्यालय में संपन्न हुई। रैली के समापन के बाद बीएसए ने पूर्व माध्यमिक विद्यालय में स्मार्ट क्लासेज का शुभारंभ किया। इसके बाद छात्र छात्राओं को पाठ्य पुस्तकें वितरित की गई। इस मौके पर खंड शिक्षा अधिकारी समर सिंह, एडीओ पंचायत रामबरन सिंह, प्रभारी चिकित्सा अधिकारी डा परवेज कादरी, सीडीपीओ किरन पाल, व्यायाम शिक्षक रावेंद्र सिंह गौर, एआरपी बृजमोहन यादव,जाकिया बानो,विक्रम सिंह, धर्मेंद्र यादव,हृदेश द्विवेदी, वंदना त्रिपाठी, गजेंद्र सिंह, देवेश द्विवेदी, रविपाल सिंह,आभा गुप्ता, कृष्णा यादव, विनीत द्विवेदी आदि शिक्षक मौजूद रहे।

पिता के साथ खेत गया मासूम घर लौटते हुआ गायब, स्वजनों में मचा कोहराम

संवाददाता, मौदहा, हमीरपुरै। क्षेत्र में अपने पिता के संग खेत पर गया बालक के शाम को घर वापस लौटते समय अचानक गायब होने से उसके परिजनों में हड़कंप मच गया। गायब बच्चे के पिता ने उसे चारों तरफ तलाश थक हार कर कोतवाली मौदहा में अपने बालक की गुमशुदगी दर्ज कराई है। कोतवाली पुलिस घटना की जांच पड़ताल में जुट गई है। कोतवाली क्षेत्र मौदहा के ग्राम छिमोली निवासी रामकरण निषाद ने बताया कि मंगलवार को वह अपने कछार हार पर गेहूं की कटाई करने गया था वह अपने साथ अपने 5 वर्षीय पुत्र विजय को भी साथ ले गया था। शाम 5रू00 बजे विजय अपने पिता से घर जाने की बात कह कर खेत से चला आया, जब देर शाम तक विजय अपने घर नहीं पहुंचा तो उसके पिता रामकरण व परिजनों ने उसे गांव में तलाशने के अलावा गाँव के बगल में बह रही चंद्रावल नदी में भी विजय की तलाश की लेकिन विजय के बारे में कोई सुराग नहीं लग सका। थक हार कर रामकरण ने कोतवाली मौदहा में अपने पुत्र की गुमशुदगी का मामला दर्ज कराया है जिस पर पुलिस क्षेत्राधिकारी विवेक यादव व कोतवाली प्रभारी हेमंत मिश्रा ने गांव में पहुंच मामले की जांच पड़ताल शुरू कर दी है। वही अचानक विजय के गायब हो जाने से ग्रामीणों में हड़कंप मचा हुआ है।

13 मई को होगा राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन

संवाददाता, हमीरपुर। अपर जिला जजध्जिला विधिक सेवा प्राधिकरण हमीरपुर की सचिव गीतांजलि गर्ग द्वारा बताया कि दिनांक 13 मई 23 को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, हमीरपुर के तत्वाधान में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जायेगा। साथ ही सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, हमीरपुर द्वारा लोगों से अपील की वह राष्ट्रीय लोक अदालत में शमनीय आपराधिक वाद, पुलिस चालानी वाद, लघु आपराधिक वाद, अन्तिम रिपोर्ट, 138 एन0आई0एक्ट, मोटर दुर्घटना प्रतिकर वाद, वैवाहिक वाद, भरण-पोषण वाद, श्रम वाद, विक्रय कर एवं आयकर सम्बन्धी वाद, सिविल वाद किरायेदारी से सम्बन्धित वाद, बैंक वसूली सम्बन्धी वाद, उत्तराधिकारी वाद, विद्युत अधिनियम वाद, आर0टी0ओ0 चालानी वाद, नगर पालिका से सम्बन्धित वाद, बांटमाप संबंधी वाद, रेलवे से सम्बन्धी वाद, वन विभाग से सम्बन्धित वाद, नहर विभाग से संबधित वाद, सेवा एवं पेंशन सम्बन्धी मामले, प्राकृतिक आपदा एवं क्षतिपूर्ति संबंधी मामले, मनोरंजन विभाग संबंधी मामले अगामी लोक अदालत में निस्तारित कराये जा सकतें है। वादकारियों का आह्वान किया कि वह लोक अदालत में बढ़ चढ़ कर भाग ले व इस अवसर का लाभ उठाते हुये लोक अदालत को सफल बनायें ।

CMYK

बांस मंडी अग्निकाण्ड मे प्रभावित व्यापारियों की सरकार को अवश्य मदद करनी चाहिए : दीपांशु पाण्डेय

संवाददाता

कानपुर। कानपुर के बाँस मंडी के होजारी मार्केट मे लगी भीषण आग जो लगभग 4 दिनों बाद बुझाई जा सकी है जिसमे करोड़ो का नुकसान और लगभग 800 – 900 दुकाने जल कर पूरी तरह से जल कर खाक हो गई जिसके कारण 1000 से 1500 परिवार पर आर्थिक संकट खड़ा हो गया है, कानपुर के जाने माने समाजसेवी दीपांशु पाण्डेय ने अपने विचार

रखते हुए बोला की कानपुर ही नहीं पूरे प्रदेश मे ना जाने ऐसी कितनी मार्केट होंगी जिनपर ऐसी मुसीबत कभी भी आ सकती है उसकी वजह है अग्नि सुरक्षा इंतजाम की कमी , प्रशिक्षण, उपकारणों की कमी जिसके जिम्मेदार कही न कही कानपुर के आला अधिकारी है। अक्सर देखा गया है की जहाँ आग लगती है उसके बाद सरकार और अधिकारी उस विभाग मे अग्नि सुरक्षा नियमों के पालन करने मे लग जाते है जैसे कही भी किसी हॉस्पिटल मे आग लगती है तो पूरा सरकारी महकमा अस्पतालो तो अग्नि सुरक्षा नियमों की जांच मे लग जाते है जो एक दम सही है परन्तु कोई हादसा होने के बाद ही क्यूँ, जबकी होजारी मार्केट जैसी अनेको मार्केट है कानपुर मे ही जैसे गोविंद नगर विद्यार्थी मार्केट, सीसामऊ मार्केट , चालीस दुकान किदवई नगर और भी अनेको मार्केट है जिसकी हर 3 से 4 महीनों मे अग्नि सुरक्षा इंतजाम की जांच होनी चाहिए, हर 6 महीनों मे एक मौकड्रील होनी चाहिए, और सख्त नियम बने की ऐसी सभी मार्केट मे सभी दुकानदारों के पास पुख्ता इंजेजाम् होने चाहिए, तो शादय भविष्य मे इतनी बड़ी घटना नहीं होगी। और साथ ही दीपांशु पाण्डेय ने अपनी सवेंदनाये व्यक्त करते हुए कहा की वे ईश्वर से प्रार्थना करते है जिन भी भाइयो को नुकसान हुआ है उनको इस मुसीबत से लड़ने की हिम्मत दे। और प्रदेश सरकार से अपील करते है की सभी व्यापारी भाइयो की हर संभव मदद की जाये।

टाटा एआईजी इंश्योरेंस कंपनी कर रही बहुत बड़ा धांधला

संवाददाता

हापुड़। जनपद हापुड़ के गांव सिमरौली निवासी योगेश शर्मा ने बढ़नपुर निवासी टाटा एआईजी इंश्योरेंस कंपनी का एजेंट पर आरोप लगाते हुए बताया कि कंपनी कस्टमर को 0 डेप इंश्योरेंस के नाम पर टाटा, एआईजी ,इंश्योरेंस कंपनी लेती है बहुत बड़ी कीमत और गाड़ी एक्सीडेंट होने पर कस्टमर को 10: भी क्लेम नही देती कस्टमर को 20 दिन गाड़ी खड़ी एजेंसी पर टाटा एआईजी कंपनी कोई भी सर्वे क्लियर नही करती है और कस्टमर को चक्कर कटाकर 20 दिन बाद जवाब मिलता है की इसका अप्रूवल नही मिलेगा एक गाड़ी सिमरोली से एक्सीडेंट होकर क्लेम के लिए गई जिसका दव न्च 37म्7452 है गाड़ी का फ्रंट ग्लास, सोकर, टायर स्टेपनी,हेड लाइट, क्षति ग्रस्त एक्सीडेंट में हुई जिसका आज 20 दिन बाद कंपनी ने सिर्फ एक सोकर और सिर्फ एक चिमटे का अप्रुबल प्रोवाइड किया बाकी सबको कस्टमर को मना कर दिया जिसके कारण कस्टमर परेशान होकर अपनी गाड़ी में टाटा एआईजी, इंसोरेंस कंपनी के ऑफिस के सामने लेजाकर आग लगाने को बोल रहा है जिस नुकसान को लेकर टाटा एआईजी इंश्योरेंस कंपनी क्लेम देने को मना कर रही है कस्टमर दर-दर की ठोकरें खा रहा है जिस कारण एआईजी टाटा इंश्योरेंस कंपनी लोगों के साथ फर्जीवाड़ा कर रही है इंश्योरेंस के पूरे पैसे लेती है लेकिन जब गाड़ी में कोई नुकसान हो जाता है तो उसका क्लेम नहीं देती। कस्टमर का कहना है कि मैं अपनी गाड़ी को टाटा एआईजी इंश्योरेंस ऑफिस मेरठ ले जाकर उसके सामने गाड़ी में आग लगा देता हूं इन सब का जिम्मेदार टाटा एआईजी इंश्योरेंस कंपनी होगी।

प्लॉट पर कब्जा करने वाले तीन अभियुक्त पुलिस ने दबोचे

संवाददाता

कानपुर। कानपुर हथियारों के दम पर प्लॉट पर कब्जा करने वाले तीन अभियुक्तों को थाना नौबस्ता पुलिस ने गिरफ्तार किया है। अभियुक्तों के पास से तमंचा और कारतूस बरामद हुए हैं। पकड़े गए अभियुक्तों के खिलाफ पुलिस विधिक कार्रवाई कर रही है घटनाक्रम के मुताबिक अभियुक्तगण दादी मुकदमा मो0 रईस के प्लाट पर चमन नगर राजीव बिहार में नाजायज शस्त्र के बल पर कब्जा कर रहे हैं इस सूचना पर उ0नि0 मय हमराही फोर्स के वाँछित अभियुक्तगण 1. अभिषेक शुक्ला पुत्र अरविन्द शुक्ला नि0 बी 1665 आवास विकास हंसपुरम थाना नौबस्ता कानपुर नगर उम्र 29 वर्ष 2. अभिषेक पाण्डेय पुत्र श्रवण कुमार पाण्डेय नि0 3/669 आवास विकास हंसपुरम थाना नौबस्ता कानपुर नगर उम्र करीब 22 वर्ष 3. राहुल श्रीवास्तव पुत्र राकेश श्रीवास्तव नि0 प्लाट नं0 15 रमन विहार थाना नौबस्ता कानपुर नगर उम्र 28 वर्ष को समय करीब 20.10 बजे चमन नगर राजीव विहार थाना क्षेत्र नौबस्ता से हिरासत पुलिस में लिया गया। जिसके सम्बन्ध में थाना स्थानीय पर मु0अ0स0 156/2023 धारा 380/427/454/506 भादवि0 व 3/25 आर्म्स एक्ट पंजीकृत है। अभियुक्तगणों को गिरफ्तार कर अग्रेतर विधिक कार्यवाही अमल में लायी जा रही है।

1. अभिषेक शुक्ला पुत्र अरविन्द शुक्ला नि0 बी 1665 आवास विकास हंसपुरम थाना नौबस्ता कानपुर नगर उम्र 29 वर्ष (एक अदद तमन्चा 315 बोर मय 03 अदद कारतूस 315 बोर) 2. अभिषेक पाण्डेय पुत्र श्रवण कुमार पाण्डेय नि0 31669 आवास विकास हंसपुरम थाना नौबस्ता कानपुर नगर उम्र करीब 22 वर्ष (एक अदद तमन्चा 315 बोर मय 03 अदद कारतूस 315 बोर)

3. राहुल श्रीवास्तव पुत्र राकेश श्रीवास्तव नि0 प्लाट नं0 15 रमन विहार थाना नौबस्ता कानपुर नगर उम्र 28 वर्ष बरामदगी – दो तमन्चा 315 बोर, छः जिन्दा कारतूस 315 बोर बरामद किया गया है सभी को न्यायालय में पेश कर जेल भेजा जा रहा है।

सरकारी स्कूल माध्यमिक विद्यालय के निर्माण कार्य में धड़ल्ले से हो रहा घटिया सामग्री का प्रयोग

संवाददाता, हापुड़। जनपद हापुड़ में माध्यमिक विद्यालय का भवन बनाने के नाम पर सरिए के बीम की जगह पर मात्र एक सरिए का पीस लगाकर किया जा रहा है विद्यालय के भवन का निर्माण केवल सरकारी कागजों में ठीक प्रकार से चल रहा है निर्माण कार्य। जिसमें उच्च जांचकर्ता अधिकारियों की मिलीभगत देखने को मिल रही है आपको बता दें कि दिल्ली रोड स्थित ग्राम चमरी में सोसायटी के पास बेसिक शिक्षा अधिकारी हापुड़ द्वारा माध्यमिक विद्यालय के भवन को जर्जर होने की अवस्था में गिराकर उस स्थान पर दोबारा से नए विद्यालय के भवन निर्माण का कार्य कराया जा रहा है जिसमें की एक बड़ी लापरवाही देखने को मिली है निर्माण कार्य में पिलर बनाने के नाम पर मात्र एक लोहे का सरिया लगाकर माध्यमिक विद्यालय के भवन का निर्माण कार्य कराया जा रहा है जो कि भविष्य में किसी भी प्राकृतिक आपदा भूकंप आदि के आने पर कभी भी धराशाई हो सकता है जिससे भविष्य में विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों को जान माल का खतरा हमेशा बना रहेगा उक्त देखरेख करने वाले अधिकारियों की मिलीभगत से कराया जा रहा है भवन का निर्माण हो रहा है।

निकाय तथा लोकसभा चुनाव की तैयारी के चलते आजाद समाज पार्टी की बैठक आयोजित

संवाददाता, हापुड़। जनपद हापुड़ में आजाद समाज पार्टी काशीराम के जिला प्रभारी नरेन्द्र द्राविड़ आदवंशी तथा जिला सचिव सोनवीर के नेतृत्व में निकाय तथा लोकसभा चुनाव की तैयारी के चलते संगठन विस्तार हेतु एक सभा का आयोजन ग्राम खड़खड़ी मैं किया गया सभा की अध्यक्षता ग्राम निवासी बुद्ध प्रकाश समाजसेवी बतौर मुख्य अतिथि के रूप में पार्टी के जिला अध्यक्ष एड सुशील आजाद के साथ जिला प्रभारी माननीय नरेंद्र द्राविड़ आदवंशी , जिला महासचिव मनोज कर्दम , जिला उपाध्यक्ष माननीय सतीश चन्द , जिला उपाध्यक्ष माननीय नसीम खान , जिला सचिव माननीय सोनवीर , जिला कार्यकारणी सदस्य जयभगवान, विधान सभा अध्यक्ष माननीय डॉक्टर योगेन्द्र गौतम हापुड़ उपस्थित रहे जिसमें जिला अध्यक्ष के द्वारा मौजूदा ग्राम प्रधान खडखड़ी रोहित प्रधान के साथ सैकड़ों ग्राम निवासियों को पार्टी की सदस्यता दिलाई।

कार्यकारिणी का गठन, मिली जिम्मेदारी

संवाददाता, प्रयागराज। भारतीय इतिहास संकलन समिति काशी प्रांत महानगर की बैठक डा.आनंद शंकर सिंह प्रांतीय अध्यक्ष भारतीय इतिहास संकलन समिति काशी प्रांत की अध्यक्षता में संपन्न हुई। अध्यक्षता करते हुए डा.आनंद शंकर सिंह ने भारतीय इतिहास संकलन समिति के उद्देश्य कार्यों और इतिहास लेखन की नवीन प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला। बैठक में प्रयागराज महाजनपद के विभिन्न महाविद्यालयों, विश्वविद्यालय के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। बैठक में कार्यकारिणी का गठन करते हुए भारतीय इतिहास संकलन समिति, प्रयागराज जनपद कार्यकारिणी के सदस्यों को उनके दायित्वों से परिचित कराया गया। जिसमें अध्यक्ष डा.रितु जायसवाल, उपाध्यक्ष डा.प्रदीप केसरवानी, महासचिव प्रो.संतोषा कुमार, सचिव डॉ.नरेंद्र सिंह सह सचिव डॉ.ज्योति रानी जायसवाल एवं डॉ.एकात्म देव, कोषाध्यक्ष डॉ.अखिलेश कुमार के साथ ही अध्यक्ष, वरिष्ठ इतिहासकार परिषद डॉ. अर्चना सिंह,अध्यक्ष महिला इतिहासकार परिषद डॉ. अर्चना श्रीवास्तव, महासचिव महिला इतिहासकार परिषद डॉ.अर्चना सिंह, अध्यक्ष युवा इतिहासकार परिषद डॉ. मनोज दुबे, महासचिव युवा इतिहासकार परिषद, डॉ. रजनीकांत, लेखक परिषद डॉ. नीरज कुमार सिंह एवं प्रचार प्रमुख डॉ.प्रेम प्रकाश सिंह का मनोनयन किया गया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ.प्रशांत प्रांतीय सचिव भारतीय इतिहास संकलन समिति काशी प्रांत ने किया, बैठक का संचालन डॉ. दीपशिखा पांडे, सह सचिव भारतीय इतिहास संकलन समिति काशी प्रांत द्वारा किया गया।

इंटर हाउस क्रिकेट प्रतियोगिता में ब्लू हाउस बना चैंपियन

पंख ही काफी नहीं आसमानों के लिए, हौसला भी चाहिए उड़ानों के लिए

संवाददाता

प्रयागराज। शुआट्स इंटर हाउस क्रिकेट प्रतियोगिता में ब्लू हाउस चैंपियन बना। इन्टर हाउस क्रिकेट प्रतियोगिता के फाइनल मुकाबले में ब्लू हाउस की टीम ने शानदार प्रदर्शन करते खेल को आकर्षण का केंद्र बना दिया। ब्लू हाउस की टीम ने अपने बेहतरीन प्रदर्शन के बदौलत चौंपियन बनी। खिलाडियो ने बल्लेबाजी और गेंदबाजी के दम पर विशाल स्कोर 15 ओवर के मैच में 143 रन 4 विकेट खोकर हासिल कर लिया। जबकि विपक्षी टीम रेड हाउस को 110 रन पर ढेर कर दिया। दूसरी तरफ येलो हाउस को प्रतियोगिता में अंक के आधार पर तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।वहीं पिक हाउस को चतुर्थ स्थान पर संतोष करना पड़ा।

रेड हाउस और ब्लू हाउस के बीच रोमांचक मैच........

फाइनल मैच रेड हाउस और ब्लू हाउस के बीच संपन्न हुआ। ब्लू हाउस हाउस ने यह मैच 33 रनों से जीत कर ट्रॉफी अपने नाम किया। ब्लू हाउस ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 4 विकेट पर 143 रन बनाए जबकि, रेड हाउस की टीम निर्धारित ओवरों में सभी विकेट खोकर 110 रन पर ही सिमट गई। ब्लू हाउस की तरफसे बिपिन कुमार सिंह की बिस्फोटक बल्लेबाजी ने रेड हाउस के गेंदबाजों के परखच्चे उड़ा दिया । उनके बल्ले से रनों की बौछार होती रही। उन्होंने 6 छक्के और 6 चौके की मदद से 38 गेंदों में 65 रन अपनी टीम के खाते में डाले। वहीं ब्लू हाउस के बल्लेबाज नंदन ने भी शानदार 60 रनों का योगदान दिया।ब्लू हाउस के गेंदबाज अंकित द्विवेदी की घातक गेंदबाजी ने 19 रन देकर 6 विकेट अपनी झोली में डाले ।रेड हाउस की शुरुआत अच्छी नहीं हुई, उनके स्टार बल्लेबाज कप्तान शिवम यादव मात्र 4 रन बनाकर पवेलियन वापस हो गये।रेड हाउस के दीपांकर राही ने 29 रन, प्रवीण राय ने 19 रन एवं रेड्डी ने भी 19 रनों का योगदान किया। रेड हाउस की तरफसे उनके गेंदबाज मिलिंद ने 31रन देकर ने 2 और शिवम यादव ने 23 रन देकर 1 विकेट चटकाएं। समापन समारोह के मुख्य अतिथि ऐथलेटिक्स कमेटी की कोर कमेटी के सदस्य एवं इलाहाबाद स्कूल ऑफ एजुकेशन की हेड डाक्टर शामला एस. मसीह थी। उनका स्वागत अजय कुमार ने गमले का पौधा देकर किया। उन्होंने अपने उद्बोधन में सभी हाउस के खिलाड़ियों को उनके प्रदर्शन पर बंधाई दी और खिलाड़ियों को फ्टिनेस पर टिप्स भी दिया। उन्होंने शारीरिक फ्टिनेस पर जोर देकर कहा कि इससे खेल में सकारात्मक परिणाम मिलता है। उन्होंविजेता और उपविजेता टीम को शील्ड प्रदान किया।

फाइनल मैच का परिणाम ....

ब्लू हाउस (विजेता टीम), रेड हाउस (उपविजेता टीम), येलो हाउस (तीसरा स्थान), पिंक हाउस (चतुर्थ स्थान)।

बेस्ट प्लेयर ऑफद टूर्नामेंट– शिवम कुमार यादव

उदीयमान खिलाडी का पुरूस्कार– अंकित द्विवेदी

विशेष पुरूस्कार – पूरे टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन के लिए बिपिन कुमार सिंह को सम्मानित किया गया।फाइनल मैच के आकर्षण उनके अंपायर थे। जिन्होंने पूरे टूर्नामेंट में सभी मैचों का शानदार संचालन किया।मैच के अंपायर राकेश साहू और डॉक्टर अचिंत टेरेंस थे। मैच के दौरान अजय कुमार, आशीष मैसी, अशोक सिंह, डाक्टर दीप्ती जोशी, डाक्टर गौरव यादव, तनवीर अहमद और सारे छात्र छात्राएं उपस्थित थे।

सूची व विज्ञापन को लेकर आयोग पर डटे प्रतियोगी

संवाददाता, प्रयागराज। प्रतियोगी छात्र मोर्चा के बैनर तले विक्की खान के नेतृत्व में सैकड़ों प्रतियोगी छात्रों छात्रों ने एलटी जीआईसी की द्वितीय सूची जारी करने तथा नया विज्ञापन जारी करने को लेकर लोक सेवा आयोग पर क्रमिक अनशन जारी रखा। सोमवार को भी पुलिस बल मौजूद मौजूद रहा। इस कारण लोक सेवा आयोग के अधिकारियों द्वारा पहले से ही मुख्य गेट बंद करवा दिया गया था। प्रतियोगी छात्र मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष विक्की खान के द्वारा उक्त दोनों मांगों पर पुनः ज्ञापन दिया गया। मोर्चा अध्यक्ष विक्की खान ने कहा कि अब यह क्रमिक अनशन तब तक जारी रहेगा जब तक एलटी जीआईसी की द्वितीय सूची जारी नहीं कर दी जाए तथा नया विज्ञापन जारी नहीं कर दिया जाता। अनशन करने वालों में कृपाशंकर निरंकारी, अंजनी पांडे,आलोक सिंह, प्रवेश श्रीवास्तव,उषा देवी, ईशा कुमारी, समारू प्रजापति, जय सिंह यादव,उमेश यादव,सत्येंद्र यादव आदि मौजूद थे।

शासन की नीतियों तथा विकास कार्यक्रमों को अधिकारी जन-जन तक पहुँचाना सुनिश्चित करें : उप मुख्यमंत्री

- ❑ उप मुख्यमंत्री ने विकास कार्यो, जनकल्याणकारी योजनाओं को लेकर अधिकारियों के साथ की समीक्षा
- ❑ शहरी क्षेत्र में सफाई व्यवस्था हेतु अभियान चलाया जाये : केशव प्रसाद मोर्य'

संवाददाता

हापुड़। जनपद हापुड़ कलैक्ट्रेट सभागार में प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मोर्य ग्राम्य विकास एवं समग्र ग्राम्य विकास ग्रामीण अभियन्त्रण, खाद्य प्रसंस्करण, मनोरंजन कर एवं सार्वजनिक उद्यम तथा राष्ट्रीय एकीकरण के द्वारा प्रभारी मंत्री हापुड़ कपिल देव अग्रवाल एवं जनपदीय अधिकारियों के साथ विकास कार्यो, जनकल्याणकारी योजनाओं को लेकर समीक्षा कर रहे थें। उन्होंने कहा कि सरकार समाज के अन्तिम व्यक्ति को विकास की मुख्य धारा से जोड़ने के लिये प्रयत्नशील है। सभी अधिकारी अपने विभागीय योजनाओं को जन-जन तक पहुँचाने हेतु व्यापक भ्रमण कर लाभार्थियों को सभी आवश्यक सुविधायें शासन की नीतियों के अनुसार पहुँचाना सुनिश्चित करें। उप मुख्यमंत्री ने विकास से सम्बन्धित सभी अधिकारियों को निर्देशित करते हुये कहा कि शासन की नीतियों के अनुसार विकास परक योजनाओं को पूरी निष्ठा व ईमानदारी के साथ पात्र व्यक्तियों को लाभ दिलाना सुनिश्चित करें। उन्होने कहा कि पूरी सावधानी बरती जाये कि कोई भी पात्र व्यक्ति लाभ से वंचित न रहे। उन्होने कहा कि जन शिकायतों को प्राथमिकता पर सुना जाये तथा समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित की जाये। यदि कोई जरूरतमंद अपनी शिकायत लेकर आता है अथवा किसी जनप्रतिनिधि के माध्यम से कोई जन शिकायत प्राप्त होती है तो अधिकारी पूरी गम्भीरता से लेते हुये पूरे सम्मान के साथ निस्तारण सुनिश्चित करें। पेंशन योजना की समीक्षा के दौरान मा0 उप मुख्यमंत्री जिला समाज कल्याण अधिकारी को निर्देशित किया कि जनपद के समस्त ग्रामोंध्वार्डो में कैम्प लगाकर छुटे हुये पात्र लाभार्थियों को लाभान्वित किया जाये। निराश्रित गोवंशो को गौशालाओं में आश्रय देने हेतु मुख्य पशु चिकित्साधिकारी को निर्देशित किया। उन्होंने जनपद में चारागाह की जो भी भूमि कब्जा की गयी है जिलाधिकारी राजस्व की टीम द्वारा भूमि को कब्जा मुक्त करायें। जिससे भूमि पर चारा आदि की व्यवस्था सुनिश्चित कर सके। छुट्टा जानवरों को गौ आश्रय स्थलों में संरक्षित किया जाये। स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा के दौरान उन्होने मुख्य चिकित्साधिकारी से जनपद में संचालित सीएचसी, पीएचसी एवं हेल्थ एण्ड वेलनेस सेन्टर के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की। उप मुख्यमंत्री ने सीएमओ को निर्देशित किया कि हेल्थ एवं वेलनेस सेन्टर की समय-समय पर मानीटरिंग करते रहे और मरीजों को समय-समय पर दवायें मिल रही है या नही की जानकारी लेते रहे, हेल्थ एवं वेलनेस सेन्टर का ज्यादा से ज्यादा प्रचार प्रसार करने को कहा। विद्युत विभाग की समीक्षा के दौरान पाया गया कि उपभोक्ताओं द्वारा ज्यादा विद्युत बिल आने की शिकायतें की जाती है जिस पर उप मुख्यमंत्री ने अधीक्षण अभियन्ता विद्युत को निर्देशित किया कि शिकायतों पर अंकुश लगाया जाये एवं खर्च के सापेक्ष विद्युत बिल की वसूली की जाये। उन्होंने शासन की मंशानुसार जनपद में खराब ट्रान्सफार्मर को 24 घण्टें में दुरूस्त कराया जायें।

भदोही की टीम बनी विजेता

खेल में मैत्री संबंध होना जरूरी : बृजेश

संवाददाता, प्रयागराज। खेलो को हमेशा खेल भावना से खेलना चाहिए जिसमे स्पर्धा के साथ आपसी मैत्री संबंध भी होना चाहिए उक्त बातें सोमवार को प्रतापपुर में रात्रि क्रिकेट मैच के बाद लोगो को पुरस्कार वितरण समारोह के मुख्य अतिथि अपना दल एस के प्रदेश महासचिव बृजेश कुमार पांडेय ने कही उन्होंने कहा की खेल से जहां शरीर स्वास्थ्य रहता है वही मन भी प्रफुल्लित रहता है। उक्त मैच प्रतापपुर के खेल मैदान में प्रतापपुर क्रिकेट क्लब के तत्वावधान मे आयोजीत किया गया जिसमें विभिन्न जिले की टीमों ने प्रतिभाग किया। मैच कई दिन तक चला,सेमीफाइनल मैच भदोही तथा यशराज क्लब की टीम के बीच हुआ जिसमें भदोही की टीम ने यशराज क्रिकेट क्लब को 23 रनों से शिकस्त दी वहीं दूसरा सेमीफाइनल कटेहरी और अतरसुइया की टीम के बीच हुआ जिसमें कड़ी प्रतिस्पर्धा में कटेहरी की टीम 3 गेद शेष रहते ही लक्ष्य को प्राप्त कर लिया।फाइनल का मुकाबला भदोही तथा कटेहरी की टीम के बीच दिलचस्प रहा जिसमें एक गेंद शेष रहते भदोही की टीम लक्ष्य को प्राप्त करके विजई रही । अध्यक्षता करते हुए ब्लाक प्रमुख शैलेश यादव ने खिलाड़ियों को पुरस्कृत किये। यशराज हॉस्पिटल की तरफसे विजेता टीम को कप एवं रूद्र डायग्नोस्टिक की तरफ से उप विजेता टीम को कप दिया गया मैन आफ द मैच विक्की भदोही एवं मैन ऑफ द सीरीज अंकुर सिंह बेला रहे जिन्हें मोहम्मद असलम द्वारा कप दिया गया स उक्त अवसर पर भाजपा मंडल प्रभारी मनोज सिंह आचार्य, प्रवेश सिंह, डा.विनय कुमार उपाध्याय,राजा बाबू केसरवानी, गुड्डू यादव, जमुना सिंह सहित बड़ी संख्या कार्यकर्ता व दर्शक उपस्थित रहे।

कृषि गतिविधियों में तेजी से मार्च में पेट्रोल, डीजल की बिक्री में उछाल

एजेंसी, नयी दिल्ली। देश में मार्च में ईंधन की मांग बढ़ी है। रविवार को जारी उद्योग के शुरुआती आंकड़ों से यह जानकारी मिली है। आंकड़ों के अनुसार, कृषि गतिविधियों में तेजी से मार्च के पहले पखवाड़े में ईंधन की मांग में आई सुस्ती दूर हो गई। कृषि क्षेत्र की मजबूत मांग के साथ-साथ ठंड के मौसम की सुस्ती के बाद परिवहन में तेजी से फरवरी में ईंधन की बिक्री उच्चतम स्तर पर पहुंच गई थी लेकिन मार्च के पहले पखवाड़े (15 मार्च तक) में इसमें सुस्ती देखी गई। हालांकि, महीने के दूसरे पखवाड़े में ईंधन की मांग में तेजी आई और फरवरी के उच्च आधार के बावजूद मासिक आधार पर बिक्री में बढ़ोतरी दर्ज की गई। आंकड़ों के अनुसार, पेट्रोल की बिक्री पिछले महीने 5.1 प्रतिशत बढ़कर 26.5 लाख टन हो गई। मासिक आधार पर बिक्री 3.4 प्रतिशत बढ़ी है। देश में सबसे अधिक खपत वाले ईंधन डीजल की मांग मार्च के दौरान 2.1 प्रतिशत बढ़कर 68.1 लाख टन हो गई। एक साल पहले की समान अवधि में 66.7 लाख टन डीजल की बिक्री हुई थी। मासिक आधार पर मांग में 4.5 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। पहले पखवाड़े में सालाना आधार पर पेट्रोल की बिक्री में 1.4 प्रतिशत और डीजल की बिक्री में 10.2 प्रतिशत की गिरावट आई थी ।मार्च में पेट्रोल की खपत मार्च, 2021 की तुलना में 16.2 प्रतिशत और मार्च, 2020 से लगभग 43 प्रतिशत अधिक रही। इस दौरान डीजल की खपत मार्च, 2021 से 13.5 प्रतिशत और मार्च, 2020 से 41.8 प्रतिशत अधिक थी। विमानन क्षेत्र के लगातार खुलने के साथ हवाई यात्रियों की संख्या कोविड-पूर्व के स्तर के पास पहुंच गई है। इसके चलते विमान ईंधन (एटीएफ) की मांग मार्च के दौरान 25.7 प्रतिशत बढ़कर 6,14,000 टन हो गई। यह मार्च, 2021 की तुलना में 41.9 प्रतिशत और मार्च, 2020 से 34.8 प्रतिशत अधिक रही। मासिक आधार पर बिक्री 4.54 प्रतिशत ज्यादा रही। वहीं कोविड महामारी संबंधित प्रतिबंधों में ढील के बाद से देश की तेल मांग में लगातार वृद्धि हो रही थी। आंकड़ों के अनुसार, रसोई गैस एलपीजी की बिक्री मार्च में सालाना आधार पर तीन प्रतिशत गिरकर 23.7 लाख टन रही। मार्च, 2021 की तुलना में एलपीजी की खपत नौ प्रतिशत अधिक और मार्च, 2020 की तुलना में 5.8 प्रतिशत अधिक थी। माह-दर-माह आधार पर मांग में 6.54 प्रतिशत की गिरावट आई। फरवरी के दौरान एलपीजी खपत मासिक आधार पर 25.4 लाख टन थी।

मारुति सुजुकी, हुंदै, टाटा मोटर्स की थोक बिक्री बीते वित्त वर्ष में रिकॉर्ड स्तर पर पहुंची

एजेंसी, नयी दिल्ली। प्रमुख वाहन विनिर्माता कंपनियों- मारुति सुजुकी, हुंदै और टाटा मोटर्स ने वित्त वर्ष 2022-23 में अपनी सर्वश्रेष्ठ घरेलू थोक बिक्री दर्ज की जिसके दम पर घरेलू यात्री वाहन उद्योग ने अब तक का अपना सबसे अच्छा प्रदर्शन किया। देश की सबसे बड़ी कार विनिर्माता कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया ने 2022-23 में 19 प्रतिशत वृद्धि के साथ अभी तक की सर्वाधिक 19,66,164 इकाई की बिक्री दर्ज की, जबकि वित्त वर्ष 2021-22 में यह आंकड़ा 16,52,653 इकाई था। मारुति ने समाप्त वित्त वर्ष में घरेलू बाजार में 17,06,831 इकाइयों की थोक आपूर्ति की जो 2021-22 में 14,14,277 इकाई के आंकड़े से 21 प्रतिशत अधिक है। हुंदै मोटर इंडिया ने कहा कि वित्त वर्ष 2022-23 में उसकी कुल बिक्री 7,20,565 इकाई रही, जो 2021-22 के 6,10,760 इकाई से 18 प्रतिशत ज्यादा है। कंपनी के मुताबिक, भारत में परिचालन शुरू करने के बाद उसका एक वित्त वर्ष में यह सर्वाधिक बिक्री आंकड़ा है। कंपनी ने 2022-23 में घरेलू स्तर पर विक्रेताओं को 5,67,546 इकाइयां भेजीं, जो 2021-22 में भेजी गईं 4,81,500 इकाइयों से 18 प्रतिशत ज्यादा हैं। टाटा मोटर्स की वित्त वर्ष 2022-23 के दौरान कुल घरेलू बिक्री 9,31,957 इकाई रही जो वित्त वर्ष 2021-22 के 6,92,554 इकाई की तुलना में 35 प्रतिशत अधिक है। इस वित्त वर्ष में टाटा मोटर्स के यात्री वाहनों की बिक्री 3,70,372 इकाई से 45 प्रतिशत बढ़कर अभी तक सर्वाधिक 5,38,640 इकाई हो गई। किआ इंडिया ने वित्त वर्ष 2022-23 में 44 प्रतिशत वृद्धि के साथ 2,69,229 इकाइयां बेचीं, जबकि 2021-22 में कंपनी ने 1,86,787 इकाइयां बेची थीं। जनवरी-मार्च, 2023 तिमाही में कंपनी की वाहन उद्योग क्षेत्र में अभी तक की सर्वाधिक 7.4 प्रतिशत हिस्सेदारी रही। टोयोटा किर्लोस्कर मोटर की वित्त वर्ष 2022-23 में थोक बिक्री 41 प्रतिशत वृद्धि के साथ 1,74,015 इकाई रही जबकि वित्त वर्ष 2021-22 में उसने 1,23,770 इकाइयों की बिक्री की थी। होंडा कार्स इंडिया की 2022-23 में घरेलू बाजार में थोक बिक्री सात प्रतिशत वृद्धि के साथ 91,418 इकाई रही, जबकि 2021-22 में यह 85,609 रही थी। कंपनी ने 2022-23 में 17 प्रतिशत वृद्धि के साथ 22,722 इकाइयां निर्यात कीं, जबकि 2021-22 में यह आंकड़ा 19,401 था। देश के अग्रणी दोपहिया विनिर्माता हीरो मोटोकॉर्प ने घरेलू बाजार में वित्त वर्ष 2022-23 के दौरान 51.55 लाख से अधिक इकाइयों की बिक्री की जो एक साल पहले के 46.43 लाख वाहनों की तुलना में 11 प्रतिशत अधिक है। हालांकि इस दौरान उसका निर्यात 3.0 लाख वाहन से घटकर 1.72 लाख इकाई ही रहा। टीवीएस मोटर कंपनी ने मार्च में पांच प्रतिशत वृद्धि के साथ 3,07,559 दोपहिया वाहन बेचे, जबकि मार्च, 2022 में 2,92,918 दोपहिया वाहन बेचे थे। इस दौरान उसकी घरेलू बिक्री 22 प्रतिशत वृद्धि के साथ 2,40,780 इकाई रही। मोटरसाइकिल विनिर्माता रॉयल एन्फील्ड ने मार्च में सात प्रतिशत वृद्धि के साथ 72,235 इकाइयों की बिक्री की, जबकि पिछले साल मार्च में यह आंकड़ा 67,677 इकाई था। समीक्षाधीन माह में उसकी घरेलू बिक्री दो प्रतिशत वृद्धि के साथ 59,884 इकाई रही।

सऊदी-भारत की खुफिया एजेंसियों के बीच हुआ ऐतिहासिक समझौता, खौफ में पाकिस्तान

एजेंसी, दुबई। सऊदी अरब हमेशा मुश्किल में फंसे पाकिस्तान की मदद करता आया है। लेकिन सऊदी और भारत के बीच हुई एक डील ने पाकिस्तान को खौफमें डाल दिया है। यह डील पाक के लिए मुसीबत बन सकती है। भारत की इंटेलीजेंस एजेंसी रिसर्च एंड एनालिसिस विंग (रॉ) और सऊदी के बीच एक एतिहासिक समझौता हुआ है। इस समझौते के बाद रॉ को आतंकवाद पर नकेल कसने में बड़ी मदद मिलेगी। इसे एक महत्वूपर्ण घटनाक्रम करार दिया जा रहा है। कुछ ही दिनों पहले इस समझौते को सऊदी कैबिनेट की मंजूरी मिली है। इस समझौते के बाद सऊदी अरब आतंकवाद की लड़ाई में खाड़ी देशों में भारत का सबसे बड़ा साथी बन जाएगा। सऊदी अरब की कैबिनेट की तरफसे जो मंजूरी दी गई है, उससे जुड़ा एक आधिकारिक बयान भी जारी हुआ है। इस बयान के मुताबिक सऊदी सुरक्षा एजेंसी, रॉ के साथ मिलकर आतंकवादी घटनाओं और आतंकवाद को मिलने वाली आर्थिक दम पर लगाम कसने की दिशा में काम करेगी। सऊदी गजट की तरफ से इस पूरे समझौते के बारे में आधिकारिक तौर पर जानकारी दी गई है। इस गजट के मुताबिक देश की कैबिनेट जिसकी अध्यक्षता किंग सलमान ने की थी, उसमें ही इस समझौते को मंजूरी मिली है। यह मीटिंग अल सलाम पैलेस में पिछले दिनों हुई थी। गजट की रिपोर्ट के मुताबिक, अल-सलाम पैलेस में किंग सलमान की अध्यक्षता में सऊदी कैबिनेट ने आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए देश की मुख्य्य सुरक्षा एजेंसी और भारत की रिसर्च एंड एनालिसिस विंग (रॉ) के बीचअपराध और इसका वित्तपोषण रोकने से जुड़े सहयोग समझौते को मंजूरी दी ।पिछले ही दिनों भारत के नए राजदूत सुहेल एजाज खान ने सऊदी अरब के गृह मंत्री प्रिंस अब्दुलअजीज बिन सऊद बिन नायेफ बिन अब्दुल अजीज से मुलाकात की थी। इस मीटिंग के बाद ही सऊदी अरब का यह बड़ा फैसला आया है। सऊदी प्रेस एजेंसी ने कहा कि स्वागत समारोह के दौरान आम हित के कई मुद्दों पर चर्चा की गई। इसी मुलाकात के बाद सऊदी अरब ने शंघाई को-ऑपरेशन ऑर्गनाइजेशन की तरफपहला कदम बढ़ाया है। फ्लिहाल इस समझौते को लेकर पाकिस्तान ने चुप्पी साधी हुई है जबकि विशेषज्ञ सऊदी और भारत के बीच इस समझौते को एतिहासिक करार दे रहे हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि भारत और पाकिस्तान के बीच कई मसले हैं। मगर इनसे अलग भारत हमेशा कश्मीर में आतंकवाद के लिए पाकिस्तान को दोषी करार देता है। देश में मौजूद आतंकी संगठनों पर हमेशा भारत का सख्त रुख रहता है। पाकिस्तान के रक्षा विशेषज्ञ मान रहे हैं कि ऐसे में भारत और सऊदी अरब के बीच हुई यह डील काफी महत्त्वपूर्ण है। भारत हमेशा कहता आया है सऊदी अरब में पाकिस्तान के कई आतंकी मौजूद हैं। ऐसे में यह डील वाकई पाकिस्तान के लिए बड़ा झटका है। वो यह भी मानते हैं। इसका मतलब यही हुआ के भारत और सऊदी अरब अब आतंकवाद के मामले में एक्क ही दिशा में सोच रहे हैं।

रेपो दर में 0.25 प्रतिशत की और वृद्धि कर सकता है रिजर्व बैंक

एजेंसी, मुंबई ।खुदरा मुद्रास्फीति के छह प्रतिशत के संतोषजनक स्तर से ऊपर बने रहने और अमेरिकी फेडरल रिजर्व समेत कई केंद्रीय बैंकों के आक्रामक रुख के बीच भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) भी अगले सप्ताह पेश होने वाली मौद्रिक समीक्षा में रेपो दर में 0.25 प्रतिशत की एक और वृद्धि का फैसला कर सकता है। यह मई, 2022 से शुरू हुए ब्याज दरों में बढ़ोतरी के चक्र में संभवतरू आखिरी वृद्धि होगी। रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की द्विमासिक समीक्षा बैठक तीन अप्रैल से शुरू होने वाली है। तीन दिन तक चलने वाली यह बैठक छह अप्रैल को नीतिगत दर संबंधी फैसले के साथ खत्म होगी। मुद्रास्फीति पर काबू पाने के लिए आरबीआई ने मई, 2022 से लगातार नीतिगत ब्याज दर में बढ़ोतरी का रुख अपनाया हुआ है। इस दौरान रेपो दर चार प्रतिशत से बढ़कर 6.50 प्रतिशत पर पहुंच चुकी है। गत फरवरी में संपन्न पिछली एमपीसी बैठक में भी रेपो दर में 0.25 प्रतिशत की वृद्धि की गई थी। एमपीसी की बैठक में मौद्रिक नीति से जुड़े तमाम घरेलू एवं अंतरराष्ट्रीय पहलुओं की व्यापक समीक्षा के बाद कोई फैसला लिया जाएगा। इस दौरान उच्च खुदरा मुद्रास्फीति की स्थिति और विकसित देशों के केंद्रीय बैंकों- अमेरिकी फेडरल रिजर्व, यूरोपीय केंद्रीय बैंक एवं बैंक ऑफ इंग्लैंड के हालिया कदमों का भी गहन विश्लेषण किया जाएगा। उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) आधारित मुद्रास्फीति जनवरी में 6.52 प्रतिशत और फरवरी में 6.44 प्रतिशत पर रही है। खुदरा मुद्रास्फीति का यह स्तर आरबीआई के छह प्रतिशत के संतोषजनक स्तर से अधिक है। एक्सिस बैंक के मुख्य अर्थशास्त्री सौगत भट्टाचार्य ने हाल ही में कहा, ''मैं दरों में एक और अंतिम 0.25 प्रतिशत की वृद्धि की उम्मीद करता हूं ।श् बैंक ऑफ बड़ौदा के मुख्य अर्थशास्त्री मदन सबनवीस ने कहा, ''पिछले दो माह से मुद्रास्फीति के छह प्रतिशत से ऊपर बने रहने और तरलता के भी अब लगभग तटस्थ हो जाने के बाद ऐसी उम्मीद है कि आरबीआई एक बार फिर रेपो दर में 0.25 प्रतिशत की बढ़ोतरी कर सकता है। इसके साथ ही आरबीआई अपने रुख को तटस्थ घोषित कर यह संकेत भी दे सकता है कि दरों में वृद्धि का दौर खत्म हो चुका है। कुल मिलाकर समूचे वित्त वर्ष 2023-24 में आरबीआई कुल छह एमपीसी बैठकों का आयोजन करेगा। केंद्र सरकार ने आरबीआई को यह सुनिश्चित करने का काम सौंपा है कि खुदरा मुद्रास्फीति चार प्रतिशत (दो प्रतिशत ऊपर या नीचे) के दायरे में रहे।

पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों को बनाया जा रहा निशाना, अब ईसाई की गोली मारकर हत्या

एजेंसी, पेशावर। पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों की सुरक्षाा का खतरा लगातार बढ़ता जा रहा है। पेशावर में पिछले 24 घंटों में अल्पसंख्यक सदस्यों को निशाना बनाकर हत्या करने की यह तीसरी घटना सामने आई है। हिंदू डाक्टर व सिख कारोबारी के बाद पश्चिमोत्तर क्षेत्र में कुछ अज्ञात लोगों ने शनिवार को एक ईसाई व्यक्ति की गोली मारकर हत्या कर दी। पुलिस ने बताया कि घटना मृतक के घर पर हुई थी। मृतक की पहचान काशिफमसीह के तौर पर की गई है। पुलिस ने कहा, काशिफ मसीह को कुछ अज्ञात लोगों ने गोली मार दी। जिस दौरान उनके ऊपर हमला हुआ वे अरपने घर में ही मौजूद थे। गोली लगने के कारण काशिफ मसीह की मौके पर ही मौत हो गई। हालांकि, पुलिस मामले की जांच कर रही है कि यह आपसी दुश्मनी के कारण हुआ है या इसके पीछे की वजह कुछ और है। पुलिस आरोपी की पहचान कर उसकी तलाश में जुटी है। इससे पहले बीते शुक्रवार को सिख व्यापारी दियाल सिंह की भी हत्या कर दी गई थी। पुलिस ने बताया कि यह घटना दोपहर तीन बजे अपनी मोटरसाइकिल से कही जा रहे थे, जिस दौरान गोली मारकर उनकी हत्या कर दी गई। इसके साथ ही पुलिस ने कहा कि हमलावर वारदात को अंजाम देने के तुरंत बाद मौके से फरार हो गए। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, पिछले हफ्ते सिंध प्रांत में अल्पसंख्यक हिंदू समुदाय के दुकानदारों पर ष्कथित रूप से रमजान अध्यादेश का उल्लंघन करनेष् के लिए हमला किया गया था। लगभग 15,000 सिख पेशावर में रहते हैं, ज्यादातर प्रांतीय राजधानी पेशावर के जोगन शाह पड़ोस में रहते हैं। पेशावर में सिख समुदाय के अधिकांश सदस्य व्यवसाय में शामिल हैं, जबकि कुछ के पास दवा की दुकान भी हैं।

एफपीआई ने मार्च में भारतीय शेयर बाजार में डाले 7,936 करोड़ रुपए

एजेंसी, नयी दिल्ली । लगातार दो माह तक निकासी के बाद विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने मार्च में भारतीय शेयर बाजार में 7,936 करोड़ रुपए का निवेश किया है। अमेरिका की जीक्यूजी पार्टनर्स द्वारा अडानी समूह की कंपनियों में पैसा लगाने से एफ्पीआई का निवेश मार्च में सकारात्मक रहा है। जीएलसी वेल्थ एडवाइजर एलएलपी के सह-संस्थापक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) संचित गर्ग ने कहा कि यदि अडानी समूह की कंपनियों में आए निवेश को निकाल दिया जाए, तो मार्च में एफ्पीआई का शुद्ध निवेश नकारात्मक हो जाएगा। इसका आशय है कि मार्च में भी एफपीआई बिकवाल ही रहे हैं। जियोजीत फाइनेंशियल सर्विसेज के मुख्य निवेश रणनीतिकार वी के विजयकुमार ने कहा, ''विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों का सतत बिकवाली का सिलसिला समाप्त होता दिख रहा है। पिछले कुछ सत्रों से वे लिवाल बन गए हैं। विजयकुमार ने कहा, ''एफ्पीआई के लिए निकट भविष्य का दृष्टिकोण अब और अधिक सकारात्मक दिखता है। भले ही भारतीय मूल्यांकन अपेक्षाकृत अधिक बना हुआ है लेकिन हाल के समय में बाजार में जो 'करेक्शन हुआ है उससे अब मूल्यांकन कुछ ठीक हो गया है। उन्होंने कहा कि निर्यात में बढ़ोतरी की वजह से चालू खाते के घाटे (कैड) की स्थिति सुधरी है। ऐसे में एफ्पीआई आगे संभवतरू आक्रामक तरीके से बिकवाली नहीं करेंगे। उन्होंने कहा कि बीते वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में चालू खाते का घाटा 4.4 प्रतिशत था। तीसरी तिमाही में चालू खाते का अधिशेष रहा है। इसलिए आगे चलकर भारतीय रुपए के स्थिर रहने की संभावना है। डिपॉजिटरी के आंकड़ों के मुताबिक, एफ्पीआई ने मार्च में भारतीय शेयरों में शुद्ध रूप से 7,396 करोड़ रुपए का निवेश किया है। इससे पहले फरवरी में उन्होंने 5,294 करोड़ रुपए और जनवरी में 28,852 करोड़ रुपए की निकासी की थी। दिसंबर, 2022 में भी एफपीआई ने शुद्ध रूप से 11,119 करोड़ रुपए का निवेश किया था। समीक्षाधीन अवधि में एफपीआई ने ऋण या बॉन्ड बाजार से भी 2,505 करोड़ रुपए निकाले हैं। जनवरी में उन्होंने बॉन्ड बाजार में 3,531 करोड़ रुपए और फरवरी में 2,436 करोड़ रुपए डाले थे।

अभियोग की मंजूरी के बाद ट्रंप ने 24 घंटे में 40 लाख डॉलर एकत्र किए

एजेंसी, वाशिंगटन । अमेरिका में राष्ट्रपति पद के चुनाव प्रचार अभियान के दौरान 2016 में एक पोर्न स्टार को चुप रहने के लिए धन देने के मामले में डोनाल्ड ट्रंप के खिलाफ अभियोग चलाने की मंजूरी दिए जाने के बाद पूर्व राष्ट्रपति ने 24 घंटे में 40 लाख डॉलर से अधिक की राशि जुटाई। मीडिया में जारी एक विज्ञप्ति में शुक्रवार को बताया गया कि ट्रंप की चुनाव प्रचार मुहिम के लिए इसमें से 25 प्रतिशत से अधिक राशि उन लोगों ने उपलब्ध कराई है, जिन्होंने पहली बार उन्हें चंदा दिया है ।विज्ञप्ति में कहा गया कि जमीनी स्तर पर चंदे में यह अभूतपूर्व वृद्धि इस बात की पुष्टि करती है कि अमेरिकी लोग पूर्व राष्ट्रपति ट्रम्प के खिलाफ अभियोग को 'अभियोजक द्वारा हमारी न्याय प्रणाली के अपमानजनक रूप से हथियार की तरह इस्तेमाल किए जाने के रूप में देखते हैं। व्हाइट हाउस ने ट्रंप के खिलाफअभियोग को मंजूरी मिलने पर टिप्पणी करने के इनकार कर दिया है। अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने शुक्रवार को कहा, 'मुझे इस पर कोई टिप्पणी नहीं करनी। उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने जाम्बिया में संवाददाताओं से कहा, 'मैं जारी आपराधिक मामले में कोई टिप्पणी नहीं करूंगी, क्योंकि यह पूर्व राष्ट्रपति से जुड़ा है। उल्लेखनीय है कि अमेरिका में राष्ट्रपति पद के चुनाव प्रचार अभियान के दौरान 2016 में एक पोर्न स्टार को चुप रहने के लिए धन देने के मामले में मैनहट्टन ग्रैंड जूरी ने ट्रंप के खिलाफअभियोग चलाने का फैसला किया है और वह मंगलवार को अदालत में पेश होंगे। वह देश के पहले पूर्व राष्ट्रपति हैं जो आपराधिक आरोपों का सामना कर रहे हैं। इस फैसले से 2024 में फिर से राष्ट्रपति बनने की उनकी उम्मीदों को बड़ा झटका लगा है। ग्रैंड ज्यूरी ने बृहस्पतिवार को रिपब्लिकन पार्टी के नेता ट्रंप (76) पर पोर्न स्टार स्टॉर्मी डेनियल्स को कथित संबंधों को लेकर चुप रहने के लिए पैसे देने में उनकी भूमिका को लेकर अभियोग के पक्ष में मतदान किया।

दूरसंचार ढांचे के लिए वाणिज्यिक के बजाय औद्योगिक दरों पर लिया जाए बिजली शुल्क : सीओएआई

एजेंसी, नयी दिल्ली। सेल्युलर ऑपरेटर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (सीओएआई) ने कहा है कि दूरसंचार क्षेत्र से बिजली के लिए वाणिज्यिक के बजाय औद्योगिक बिजली दरें वसूल की जानी चाहिए। दूरसंचार परिचालकों के संगठन सीओएआई ने कहा कि जल्द ही दूरसंचार बुनियादी ढांचा सुविधाओं को बिजली कनेक्शन देने के काम में तेजी लाई जानी चाहिए। सीओएआई ने कहा कि तेजी से 5जी नेटवर्क को लगाने से विभिन्न क्षेत्रों को जो लाभ मिलेगा उसे देखते हुए ऐसा करना जरूरी है। सीओएआई के महानिदेशक एस पी कोचर ने कहा, 'दूरसंचार एक बुनियादी ढांचा उद्योग है लेकिन हमसे अब भी बिजली के लिए वाणिज्यिक दरों पर शुल्क लिया जा रहा है। इसलिए हमें इसका लाभ नहीं मिलता है ।श् सीओएआई ने दूरसंचार ढांचे के लिए वाणिज्यिक के बजाय औद्योगिक दरों की वकालत की है। सीओएआई के सदस्यों में रिलायंस जियो, भारती एयरटेल और वोडाफोन आइडिया जैसी कंपनियां शामिल हैं। सीओएआई ने कहा कि सेवाओं की अनिवार्य प्रकृति तथा इसके सामाजिक-आर्थिक लाभ को देखते हुए ऐसा कदम उठाना जरूरी है। कोचर ने इस बात पर क्षोभ जताया कि भारत में एक ओर जहां दूरसंचार शुल्क दरें सबसे कम हैं वहीं उद्योग से वाणिज्यिक श्रेणी में बिजली शुल्क वसूला जाता है। सीओएआई ने कहा कि ज्यादातर राज्यों में औद्योगिक बिजली शुल्क श्रेणी और वाणिज्यिक बिजली शुल्क के बीच काफी अंतर है। इससे दूरसंचार क्षेत्र पर काफी बोझ पड़ता है। कोचर ने तर्क दिया, ''दूरसंचार सेवाओं के लिए औद्योगिक बिजली शुल्क लागू करने से कंपनियों को महत्वपूर्ण लागत लाभ मिलेगा, जिससे दूरसंचार क्षेत्र को बुनियादी ढांचा तैयार करने के लिए अधिक पूंजी उपलब्ध होगी।

CMYK

परिणीति चोपड़ा और राघव चड्ढा को हार्डी संधू ने दी बधाई, कंफर्म हुई शादी की खबर

बॉलीवुड एक्ट्रेस परिणीति चोपड़ा का नाम इन दिनों हर तरफ सुनाई और दिखाई दे रहा है। एक्ट्रेस की लव लाइफ पर पिछले कुछ वक्त से सबकी नजरें टिकी हुई हैं। वो कहा आती हैं- कहा जाती हैं और किसके साथ दिखाई देती हैं इसपर मीडिया अपनी नजरें गड़ाए बैठा है। दरअसल, बीते कुछ वक्त से एक्ट्रेस का नाम आम आदमी पार्टी के नेता राघव चड्ढा के साथ जोड़ा जा रहा है। खबरे हैं कि दोनों एक-दूसरे को डेट कर रहे हैं। इतना ही नहीं पिछले कुछ दिनों से दोनों को लगातार साथ में स्पॉट किया जा रहा है। कभी ये लंच डेट तो कभी डिनर डेट पर टाइम स्पेंड करते नजर आ रहे हैं। हाल ही में राघव चड्ढा को दिल्ली एयरपोर्ट पर भी देखा गया था जहां वो अपनी रूमर्ड लेडी लव को लेने पहुंचे थे। मगर अभी तक इस कपल ने अपने रिलेशनशिप को पब्लिकली एक्सेप्ट नहीं किया है। दोनों ने अभी अपने रिश्ते पर किसी तरह का कोई भी स्टेटमेंट नहीं दिया। हालांकि, अब इनके रोके और शादी की खबरें सामने आ रही है। मीडिया रिपोर्ट्स का दावा है कि जल्द ही ये दोनों शादी के बंधन में बंधने वाले हैं। इसी बीच अब परिणीति के को-स्टार हार्डी संधू ने एक बड़ा खुलासा कर दिया है। दरअसल, अब सिंगर ने राघव चड्ढा और परिणीति चोपड़ा के रिलेशनशिप पर मुहर लगा दी है और कहा है कि दोनों जल्द ही शादी करने वाले हैं। मीडिया को दिए एक इंटरव्यू में हार्डी ने कहा, मैं बहुत खुश हूं कि ये आखिरकार हो रहा है। मैं उन्हें शुभकामनाएं देता हूं। उन्होंने आगे कहा, जब हम कोड नेमरू तिरंगा की शूटिंग कर रहे थे, तो हम शादी के बारे में डिस्कशन करते थे और वो कहती थी कि मैं तभी शादी करूंगी जब मुझे लगेगा कि मुझे सही लड़का मिल गया है। हार्डी संधू ने ये भी कंफर्म किया कि उन्होंने परिणीति से बात की है और उन्हें फोन पर बधाई भी दी है। उन्होंने कहा, हां, मैंने उन्हें फोन किया और बधाई दी। अब सिंगर के इस बयान के बाद परिणीति चोपड़ा और राघव चड्ढा की डेटिंग की खबरें कंफर्म हो गई। ऐसे में अब इंतजार है कि ये दोनों कब शादी के बंधन में बंधते दिखाई देंगे।

››› बॉलीवुड ‹‹‹

दृश्यम एक्ट्रेस इशिता दत्ता के बेबी बंप को चूमते दिखे पति वत्सल सेठ

दृश्यम 2 फेम एक्ट्रेस इशिता दत्ता के घर जल्द ही बच्चे की किलकारियां गुजने वाली हैं। एक्टर वत्सल सेठ और इशिता जल्द ही मम्मी-पापा बनने वाले हैं। एक्ट्रेस इन दिनों अपनी लाइफ के सबसे खूबसूरत फेज से गुजर रही हैं। इसी बीच कपल की खूबसूरत फोटो इंटरनेट पर खूब देखी जा रही हैं जिसके जरिए कपल ने आखिरकार सोशल मीडिया के जरिए अपनी प्रेग्नेंसी की घोषणा की है। दरअसल, हाल ही में इशिता एयरपोर्ट पर अपना बेबी बंप फ्लॉन्ट करती नजर आई थीं, जिसके बाद हर कोई उनकी प्रेग्नेंसी से रूबरू हो गया था। ऐसे में अब कपल ने खुद सोशल मीडिया पर अपने चाहने वालों के साथ खास अंदाज में गुड न्यूज शेयर की है। कपल ने बेबी बंप फ्लॉन्ट करते हुए एक दिल छू लेने वाली फोटो शेयर की है। इशिता दत्ता और वत्सल सेठ ने इंस्टाग्राम पर अपने प्रेग्नेंसी फोटोशूट की झलक फैंस के साथ शेयर की है। फोटो में दोनों को बीच पर पोज देते हुए मैचिंग कलर का आउटफिट पहने देखा जा सकता है। बैकग्राउंड में एक सूर्यास्त के सीन के साथ उनकी तस्वीरें बहुत प्यारी लग रही हैं। फोटो में एक्टर अपनी प्रेग्नेंट वाइफ के बेबी बंप को किस करते नजर आ रहे हैं। इस पोस्ट के कैप्शन में कपल ने लिखा, ष्बेबी ऑन बोर्डष् और इसके साथ रेड हार्ट वाला इमोजी भी शेयर किया है। कपल की इस पोस्ट के सामने आते ही उनके दोस्त और फैंस के रिएक्शन आने शुरु हो गए है। हर कोई कपल को बधाई दे रहा है और फैंस इशिता और वत्सल पर जमकर अपना प्यार लुटा रहे हैं। इशिता और वत्सल दोनों अपने पहले बच्चे का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। बीतें दिनों एक इंटरव्यू में इशिता ने कहा था, हम बहुत उत्साहित और साथ ही नर्वस भी हैं, लेकिन हम इसके लिए तत्पर हैं, हर दिन एक नया दिन है। शरीर एक अलग अनुभव से गुजर रहा है। वहीं, एक्टर ने कहा, हमारी शादी को पांच साल हो गए हैं, लेकिन हमने अपने करियर में सेटल होने के बाद ही बच्चे पैदा करने का फैसला सोच-समझकर नहीं लिया था। हमारे बच्चे का स्वागत करना निश्चित रूप से हमारे जीवन में एक सुंदर नए अध्याय की शुरुआत होगी।

सिर पर दुपट्टा, चेहरे पर चमक... लाल जोड़े में दुल्हन बनीं बिग बॉस 16 की ये कंटेस्टेंट, नाम सुन हो जायेंगे शॉक्ड

छोटी सरदारनी फेम एक्ट्रेस निमृत कौर अहलूवालिया हमेशा ही अपने लुक्स के चलते काफी सुर्खियाँ बटोरती हुई नजर आती हैं। बिग बॉस 16 में उनका सफर भले ही ज्यादा लम्बा न रह सका हो लेकिन उस घर से उन्हें जो पहचान और लोगो का प्यार मिला वह वाकई उनकी कमाई हुई असली दौलत थी। हाल ही में एक्ट्रेस को कुछ लग अंदाज में देखा गया जिनकी तस्वीरें सामने आते ही उनके फैंस तो मनो हक्के-बक्के रह गए हो। निमृत इन तस्वीरो में लाल जोड़ा पहन एक दम दुल्हन बनी नजर आई जिस दौरान उनका लुक और उनके चेहरे की चमक किसी दुल्हन से कम नहीं दिखाई पड़ी। जब से निमृत की ये तस्वीरें सोशल मीडिया पर सामने आई हैं तभी से उनके फैंस लगातर एक्ट्रेस से उनकी शादी को लेकर सवाल कर रहे हैं। उनका लुक देख कर तो कोई भी यही मानेगा कि अब वाकई एक्ट्रेस दुल्हन बनने के लिए तैयार हो चुकी हैं लेकिन आखिर किसके साथ और कब और कहाँ क्या आप भी जानना चाहते हैं लेकिन आपके सभी सवालों का जवाब देते हुए आपको बता दे की एक्ट्रेस ने सिर्फ दुल्हन का जोड़ा पहना हैं वह असल में दुल्हन नहीं बनी हैं। जी हाँ.... ! एक्ट्रेस ने ये लाल जोड़ा सिर्फ अपने एक लेटेस्ट फोटोशूट के लिए पहना असल जिन्दंगी में तो अब भी वह अब भी अपने हमसफर की तलाश में ही हैं। निमृत कौर अहलूवालिया ने हाल ही में एक मैगजीन के लिए ये फोटोशूट कराया हैं, जिसकी तस्वीरें एक्ट्रेस ने खुद अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर शेयर की हैं। फोटोज में निमृत कौर को लाल रंग के जोड़े में देखा जा सकता है। जिसमे वह एक दम दुल्हन की तरह सजी हुई बहुत खूबसूरत लग रही हैं। एक्ट्रेस ने लाल रंग का पंजाबी सूट पहना है, जिस पर गोल्डन कलर की एंब्रॉयडरी से वर्क किया हुआ हैं। उन्होंने अपने लुक को बैंगल्स, नेकलेस और मांगटीका से पूरा किया है। जो उनके लुक को एक दम पंजाबी कुड़ी वाला टच देता नजर आ रहा हैं। निमृत कौर ने अपने लुक को न्यूड मेकअप से पूरा किया। साथ ही सिर पर दुपट्टा लिए और बड़े ही प्यारे अंदाज में शर्माते हुए पोज देकर एक्ट्रेस ने सभी का दिल जीत लिया। उनके फैंस तो उनकी इन अदाओ पर घायल ही हुए जा रहे हैं और बस उनकी तारीफों के पुल बांध रहे हैं। सोशल मीडिया पर निमृत कौर अहलूवालिया की ये तस्वीरें खूब वायरल हो रही हैं। फैंस लगातर उनसे उनकी शादी को लेकर अपडेट्स मांगते हुए नजर आ रहे हैं। बता दे कि आखिरी बार एक्ट्रेस को 'बिग बॉस 16' में देखा गया था। और अब वह जल्द ही एकता कपूर की फिल्म 'लव सेक्स और धोखा 2' में नजर आएंगी।

››› बॉलीवुड ‹‹‹

लॉन्च होने के कुछ घंटों के भीतर ही 'आदिपुरुष' हुआ ट्रेंड, माता सीता के मांग में सिन्दूर नहीं होने पर भड़के नेटिजन्स

हिंदी सिनेमा की सबसे महंगी फिल्म फिल्म 'आदिपुरुष' 16 जून 2023 को दुनियाभर में रिलीज होने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। बता दे की फिल्म रिलीज होने से पहले ही फिल्म का काफी क्रेज भी देखने को मिल रहा हैं। वही फिल्म को लेकर आए दिन नया विवाद भी सुनने को लगातर मिल रहे हैं। ऐसे में कल रामनवमी के मौके पर मेकर्स ने फिल्म का एक नया पोस्टर जारी किया। पोस्टर में राम के रूप में प्रभास, जानकी के रूप में कृति सेनन, लक्ष्मण के रूप में सनी सिंह और बजरंग के रूप में देवदत्त नजर आए। इस पोस्टर को देख एक बार फिर आदिपुरुष को लेकर बहस शुरू हो गई। बता दे की इसके लॉन्च के कुछ घंटों के भीतर ही प्रसंशकों ने पोस्टर पर अपना भरपूर प्यार बरसाना शुरू कर दिया। प्रभास को राघव के रूप में, कृति सैनन को जानकी के रूप में, सनी सिंह को लक्ष्मण के रूप में, और देवदत्त नागे को बजरंग के रूप में उन्हें नमन करते हुए यह पोस्टर बेहद पसंद किया जा रहा है। इतना ही नहीं, इंस्टाग्राम पर प्रभास के अकेले पोस्ट ने 1 मिलियन से ज्यादा लोगों के लाइक बटोरे हैं और इसके दिव्य लॉन्च के तुरंत बाद इसे सबसे अधिक पसंद किया जाने वाला पोस्टर भी बना दिया गया है। वही एक तरह जहां जमकर पोस्टर की जमकर प्रसंशा हो रही है तो वही दूसरी तरह फिल्म के इस पोस्टर को देखकर जमकर बवाल भी काटा जा रहा हैं। जहां कुछ यूजर इसके लिए खूब खरी-खोटी भी सुनाते दिख रहे हैं। सैफ अली खान के बाद कृति सेनन के लुक पर भी लोगों ने उंगलियां उठाईं। आरोप लगाया कि मेकर्स ने मां सीता के किरदार के साथ छेड़छाड़ की है। पोस्टर में सिंदूर नहीं लगाया गया है। यूजर ने लिखा- विश्वास ही नहीं हो रहा इस प्रोजेक्ट में मनोज मुंतशिर भी शामिल है। बताओ सिंदूर ही गायब कर दिया। बता दे की आदिपुरुष के टीजर लॉन्च के वक्त इसे लेकर खूब विवाद हुआ और कई मामले भी दर्ज हुए। लोगों ने लंकेश रावण के रूप में सैफ अली खान के लुक पर आपत्ति जताई थी। उनकी लंबी दाढ़ी की तुलना मुगलों से कर दी थी। ये विवाद इतना बढ़ गया था कि मेकर्स को इसकी रिलीज डेट टालनी पड़ी थी। इतना ही नहीं, डायरेक्टर ने इस फिल्म में कुछ बदलाव भी करने शुरू कर दिए थे जिसके बाद इसके बढ़े बजट को सुन भी लोगों के होश उड़ गए थे। ऐसे में अब पोस्टर जारी करने पर भी जमकर बवाल मचा हुआ हैं। साथ ही लगातर ट्वीटर पर 'आदिपुरुष' हैशटैग ट्रेंड हो रहा है।

स्टार एक्सप्रेस
स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक नरेन्द्र कुमार द्वारा सांई ऑफसेट प्रिन्टर्स, 40 वासुदेव भवन, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं एमजी-18, सेक्टर-सी, अलीगंज, लखनऊ (उ.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक: नरेन्द्र कुमार । (पीआरबी एक्ट के अन्तर्गत सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा) R.N.I. No.- UPHIN/2008/24076 Email Id : starexpressnews@gmail.com

CMYK